मासिक पत्रिका RAJHIN/2007/21229 वर्ष-01, अंक नं. 11

जयपुर टाइम्स

राजस्थान की रग-रग से निकली बात
जयपुर टाइम्स मैग्जीन के साथ

प्रदेश में फूल खिले गुलशन-गुलशन 04

भजनलाल के दिल्ली दौरों ने राजस्थान की काया पलटी

प्रदेश में कांग्रेस की खूबसूरती से जमीन..... 11

प्रदेश में कांग्रेस की खूबसूरती से जमीन जोत रहे गोविंद सिंह डोटासरा

जयपुर में हिंदुत्व और सनातन धर्म का..... 19

जयपुर में हिंदुत्व और सनातन धर्म का अलख जगा रहे बालमुकुंद आचार्य

मुख्यमंत्री भजनलाल ने जयपुर के लोगों को.... 26

मुख्यमंत्री भजनलाल ने जयपुर के लोगों को दिया बेहतरीन शुभ "संदेश"

साइबर क्राइम के नेटवर्क की कमर..... 33

साइबर क्राइम के नेटवर्क की कमर तोड़ने वाले ठंडे दिमाग और विलक्षण प्रतिभा के धनी आईपीएस "संजीव नैन"

अपने सालों के जमीनी अनुभव से DIPR..... 39

अपने सालों के जमीनी अनुभव से डीआईपीआर का शानदार और उत्कृष्ट प्रबंध कर रहे "राकेश शर्मा"

सीमित संसाधनों से विकास के नए..... 45

सीमित संसाधनों से विकास के नए आयाम हासिल करने में माहिर हैं डॉ. अर्तिका शुक्ला

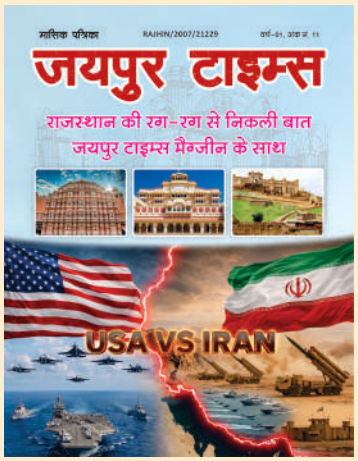

प्रकाशक, मुद्रक
रामेश्वर लाल जाट

संपादक
नीतू चौधरी

उप संपादक
कुमकुम रंगा, रूपचंद गुर्जर, रोहित शर्मा

ग्राफिक डिजाईनर
रजत जाखड़

स्वत्वाधिकारी

केम्ब्रिज मल्टी मीडिया के लिए प्रकाशक, मुद्रक रामेश्वरलाल जाट द्वारा केम्ब्रिज मल्टी मीडिया प्रा.लि. सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़, जयपुर से मुद्रित एवं सी-565, सी-4सी स्कीम, न्यू लोहा मण्डी रोड़, सीकर रोड़ जयपुर से प्रकाशित

संपर्क
संपादक
जयपुर टाइम्स (मासिक)
सी-588, सी-4सी स्कीम,
न्यू लोहा मण्डी रोड़
जयपुर-302013

E-mail
jaipurtimes2007@gmail.com

website
www.jaipurtimes.org

मो. 7014217770

मूल्य:- 100/- प्रति अंक
वार्षिक सदस्यता- 1251 (पोस्टल चार्ज सहित)

सुधी पाठकों के लिए जयपुर टाइम्स का विशेष संदेश

सौर ऊर्जा बनाम पर्यावरण

खेजड़ी के पेड़ों की कटाई और जन आंदोलन

राजस्थान स्थापना दिवस केवल एक तिथि नहीं, बल्कि उस ऐतिहासिक प्रक्रिया का प्रतीक है जिसने विविध रियासतों को एक सूत्र में पिरोकर एक सशक्त राज्य का निर्माण किया। हर वर्ष 30 मार्च को मनाया जाने वाला यह दिवस हमें 1949 की उस ऐतिहासिक घड़ी की याद दिलाता है, जब अनेक राजपूताना रियासतों के एकीकरण के साथ आधुनिक राजस्थान का स्वरूप सामने आया। यह दिन न केवल अतीत की गौरवगाथा को स्मरण करने का अवसर है, बल्कि वर्तमान उपलब्धियों और भविष्य की संभावनाओं पर भी चिंतन करने का समय है।

राजस्थान का गठन आसान नहीं था। स्वतंत्रता के बाद भारत के सामने सबसे बड़ी चुनौतियों में से एक थी विभिन्न रियासतों का एकीकरण। उस समय राजपूताना क्षेत्र में कई छोटी-बड़ी रियासतें थीं, जिनकी अपनी अलग प्रशासनिक व्यवस्था, परंपराएँ और राजनीतिक हित थे। इन सभी को एकजुट कर एक राज्य के रूप में संगठित करना एक जटिल और दूरदर्शी प्रक्रिया थी। इस ऐतिहासिक कार्य में सरदार वल्लभभाई पटेल और वी.पी. मेनन की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण रही, जिनके नेतृत्व और कूटनीति ने इस एकीकरण को संभव बनाया।

राजस्थान की पहचान उसकी समृद्ध सांस्कृतिक विरासत में निहित है। यहां के किले, महल, हवेलियाँ और लोक परंपराएँ राज्य की विशिष्टता को दर्शाती हैं। आमेर किला, मेहरानगढ़ किला और सिटी पैलेस जैसे ऐतिहासिक स्थल न केवल स्थापत्य कला के उत्कृष्ट उदाहरण हैं, बल्कि राज्य के गौरवशाली अतीत के जीवंत साक्षी भी हैं। इसके साथ ही, घूमर और कालबेलिया जैसे लोकनृत्य, मांड और पधारो म्हारे देश जैसे गीत, और रंग-बिरंगे त्यौहार राजस्थान की जीवंत संस्कृति को वैश्विक पहचान दिलाते हैं।

हालांकि, केवल सांस्कृतिक विरासत ही राजस्थान की पहचान नहीं है। पिछले कुछ दशकों में राज्य ने विकास के कई क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रगति की है। शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन और बुनियादी ढांचे के क्षेत्र में सुधार ने राजस्थान को एक उभरते हुए राज्य के रूप में स्थापित किया है। जयपुर, उदयपुर और जोधपुर जैसे शहर आज न केवल पर्यटन केंद्र हैं, बल्कि व्यापार और निवेश के महत्वपूर्ण हब भी बनते जा रहे हैं। सौर ऊर्जा के क्षेत्र में राजस्थान की उपलब्धियाँ विशेष रूप से उल्लेखनीय हैं, जहां राज्य देश के अग्रणी उत्पादकों में शामिल हो चुका है।

फिर भी, विकास की इस यात्रा में कई चुनौतियाँ भी सामने हैं। जल संकट राजस्थान की सबसे बड़ी समस्याओं में से एक है, जो राज्य के कई हिस्सों में जीवन और कृषि दोनों को प्रभावित करता है। इसके अलावा, ग्रामीण क्षेत्रों में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की उपलब्धता, बेरोजगारी, और शहरीकरण के साथ बढ़ती असमानताएँ भी चिंता का विषय हैं। इन चुनौतियों का समाधान केवल सरकारी प्रयासों से नहीं, बल्कि समाज के सभी वर्गों की सहभागिता से ही संभव है।

राजस्थान स्थापना दिवस हमें यह भी सिखाता है कि विविधता में एकता की भावना ही किसी समाज को मजबूत बनाती है। विभिन्न जातियों, धर्मों और संस्कृतियों के लोग मिलकर जिस तरह इस राज्य को आगे बढ़ा रहे हैं, वह पूरे देश के लिए एक प्रेरणा है। आज जब वैश्वीकरण और आधुनिकता के प्रभाव से पारंपरिक मूल्यों पर खतरा मंडरा रहा है, तब अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़े रहना और उन्हें संजोकर रखना अत्यंत आवश्यक हो जाता है।

अंतत:, राजस्थान स्थापना दिवस केवल अतीत की स्मृतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह भविष्य की दिशा तय करने का भी अवसर है। यह दिन हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि हम अपने राज्य को और अधिक समृद्ध, समावेशी और सशक्त कैसे बना सकते हैं। यदि हम अपने इतिहास से सीख लेकर वर्तमान में सही निर्णय लें और भविष्य के लिए स्पष्ट दृष्टि रखें, तो निश्चित रूप से राजस्थान आने वाले समय में विकास और समृद्धि के नए आयाम स्थापित करेगा।

इस गौरवशाली दिवस पर प्रत्येक नागरिक का यह दायित्व है कि वह अपने राज्य के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझे और उसके विकास में सक्रिय भूमिका निभाए। तभी राजस्थान की यह गौरवगाथा निरंतर आगे बढ़ती रहेगी और आने वाली पीढ़ियाँ भी इस विरासत पर गर्व कर सकेंगी।

-प्रधान संपादक
रामेश्वरलाल जाट

प्रदेश में फूल खिले गुलशन-गुलशन

भजनलाल के दिल्ली दौरों ने राजस्थान की काया पलटी

जब-जब दिल्ली गए, तब-तब प्रदेश के लिए विकास के लिए सौगात लेकर आए, प्रदेश में कई महत्वपूर्ण प्रोजेक्ट को धरातल पर लाने के लिए पीएम मोदी और केंद्र सरकार के मंत्रियों से कर रहे निरंतर संवाद, मिल रहे सकारात्मक संकेत

जयपुर। भले ही विपक्ष के नेता मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के धड़ाधड़ हो रहे दिल्ली के दौरों पर कई तरह के सवाल खड़े कर रहे हो, लेकिन इस बात को कांग्रेस पार्टी के नेता खुद अंदर ही अंदर यह महसूस करते हैं कि भजनलाल शर्मा जब-जब दिल्ली गए, तब-तब प्रदेश के विकास के लिए कई तरह की सौगातें लेकर ही लौटे हैं। यह देखने में भी आया है कि पिछले करीब सवा दो साल में केंद्र की मोदी सरकार ने जितना राजस्थान के विकास के बारे में सोच और जितना राजस्थान को सहयोग किया, उतना देश में किसी अन्य राज्य का सहयोग नहीं किया। यह भी साफ दिखता है कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने प्रदेश में भाजपा की सरकार का गठन होने के बाद जितने दौरे किए, उतने दौरे देश के किसी अन्य स्टेट में नहीं किया, जो यह साफ दिखाता है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपने इन दिल्ली दौरो के माध्यम से केंद्र सरकार से मजबूत गठजोड़ और अच्छा तालमेल बनाया हुआ है, जिसका सीधा फायदा प्रदेश की जनता को भी मिल रहा है और प्रदेश के विकास को नई दिशा और रफ्तार मिल रही है। राजनीतिक विश्लेषक भी मुख्यमंत्री शर्मा के इन दिल्ली दौरो को प्रदेश के विकास के लिहाज से काफी सकारात्मक मान रहे हैं, बड़े-बड़े राजनीतिक विश्लेषक भी यह कह रहे हैं कि 'बिना बोले तो मां भी अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती।' इस पंक्ति के भावार्थ को भजनलाल अच्छी तरह से समझते हैं, यही वजह है कि वे बार-बार अपनी ही पार्टी की सरकार से सहयोग लेने के लिए दिल्ली चले जाते हैं और वहां से हर बार कुछ ना कुछ अच्छी खबर और अच्छी सौगात लेकर जयपुर लौटते हैं।

पिछली सरकार से मिला था खाली खजाना

केंद्र सरकार से अच्छे तालमेल और समन्वय के बिना प्रदेश का विकास संभव नहीं। राजनीतिक विश्लेशको का कहना है कि पिछली कांग्रेस पार्टी की सरकार से प्रदेश की भजनलाल सरकार को खाली खजाना मिला था। पिछली सरकार के अंतिम कार्यकाल में प्रदेश की जनता का भरोसा और विश्वास हासिल करने के लिए कई तरह की बड़ी-बड़ी जनकल्याणकारी योजनाएं और घोषणाएं तो कर दी गई, एक साथ कई नए जिलों की घोषणा की गई, लेकिन पैसों के अभाव में यह तमाम योजनाएं और घोषणाएं ठीक तरह से क्रियान्वित नहीं हो सकी। इसकी वजह से एक तरफ पहले से ही घाटे में चल रही सरकार के खजाने पर गहरी चोट पहुंची, जो दूसरी तरफ इन योजनाओं और घोषणाओं में अधिकांश कागजों में ही अटकी रही, धरातल पर नजर नहीं आई। तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और तत्कालीन मोदी सरकार के बीच भी आपस के संबंध पूरे 5 साल तक मजबूत नहीं हो पाए। गहलोत ने तत्कालीन प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार के तत्कालीन मंत्रियों के साथ भी कभी भी मेलमिलाप और मुलाकात करने पर ध्यान नहीं दिया, जिसकी वजह से केंद्र सरकार और पिछली कांग्रेस पार्टी की सरकार के बीच आपस में अच्छा समन्वय और तालमेल नहीं बन पाया, जिसका विपरीत असर प्रदेश के विकास पर भी पड़ा। क्योंकि धन के अभाव में राजस्थान जैसा विषम परिस्थितियों वाला प्रदेश अकेले अपने दम पर बिना केंद्र के सहयोग से किसी भी हालत में समुचित विकास नहीं कर सकता, इसीलिए प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के साथ ही भजनलाल शर्मा ने जैसे ही शासन की बागडोर अपने हाथ में ली, वैसे ही उन्होंने सबसे पहले केंद्र सरकार के साथ मजबूत संबंध और अच्छा तालमेल बनाने के विषय पर गंभीरता से काम करना शुरू किया। हालांकि मुख्यमंत्री शर्मा प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह की पसंद के पहले से ही थे ही, इसलिए अपने संबंधों को और मजबूत और मधुर बनाने के लिए उन्होंने लगातार केंद्र सरकार से संपर्क और तालमेल बनाए रखा। मुख्यमंत्री शर्मा जब भी दिल्ली जाते हैं, वे सिर्फ प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से ही नहीं मिलते, बल्कि उन तमाम केंद्रीय मंत्रियों से मुलाकात करते हैं जिनकी अनुशंसा और आर्थिक सहयोग से प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों में अधूरे पड़े विकास कार्य और नए विकास कार्य संपादित हो सकते हैं।

अपनी साफ सुथरी छवि और ईमानदारी का प्रदेश के विकास के लिए भरपूर फायदा उठा रहे भजनलाल शर्मा

ईमानदार और साफ सुथरे राजनेता के रूप में भजन लाल शर्मा राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में माने जाते हैं। राजस्थान भाजपा में करीब 20 साल तक लगातार प्रदेश महामंत्री के रूप में पोस्टेड रहे, उसमें भी बड़ी बात यह रही कि इन 20 साल में करीब आधा दर्जन अलग-अलग नेताओं के हाथ में प्रदेश भाजपा की कमान रही, लेकिन पार्टी के हर अध्यक्ष ने भजनलाल शर्मा को उनकी मेहनत, ईमानदारी और समर्पित भाव से काम करते देखकर अपनी टीम में महत्वपूर्ण स्थान दिया। भजनलाल शर्मा प्रदेश भाजपा के संगठन में चुपचाप कड़ी मेहनत और ईमानदारी से काम करते रहे, जिस पर केंद्र में बैठे भाजपा के संगठन से जुड़े नेताओं की भी निरंतर नज़रें टिकी रही, और उनकी साफ सुथरी छवि और ईमानदारी से प्रभावित होकर ही दिल्ली में बैठे भाजपा के बड़े नेताओं ने उन्हें मुख्यमंत्री के पद के काबिल समझा। इसमें कोई संदेह नहीं, जिस भरोसे और उम्मीद के साथ दिल्ली हाई कमान ने उन्हें मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बिठाया था, उस उम्मीद और भरोसे पर मुख्यमंत्री शर्मा अब तक खरे उतरे हैं। करीब सवा दो साल के कार्यकाल में भजनलाल सरकार के किसी भी मंत्री पर किसी भी तरह का गलत आरोप नहीं लगा है, और ना ही भ्रष्टाचार जैसी कोई शिकायत सुनने को मिली। इसका बड़ा कारण यही है कि मुख्यमंत्री शर्मा ने अपने मंत्रिमंडल के सदस्यों, पार्टी के विधायकों और प्रशासनिक अधिकारियों से साफ कहा है कि सुशासन में सबको सामूहिक योगदान देना होगा, और लापरवाही, गड़बड़ी और भ्रष्टाचार किसी भी सूरत में सरकार बर्दाश्त नहीं करेगी। इतना ही नहीं, मुख्यमंत्री शर्मा खुद लगातार हर सरकारी विभाग की बैठक लेते रहते हैं, विभाग के कार्यों की समीक्षा करते रहते हैं, और विभिन्न प्रोजेक्ट और योजनाओं का मौके पर जाकर निरीक्षण भी करते हैं। इसलिए ब्यूरोक्रेसी से जुड़े लोग भी अपनी जिम्मेदारी और दायित्व को गंभीरता से निभाते हुए नजर आ रहे हैं। सरकार की इन गतिविधियों पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की तीसरी आंख और दिल्ली में बैठे पार्टी के नेताओं की भी हमेशा नजर टिकी रहती है। इसीलिए भजनलाल सरकार के अच्छे कार्यों और सरकार की स्पष्ट और ईमानदारी छवि की खबरें नियमित रूप से प्रधानमंत्री कार्यालय और भाजपा के केंद्रीय संगठन से जुड़े नेताओं तक लगातार पहुंचती रही है। इसलिए मुख्यमंत्री शर्मा की

ईमानदारी और साफ़-सूत्री छवि और उनके बेहतर ढंग से प्रदेश का शासन संभालने की प्रवृत्ति को देखकर ही मोदी और अमित शाह भी काफी प्रभावित और संतुष्ट हैं। इसलिए जब एक ईमानदार और एक अच्छा मुख्यमंत्री दिल्ली में जाकर केंद्र सरकार से अपने प्रदेश के विकास के लिए सहयोग मांगे, तो फिर चाहे केंद्र में विपरीत पार्टी की सरकार हो, वह भी कहीं ना कहीं सहयोग देने के लिए पीछे नहीं हटेगी, जबकि अब तो केंद्र में भाजपा की ही सरकार है। ऐसे में मुख्यमंत्री शर्मा की डिमांड और उनकी प्रदेश के विकास की आकांक्षाओं को पूरा करने में मोदी सरकार कहां पीछे रहने वाली है? यही वजह है कि अपने हर दिल्ली दौरे में मुख्यमंत्री शर्मा कुछ ना कुछ अच्छी सौगात लेकर ही जयपुर लौटे हैं।

दिल्ली दौरों से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की पर्सनलिटी में लगातार आ रहा निखार

यह सर्वमान्य बात है कि जितना आप सफल इंसानों से वास्ता रखोगे, मेल मिलाप रखोगे और विचारों का आदान-प्रदान करोगे, तो निश्चित रूप से आपकी पर्सनालिटी में जबरदस्त इजाफा होगा। इसलिए मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजमान होने के बाद भजनलाल शर्मा के पर्सनालिटी में और भी निखार आया है, उनकी पर्सनालिटी में लगातार चार चांद लग रहे हैं। इसकी एक बड़ी वजह यह भी है कि वह लगातार नए-नए सफल लोगों से मुलाकात करते हैं, विचारों का आदान-प्रदान करते हैं। भजनलाल शर्मा के दिल्ली दौरे में भी यही देखने को मिल रहा है कि वह हमेशा दिल्ली में श्रेष्ठ और सफल लोगों से मुलाकात करते हैं। इनमें केंद्र सरकार के मंत्री भी हैं, तो पार्टी के संगठन से जुड़े श्रेष्ठ नेता और संघ के बड़े लोग भी शामिल हैं। इन तमाम श्रेष्ठ लोगों से लगातार हो रही मुलाकातों, विचारों के आदान-प्रदान से भजनलाल शर्मा की खुद की पर्सनालिटी में तो लगातार चार चांद लग ही रहे हैं, इसके अलावा नए-नए लोगों से बातचीत के दौरान उन्हें नई-नई जानकारियां और नई-नई तकनीक और नए-नए नवाचारों के बारे में भी जानकारी हासिल होती है, जिनके माध्यम से वे प्रदेश के विकास को तेजी से आगे लेकर जाने में कामयाब हो रहे हैं। इसलिए मुख्यमंत्री शर्मा के यह दिल्ली दौरे उनकी खुद की पर्सनैलिटी को मजबूती देने में भी सहायक साबित हो रहे हैं, तो दूसरी तरफ प्रदेश की जनता के हितों की रक्षा और कल्याण के लिए भी काफी फायदेमंद साबित हो रहे हैं। मुख्यमंत्री की कुर्सी पर विराजमान होने के बाद भजनलाल शर्मा ने लगातार दिल्ली में जाकर पीएम मोदी के अलावा केंद्र सरकार के उन तमाम मंत्रियों से लगातार मुलाकात कर रहे हैं, जिनके सहयोग से प्रदेश में विभिन्न क्षेत्रों में बड़े-बड़े काम और बड़े-बड़े प्रोजेक्ट को संपादित करने में, या फिर अधूरे पड़े प्रोजेक्ट को पूरा करने और नए प्रोजेक्ट को शुरू करने में काफी आसानी रहेगी। जानकार लोगों का भी कहना है कि मोदी सरकार के मंत्रिमंडल में इस समय श्रेष्ठ और समर्पित नेताओं की एक बड़ी टीम शामिल हैं, जो अपने-अपने विभाग का संचालन बखूबी से कर रहे हैं। ऐसे में इन मंत्रियों से मुख्यमंत्री शर्मा की हो रही मुलाकात कई दृष्टिकोण से काफी फायदेमंद साबित हो रही है।

राम सेतु जल लिंक परियोजना बाड़मेर की रिफाइनरी यमुना जल समझौता

जयपुर मेट्रो जैसे अनेक बड़े प्रोजेक्ट हैं जो केंद्र सरकार के सहयोग के बिना पूरे नहीं हो सकते। इस बात को कांग्रेस पार्टी के नेता भी अच्छी तरह से जानते हैं कि केंद्र सरकार के सहयोग के बिना बड़े-बड़े प्रोजेक्ट अकेले राजस्थान सरकार अपने दम पर पूरा नहीं कर सकती। जहां हजारों करोड़ों रुपए लागत की कोई योजना होती है, वहां कोई भी स्टेट चाहे वह कितना भी आर्थिक रूप से मजबूत क्यों ना हो, उसे उन योजनाओं के लिए केंद्र की ओर देखना ही पड़ता है। इसलिए कोई भी प्रदेश की सरकार हो, उसे केंद्र सरकार के साथ अच्छे संबंध और बेहतर तालमेल और निरंतर संपर्क बनाए रखना बेहद जरूरी है। इसमें राजनीतिक प्रतिस्पर्धा या दुर्भावना रखना प्रदेश की जनता के साथ एक तरह से अन्याय ही माना जाएगा। अगर किसी स्टेट को तेजी से विकास करना है और लोगों के जीवन में हर क्षेत्र में खुशहाली लानी है, तो फिर आज के जमाने में हालातो के अनुसार बड़े-बड़े प्रोजेक्ट का निर्माण करना भी जरूरी हो जाता है, तभी वह स्टेट खुद को विकसित स्टेट के रूप में साबित कर सकता है। इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश को विकसित राज्य बनाने की दिशा में प्रदेश में हर क्षेत्र और विभाग में दूरगामी सोच के आधार पर योजनाएं और प्रोजेक्ट शुरू कर रहे हैं, ताकि वर्तमान के साथ लोगों का भविष्य भी काफी शानदार हो। इसलिए प्रदेश के कई ऐसे प्रोजेक्ट और योजनाएं हैं जिनकी लागत हजारों करोड़ों रुपए में है। ऐसे में राजस्थान जैसे विषम परिस्थिति वाले स्टेट के लिए अपने दम पर इन प्रोजेक्ट को पूरा करना काफी मुश्किल है, इसीलिए पिछली सरकारें कई बड़े-बड़े प्रोजेक्ट शुरू नहीं कर पाई, लेकिन प्रदेश में सत्ता परिवर्तन के साथ ही नए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राजस्थान के कई बड़े ड्रीम प्रोजेक्ट धरातल पर लाने का निरंतर प्रयास कर रहे हैं, जिसमें उन्हें काफी सफलता भी मिली है। इन्हीं ड्रीम प्रोजेक्ट को पूरा करने के लिए मुख्यमंत्री शर्मा बार-बार दिल्ली में जाकर प्रधानमंत्री और केंद्र सरकार के मंत्रियों से मुलाकात कर रहे हैं। मुलाकात के दौरान केंद्र सरकार से उन्हें पूरा सपोर्ट और मार्गदर्शन भी मिल रहा है। इसीलिए प्रदेश में राम सेतु जल लिंक परियोजना का काम तेज गति से संपादित हो रहा है, यमुना जल समझौते की डीपीआर पर काम तेजी से जारी है। इस समझौते को भी धरातल पर लाने के लिए मुख्यमंत्री शर्मा अभी से लगातार केंद्र सरकार से संपर्क कर रहे हैं, ताकि जैसे ही डीपीआर पूरी हो इस योजना पर पैसों की कमी की वजह से काम नहीं अटके। पिछले विधानसभा चुनाव में भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने जयपुर मेट्रो के दूसरे चरण का कार्य संपादित करने का लोगों से वादा किया था, इसलिए जयपुर मेट्रो के दूसरे चरण को जल्दी से जल्दी शुरू करने के लिए भी मुख्यमंत्री शर्मा लगातार केंद्र सरकार के संबंधित मंत्रियों से बातचीत कर रहे हैं, इसके लिए उन्होंने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से भी बातचीत की है। इसी तरह से बाड़मेर की रिफाइनरी को भी मंजूरी दिलाने के प्रयास में शर्मा ने अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। जब भी दिल्ली जाते हैं, रिफाइनरी को लेकर जरूर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और केंद्र सरकार के संबंधित मंत्री से बातचीत करते हैं। ऐसी और भी कई बड़ी-बड़ी योजनाएं और प्रोजेक्ट हैं, जिनमें कई पैसों की कमी की वजह से पिछली सरकार के समय से ही अधूरे पड़े हैं, तो उन्हें केंद्र सरकार के सहयोग से पूरा करने के लिए आर्थिक मदद लेने के लिए भी बार-बार केंद्र सरकार के मंत्रियों से जाकर बातचीत करनी पड़ती है, उनसे रिक्वेस्ट करनी पड़ती है, तब जाकर बात बनती है। इसके अलावा केंद्र पोषित अनेक योजनाएं हैं जिनका पैसा लेने के लिए आपको दिल्ली जाना ही पड़ेगा, क्योंकि कहावत है बिना रोए मां भी अपने बच्चों को दूध नहीं पिलाती। इसलिए यह तमाम कारण है जो बार-बार मुख्यमंत्री शर्मा को दिल्ली जाने के लिए प्रेरित करते हैं।

मुख्यमंत्री के दिल्ली दौरों की वजह से ही केंद्रीय करों में प्रदेश के हिस्से की राशि को हासिल करने में निरंतर मिल रही सफलता

यह मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के दिल्ली दौरो का ही परिणाम है कि केंद्रीय करों में राजस्थान के हिस्से की राशि को हासिल करने में भजनलाल शर्मा को काफी हद तक सफलता मिली है। अपने दिल्ली दौरे के दौरान कई बार मुख्यमंत्री शर्मा ने केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण से बहुत ही अच्छे माहौल में सार्थक तरीके से बातचीत करके राजस्थान का शानदार तरीके से पक्ष रखा है। केंद्रीय वित्त मंत्री के समक्ष प्रदेश के आर्थिक हालातो की सटीक जानकारी देकर प्रदेश की आर्थिक जरूरत का खाका प्रभावी तरीके से प्रस्तुत किया, जिसे केंद्रीय वित्त मंत्री भी इग्नोर नहीं कर पाई। यही वजह है कि केंद्रीय करो में प्रदेश के हिस्से की राशि का भुगतान केंद्र की ओर से निरंतर किया जाता रहा है, अन्यथा ऐसा पिछली सरकारों में कई बार देखने को मिला जब राजस्थान सरकार के बार-बार आग्रह करने के बावजूद भी केंद्र सरकार ने केंद्रीय करो में राजस्थान के हिस्से की राशि देने में ज्यादा दिलचस्पी नहीं दिखाई, जिसकी वजह से राजस्थान के हिस्से की रकम केंद्र सरकार के पास अटकी पड़ी रही। प्रदेश में पिछली कांग्रेस पार्टी की सरकार के समय केंद्रीय करों में राजस्थान के हिस्से की राशि समुचित तरीके से समय पर नहीं मिल पाई, इसका बड़ा कारण यही था कि पिछली सरकार सिर्फ मीडिया में ही अपने हिस्से की राशि नहीं देने का आरोप केंद्र सरकार पर लगाती रही, लेकिन फेस टू फेस ना तो मुख्यमंत्री दिल्ली में जाकर प्रधानमंत्री और वित्त मंत्री से मिले, और ना ही सरकार से जुड़े किसी अन्य बड़े व्यक्ति को प्रभावी तरीके से राजस्थान का पक्ष रखने के लिए दिल्ली भेजने की पहल की, जिसका परिणाम यह रहा की केंद्र सरकार ने भी इस विषय पर ज्यादा गौर नहीं किया। लेकिन प्रदेश में सत्ता बदलने के बाद से ही केंद्र में राजस्थान के हिस्से की जितनी भी राशि अटकी हुई है, उस राशि को हासिल करने के लिए नए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी। जब भी दिल्ली जाते हैं, तो पूरी तैयारी के साथ जाते हैं और वहां केंद्रीय वित्त मंत्री और अन्य मंत्रियों के समक्ष प्रभावी तरीके से राजस्थान का पक्ष रखते हैं, जिसमें उन्हें लगातार सफलता मिल रही है। चाहे केंद्रीय करो में राजस्थान के हिस्से की राशि का मामला हो, या फिर केंद्र पोषित विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं में राजस्थान सरकार का अटका हुआ पैसा हो, इस अटके हुए पैसे को राजस्थान सरकार की तिजोरी में डलवाने में मुख्यमंत्री शर्मा ने काफी हद तक सफलता हासिल की है, और इस सफलता में मुख्यमंत्री के यह दिल्ली दौरे काफी सहायक साबित हुए हैं।

प्रदेश के बजट के स्वरूप और आकार को मंजूरी दिलवाने में भी काफी मददगार साबित हुए हैं मुख्यमंत्री के दिल्ली दौरे

प्रदेश की भजन लाल सरकार में अब तक राजस्थान विधानसभा में तीन बजट प्रस्तुत किए गए हैं, और तीनों ही बजट के स्वरूप और आकर ने पिछले सारे रिकॉर्ड तोड़ दिए। अभी हाल ही में राजस्थान विधानसभा में प्रस्तुत किया गया राजस्थान का बजट का आकार काफी विशालकाय था, जिसकी परिकल्पना भी नहीं की जा सकती थी, लेकिन दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण और अन्य केंद्रीय मंत्रियों से किए गए अपने नियमित संवाद के माध्यम से प्रभावी तरीके से राजस्थान का पक्ष रख कर विशालकाय बजट को मंजूरी दिलवाने में सफलता हासिल की। पिछले बजट के स्वरूप और आकर ने प्रदेश में नया कीर्तिमान स्थापित किया है, क्योंकि अगले 1 साल में राजस्थान में कई बड़े-बड़े प्रोजेक्ट और कई बड़े-बड़े विकास कार्य संपादित होने जा रहे हैं। भजनलाल सरकार दूरगामी सोच के आधार पर कृषि, जल, सड़क, चिकित्सा, पर्यटन, उद्योग, शिक्षा, सौर ऊर्जा, बिजली, पेट्रोकेमिकल्स इत्यादि क्षेत्र में बड़ी-बड़ी योजनाएं और बड़े-बड़े प्रोजेक्ट शुरू करने की योजना के आधार पर विधानसभा में बजट प्रस्तुत किया था। साथ ही विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं के माध्यम से लोगों के जीवन को खुशहाल बनाने का लक्ष्य रखा गया, इसलिए पिछले बजट का स्वरूप काफी विशालकाय था, जिसे देखकर विपक्ष के नेता भी चकित रह गए और सरकार से सवाल भी पूछा कि इतना खर्च करने के लिए सरकार के पास संसाधन और पैसा कहां से आएगा। लेकिन इन तमाम विपक्ष के नेताओं के सवालों का वकायदा मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने राजस्थान विधानसभा में प्रभावी जवाब भी दिया। कुल मिलाकर यह कह सकते हैं कि मुख्यमंत्री शर्मा ने दिल्ली में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से लेकर केंद्र के तमाम मंत्रियों से अपने नियमित संवाद के माध्यम से केंद्र सरकार और राज्य सरकार के बीच इतनी मजबूत मधुर रिश्ते कायम कर लिए हैं, जिसकी वजह से राजस्थान सरकार के पास धनराशि और संसाधनों की कोई कमी भी नहीं रहेगी, और जो लक्ष्य मुख्यमंत्री शर्मा ने निर्धारित किए हैं, वे लक्ष्य हासिल भी किए जाएंगे, यह मुख्यमंत्री शर्मा के नियमित दौरों से ही संभव हो पाया है।

प्रदेश भाजपा के संगठन को गति देने के लिहाज से भी काफी सहायक साबित हो रहे हैं भजनलाल शर्मा के दिल्ली दौरे

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश में सत्ता और संगठन दोनों को लेकर शुरू से ही काफी अलर्ट मोड पर दिखे हैं, क्योंकि शर्मा संगठन से निकल कर ही इतने बड़े पद तक पहुंचे हैं। इसलिए वह यह अच्छी तरह से जानते हैं कि संगठन सर्वोपरि है, संगठन मजबूत है तो फिर से प्रदेश और केंद्र में पार्टी की सरकार का गठन होना निश्चित है। इसलिए मुख्यमंत्री शर्मा जब भी दिल्ली जाते हैं, वे अपने दिल्ली दौरे में प्रदेश के विकास कार्यों और योजनाओं को लेकर तो केंद्र सरकार से जुड़े लोगों से चर्चा करते ही हैं, इसके अलावा दिल्ली में उन्होंने हमेशा अपने हर दौर में पार्टी के संगठन से जुड़े नेताओं से भी मुलाकात करके राजस्थान में पार्टी के संगठन को और कैसे मजबूत किया जाए इसके बारे में गंभीरता से चर्चा करते नजर आए हैं। इनकी यह हैबिट दिल्ली में पार्टी के केंद्रीय संगठन से जुड़े नेताओं को भी काफी अच्छी लगती है, क्योंकि मुख्यमंत्री की कुर्सी पर बैठने के बाद भी भजन लाल शर्मा हमेशा पार्टी के संगठन को गति देने के बारे में सोचते हैं। अक्सर यह देखा जाता है कि चाहे कोई सी भी पार्टी हो, अगर कोई नेता मुख्यमंत्री या प्रधानमंत्री के पद पर बैठ जाता है, तो फिर वह अपने आप को सरकार के कामों में इतना व्यस्त कर लेता है कि उसकी अपनी पार्टी के संगठन से दूरियां सी हो जाती है। लेकिन भजनलाल शर्मा मुख्यमंत्री बनने के बाद भी लगातार पार्टी के संगठन को सर्वोपरि मानते हैं, और पार्टी के कार्यकर्ताओं से और नेताओं से लगातार संवाद करते रहते हैं। इसी संवाद को जारी रखते हुए वे दिल्ली में बैठे पार्टी के नेताओं से भी दिल्ली दौरे के दौरान गंभीरता से प्रदेश में पार्टी के संगठन को मजबूती देने के संदर्भ में चर्चा और सामूहिक संवाद करते नजर आए। इसलिए उनके दिल्ली दौरे कहीं ना कहीं राजस्थान भाजपा के संगठन को गति और मजबूती देने में भी काफी सहायक साबित हो रहे हैं। केंद्र में पार्टी के संगठन से जुड़े नेताओं को भी मुख्यमंत्री शर्मा के मार्फत प्रदेश में भाजपा के संगठन की गतिविधियों के वास्तविक हालातो की जानकारी मिलती रहती है, जिसे कहीं ना कहीं प्रदेश में पार्टी के संगठन के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा सकता है।

प्रदेश में कांग्रेस की खूबसूरती से जमीन जोत रहे गोविंद सिंह डोटासरा

1. वर्ष 2020 जुलाई से कठिन और विपरीत परिस्थितियों में भी राजस्थान कांग्रेस को बखूबी से संभाल रहे इस बेजोड़ कांग्रेस के किसान नेता की कैप्टनशिप से कांग्रेस हाई कमान भी है काफी खुश और संतुष्ट।

2. उपचुनाव में प्रमोद भाया की जीत में रही बड़ी भूमिका।

3. अपनी मेहनत, लगन और समर्पित भाव से पार्टी के संगठन को मजबूती दे रहे डोटासरा आज राजस्थान कांग्रेस के टॉप नेताओं में हो गए शामिल

जयपुर। वर्ष 2020 जुलाई माह से राजस्थान कांग्रेस को कठिन और विपरीत परिस्थितियों में भी बहुत ही खूबसूरती और मजबूती से संभाल रहे गोविंद सिंह डोटासरा, आज राजस्थान कांग्रेस के सबसे टॉप नेताओं में गिने जाते हैं। पिछले करीब 6 साल के अपने पार्टी के अध्यक्ष पद के कार्यकाल में डोटासरा को जितना विपक्षी पार्टियों से जूझना पड़ा, उतना ही उन्हें अपनी खुद की पार्टी में भी अपने राजनीतिक प्रभुत्व के लिए अदृश्य संघर्ष करना पड़ा। लेकिन यह उनकी बेखौफ और दबंग छवि का ही परिणाम रहा कि अपनी कड़ी मेहनत, लगन, निष्ठा और पार्टी के प्रति गहरे समर्पित भाव से उन्होंने बड़े-बड़े संघर्ष और बड़ी-बड़ी विकट परिस्थितियों का डटकर मुकाबला करते हुए न केवल राजस्थान कांग्रेस के संगठन को जबरदस्त तरीके से मजबूती प्रदान कर रहे हैं, बल्कि डोटासरा ने अपनी अद्भुत पॉलिटिकल और नेतृत्व क्षमता दिखाई है। इसी का नतीजा है कि आज दिल्ली में बैठे कांग्रेस पार्टी के सभी बड़े नेता डोटासरा से काफी प्रभावित हैं, और राजस्थान कांग्रेस के सबसे टॉप नेताओं में माने जाते हैं। बड़ी बात यह है कि पार्टी में अंतर विरोध की वजह से पिछले 6 सालों में डोटासरा कई महीनो तक अपने हिसाब से संगठन में नियुक्ति नहीं कर पाए, इसके बावजूद भी उन्होंने अपनी आधी अधूरी टीम से राजस्थान में कांग्रेस को कमजोर नहीं पडने दिया और पूरे जोश, उत्साह और लगन के साथ कांग्रेस जनों में जोश भरते रहे। अपने जोशीले हाव भाव और जोशीले भाषणों से प्रदेश में शहर से लेकर गांव ढाणी में बैठे कांग्रेस जनों को प्रेरित और निर्देशित करते हुए उन्हें पार्टी से जोड़े रखा। पार्टी में चल रहे बड़े नेताओं के आपस की लड़ाई को डोटासरा ने कभी भी अपने अध्यक्ष पद के कार्यकाल के दौरान पार्टी के कार्यकर्ताओं पर ज्यादा हावी नहीं होने दिया है, और छोटे-बड़े सभी कांग्रेस जनों के बीच सामंजस्य और समन्वय स्थापित करने में उन्हें काफी सफलता भी मिली। इसी का परिणाम रहा कि प्रदेश और केंद्र में भारतीय जनता पार्टी की सरकार होने के बावजूद भी, कुछ महीने पहले प्रदेश की अंता विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी प्रमोद जैन भैया की जीत में डोटासरा का बहुत बड़ा योगदान माना जा रहा है। राजनीतिक विश्लेषक यह भी कहते हैं कि भले ही 2023 के विधानसभा चुनाव में कांग्रेस पार्टी सरकार नहीं बन पाई हो, लेकिन इन चुनाव के नतीजे से यह भी साबित हुआ है कि राजस्थान में कांग्रेस पार्टी अन्य राज्यों की तुलना में काफी मजबूत है। अगर पिछले विधानसभा चुनाव में प्रत्याशी चयन के मामले में पारदर्शिता और गंभीरता दिखाई जाती तो कांग्रेस पार्टी का प्रदर्शन काफी अच्छा रहता, लेकिन विधानसभा चुनाव में डोटासरा कई विधानसभा सीटों पर अपनी इच्छा के मुताबिक उम्मीदवार खड़ा नहीं कर पाए, जो बाद में प्रदेश में पार्टी की हार का कारण भी बना। चुनाव में मिली हार के बाद डोटासरा ने भी यह स्वीकार किया कि चुनाव में टिकट वितरण ठीक तरह से नहीं हुआ। इसलिए भले ही पिछले विधानसभा चुनाव में डोटासरा की अगुवाई में कांग्रेस को पराजय का सामना करना पड़ा हो, लेकिन पार्टी हाई कमान और राजनीतिक विश्लेषक भी यह जानते हैं कि पिछले विधानसभा चुनाव में चाहे उम्मीदवार खड़ा करने की बात हो या फिर चुनाव प्रचार की, हर बड़े डिसीजन में डोटासरा के अध्यक्ष होने के बावजूद भी उनके पास ज्यादा पावर नहीं थे। इसलिए जब पार्टी को हार मिली तो डोटासरा के नेतृत्व पर किसी ने भी सवाल खड़ा नहीं किया, क्योंकि पार्टी में संगठन के तौर पर डोटासरा ने अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ रखी थी। इसलिए कांग्रेस हाई कमान ने भी विधानसभा चुनाव में पार्टी को मिली हार को लेकर डोटासरा की नेतृत्व क्षमता पर कोई सवाल खड़ा नहीं किया।

गोविंद सिंह डोटासरा का विधानसभा चुनाव में खूबसूरत चौका

गोविंद सिंह डोटासरा ने पहला विधानसभा चुनाव 2008 में लड़ा था, जब डोटासरा सिर्फ 34 मतों से चुनाव जीत पाए थे। बाद में 2013 के विधानसभा चुनाव में 200 विधायकों में से कांग्रेस पार्टी के सिर्फ 21 विधायक ही चुने गए थे, जिनमें डोटासरा भी शामिल थे, और यह चुनाव डोटासरा ने करीब 10,000 वोट के अंतर से जीता था, जिस पर डोटासरा को प्रतिपक्ष का उप नेता और राजस्थान विधानसभा का कांग्रेस पार्टी का सचेतक बनने का सौभाग्य भी मिला। इसके बाद 2018 के विधानसभा चुनाव में उन्होंने तीसरी बार लक्ष्मणगढ़ विधानसभा सीट से लगातार चुनाव जीता, इस चुनाव में कांग्रेस पार्टी को प्रदेश में बहुमत मिला, अशोक गहलोत मुख्यमंत्री बने और गहलोत के मंत्रिमंडल में डोटासरा को जगह दी गई। इसके बाद 2023 के विधानसभा चुनाव में डोटासरा ने खूबसूरत चौका लगाकर लक्ष्मणगढ़ विधानसभा सीट से लगातार चौथी बार विधायक चुने गए। पहली बार विधायक बनने से पहले डोटासरा वर्ष 2005 में लक्ष्मणगढ़ पंचायत समिति के प्रधान भी चुने गए थे। प्रधान पद पर कार्यकाल पूरा होने से पहले ही 2008 के विधानसभा चुनाव आने पर उन्हें लक्ष्मणगढ़ से कांग्रेस पार्टी ने अपना उम्मीदवार बना दिया, जिसमें पहले ही चुनाव में उन्हे जीत मिली। हालांकि यह कांटे की जीत थी, लेकिन जीत एक वोट की भी मानी जाती है, जिसमें डोटासरा पहले चुनाव 34 वोट से जीते थे। कुल मिलाकर यह कहा जा सकता है कि डोटासरा लक्ष्मणगढ़ विधानसभा क्षेत्र के हर जाति और बिरादरी के लोगों के दिलों पर वर्ष 2008 से ही राज कर रहे हैं। भले ही इस दौरान प्रदेश में कांग्रेस और भाजपा की सरकार रही हो, लेकिन लक्ष्मणगढ़ की जनता डोटासरा को ही अपनी सरकार मानती है।

डोटासरा के गमछा डांस की चर्चा राजस्थान में ही नहीं बल्कि देश भर में

गोविंद सिंह डोटासरा का गमछा डांस राजस्थान में ही नहीं बल्कि दिल्ली और देश के अन्य राज्यों में भी खूब लोगों को भाता है। डोटासरा जब भी कांग्रेस पार्टी के कार्यक्रमों में या फिर अन्य किसी कार्यक्रमों में देश में जहां भी जाते हैं, वहां लोग उन्हें गमछा डांस करने की फरमाइश कर देते हैं, जिस पर डोटासरा लोगों को नाराज भी नहीं करते और उनकी फरमाइश के अनुसार मंच पर ही गमछा डांस करके कार्यक्रम में मौजूद लोगों को रोमांचित कर देते हैं। कई बार तो ऐसा भी देखा गया जब कांग्रेस पार्टी के बड़े नेताओं ने ही पार्टी की सभा में डोटासरा को गमछा डांस करने की फरमाइश कर दी। इसलिए अपने इस डांस के माध्यम से भी डोटासरा कांग्रेस जनों में सामंजस्य और समन्वय का भाव पैदा करने का प्रयास तो करते ही हैं, इसके अलावा प्रदेश के लोगों का ध्यान कांग्रेस पार्टी पर अपनी ओर आकर्षित करने का प्रयास करते रहते हैं। डोटासरा की कोशिश यही रहती है कि चाहे कुछ भी करना पड़े और चाहे कोई सा भी तरीका अपनाना पड़े, लेकिन प्रदेश में कांग्रेस पार्टी का संगठन मजबूत हो और प्रदेश के लोग लगातार पार्टी से जुड़ने जाए।

एक साधारण शिक्षक किसान के बेटे डोटासरा ने अपनी मेहनत और लगन से गांधी परिवार का भी जीत लिया दिल

गोविंद सिंह डोटासरा का जन्म 1964 में सीकर जिले की लक्ष्मणगढ़ तहसील में कृपाराम जी की ढाणी में रहने वाले साधारण शिक्षक मोहन सिंह डोटासरा के घर हुआ। घर में खेती आजीविका का साधन थी, इसलिए डोटासरा ने परिवार के सदस्यों का खेती के कार्य में भी खूब सहयोग किया। खेत में जमीन जोत कर पसीना बहाया, तो अपने माता-पिता से मिले संस्कारों से डोटासरा एक अच्छे संस्कारवान युवा के रूप में अपने व्यवहार और कार्य शैली से इलाके के लोगों में काफी लाडले बन गए थे। सीकर के प्रतिष्ठित श्री कल्याण कॉलेज से इन्होंने बीकॉम की डिग्री हासिल की, बाद में राजस्थान विश्वविद्यालय से एलएलबी की। इसके बाद सीकर जिला अदालत में करीब 6 साल तक वकालत की। इस दौरान युवक कांग्रेस के लिए भी काम करते रहे। वकालत के साथ-साथ कांग्रेस पार्टी की गतिविधियों में जबरदस्त तरीके से सक्रियता दिखाते रहे, जिसकी वजह से वर्ष 2005 में लक्ष्मणगढ़ पंचायत समिति के सदस्य का चुनाव लड़ा और फिर प्रधान भी चुन लिए गए। इसके बाद डोटासरा की राजस्थान कांग्रेस और राजस्थान की राजनीति में जो पॉलिटिकल यात्रा आज तक चली आ रही है, उसे देखकर हर कोई सहज ही अंदाजा लगा सकता है कि इतने कम समय में इतनी उपलब्धियां और इतने पद हासिल करने वाले न के बराबर राजनेता है, जो सिर्फ अपनी मेहनत, लगन और तपस्या के दम पर कांग्रेस जैसी बड़ी पार्टी में बुलंदियों पर पहुंचे हो। क्योंकि राजस्थान कांग्रेस में आज भी कई बड़े नेता ऐसे हैं जो पिछले कई सालों से कांग्रेस के प्रतिष्ठित गांधी परिवार से अपना मजबूत गहरा रिश्ता बनाए हुए हैं। देखा जाए तो इन नेताओं के आगे तो डोटासरा कल के नेता लगते हैं, लेकिन आज डोटासरा अपनी मेहनत, लगन, नेतृत्व क्षमता और राजनीतिक कुशलता से सोनिया गांधी, राहुल गांधी और प्रियंका गांधी के काफी विश्वासपात्र और भरोसेमंद नेता बन गए हैं। दिल्ली में बैठे कांग्रेस पार्टी के कई अन्य तमाम बड़े नेता भी डोटासरा की नेतृत्व क्षमता और उनके कार्यशैली से काफी प्रभावित हैं। यही वजह है कि उन्हें राजस्थान में बराबर पार्टी को मजबूती प्रदान करने का बड़ा कार्य दिया हुआ है, और इस कार्य में डोटासरा खुद को साबित भी करके दिखा रहे हैं, जिसका ताजा उदाहरण अंता विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस पार्टी को जीत मिलना है।

बेखौफ निडर नेता जो सिद्धांतों से नहीं करते समझौता

यह अपने शिक्षक पिता से मिले संस्कारों का ही परिणाम है कि गोविंद सिंह डोटासरा जो भी बोलते हैं, खुलकर बोलते हैं, सबके सामने बोलते हैं। चाहे अपनी पार्टी से जुड़ा मामला हो या फिर दूसरे दलों और विपक्षी पार्टी की सरकारों से जुड़ा मामला हो, चाहे उनकी बात किसी को कड़वी लगे या मीठी, सत्य बात बोलने से कभी भी पीछे नहीं हटते और ना ही सिद्धांतों से समझौता करते हैं। बेखौफ और निडर होकर अपनी बात कहते हैं, चाहे वह राजस्थान विधानसभा की कार्रवाई हो या फिर सार्वजनिक सभा या फिर पार्टी की मीटिंग हो, जो बात उन्हें कहनी चाहिए वह बात वह बोलकर ही रहते हैं। अक्सर राजनेताओं के बारे में यह कहा जाता है कि उनकी जुबान पर दूसरी बात रहती है और दिल में दूसरी, लेकिन डोटासरा एक ऐसे राजनेता माने जाते हैं जो बात उनके दिल में होती है वही बात उनकी जुबान पर आ जाती है। इसीलिए उन्हें मुंहफट और बेखौफ राजनेता की उपाधि मिली हुई है। हालांकि कई बार ऐसा भी हुआ है जब डोटासरा के मुंह से निकली लच्छेदार बातें और ठेठ राजस्थानी कहावतें विपक्षी दलों के नेताओं के राजनीति करने का एक माध्यम बन जाती है, जिसमें पिछली गहलोत सरकार के समय शिक्षा मंत्री रहने के दौरान लोगों से मुलाकात के समय डोटासरा के जुबान से निकली कहावत 'क्या नाथी का बाड़ा समझ रखा है', यह कहावत राजनीतिक गलियारों में अब तक चर्चा का विषय बनी हुई है। हालांकि डोटासरा किसी की भावना को ठेस नहीं पहुंचाना चाहते थे, लेकिन उनका स्वभाव और नेचर बिल्कुल साधारण ठेठ ग्रामीण की जैसे रहता है, इसलिए उन्होंने यह शब्द रूटीन में मुलाकात के दौरान लोगों से कहे थे। लेकिन विपक्षी दलों ने डोटासरा के इस बयान को राजनीति करने का जरिया बना लिया और वे नेता 'नाथी का बाड़ा' कहकर अब तक भी डोटासरा पर तंज कसते रहते हैं। लेकिन यह भी सच है कि विपक्ष के तंज कसने से डोटासरा कमजोर होने की जगह और मजबूत हुए हैं, और वे पहले की तुलना में ज्यादा आक्रामक तेवर अपना कर विपक्षी दलों के नेताओं पर जमकर कटाक्ष करने में पीछे नहीं रहते।

अशोक गहलोत, सचिन पायलट, टीकाराम जूली जैसे नेताओं के साथ बेहतर संतुलन और तालमेल बनाकर काम करने में विश्वास करते हैं डोटासरा

पिछली गहलोत सरकार के दौरान तत्कालीन मुख्यमंत्री अशोक गहलोत और गोविंद सिंह डोटासरा के बीच बहुत ही अच्छे राजनीतिक रिश्ते थे। इस दौरान डोटासरा के सचिन पायलट से भी रिश्ते कभी खराब नहीं हुए। डोटासरा पार्टी के ऐसे नेता माने जाते हैं जो सभी नेताओं को एक मंच पर लाकर काम करने में ज्यादा विश्वास रखते हैं। इसलिए भले ही पिछले विधानसभा चुनाव के बाद कांग्रेस पार्टी को मिली पराजय से अशोक गहलोत और डोटासरा के बीच राजनीतिक दूरियां आ गई हो, लेकिन अभी भी इन दोनों नेताओं के बीच काफी अच्छे पॉलिटिकल और व्यक्तिगत रिश्ते हैं। इसी तरह से डोटासरा के सचिन पायलट के साथ भी कभी भी रिश्ते खराब नहीं हुए, पायलट की पॉलिटिकल क्षमता और उनकी लोकप्रियता को डोटासरा ने हमेशा पूरी इज्जत दी है। इसी तरह से प्रतिपक्ष के नेता टीकाराम जूली के साथ भी गोविंद सिंह डोटासरा का बहुत ही अच्छा तालमेल और समन्वय देखने को मिल रहा है। इसलिए भले ही मीडिया में राजस्थान कांग्रेस के कुछ बड़े नेताओं के बीच आपस में मनमुटाव होने की बात चर्चा में रहे, लेकिन डोटासरा पार्टी के सभी बड़े नेताओं के साथ हमेशा तालमेल और संतुलन बनाकर काम करने में ज्यादा विश्वास करते हैं। इसीलिए पिछले 6 साल से डोटासरा लगातार कांग्रेस पार्टी के अध्यक्ष पद पर बने हुए हैं, और पिछले 6 साल में राजस्थान में कांग्रेस पार्टी को कुछ चुनाव में पराजय का सामना भी करना पड़ा, लेकिन कांग्रेस पार्टी के संगठन के मामले में डोटासरा ने कोई कमी बाकी नहीं छोड़ी है। जब राजस्थान में कांग्रेस पार्टी की सरकार थी, तब केंद्र की मोदी सरकार के खिलाफ आयोजित किए जाने वाले पार्टी के सभी तरह के कार्यक्रम, धरना प्रदर्शन, रैली इत्यादि सफलतापूर्वक डोटासरा के नेतृत्व में संपादित की गई। आज राजस्थान में भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, लेकिन इसके बावजूद भी डोटासरा के नेतृत्व में प्रदेश सरकार और केंद्र की मोदी सरकार के खिलाफ कांग्रेस पार्टी की ओर से आयोजित किए जाने वाले तमाम तरह के कार्यक्रम सफलतापूर्वक संपादित किए जा रहे हैं, जो यह दिखता है कि डोटासरा कितनी मजबूती और सामंजस्य के साथ प्रदेश में पार्टी को संभाले हुए हैं।

अंता विधानसभा सीट पर उपचुनाव में प्रमोद जैन भाया की जीत में डोटासरा की रही बड़ी भूमिका

राजनीतिक विश्लेषक भी यह मानते हैं कि अंता विधानसभा सीट पर हुए उपचुनाव में कांग्रेस पार्टी के प्रत्याशी प्रमोद जैन भैया की जीत में डोटासरा की बड़ी भूमिका रही। इस जीत से प्रमोद जैन भाया के पोलिटिकल कैरियर को तो गति मिली ही, इसके अलावा प्रमोद जैन भाया से ज्यादा गोविंद सिंह डोटासरा के लिए यह चुनाव काफी महत्वपूर्ण था। और जब यहां कांग्रेस पार्टी को जीत मिली तो इससे डोटासरा की पॉलीटिकल दक्षता और उनके नेतृत्व क्षमता में और चार चांद लग गए। इस चुनाव नतीजे से डोटासरा की पार्टी के दिल्ली दरबार में काफी प्रभाव कायम हुआ है, क्योंकि यह चुनाव जीतना कांग्रेस पार्टी के लिए काफी मुश्किल था। लेकिन डोटासरा ने इस उपचुनाव में चुनाव प्रबंधन और चुनाव प्रचार की जो रणनीति तैयार की, वह वास्तव में काबिले तारीफ थी। एक तरफ भारतीय जनता पार्टी के संगठन से जुड़े नेता और सरकार से जुड़े नेता बड़ी-बड़ी जनसभाएं आयोजित करके खुले में पार्टी का अच्छा वातावरण दिखाने का प्रयास कर रहे थे, तो दूसरी तरफ डोटासरा ने गुपचुप में जमीनी तौर पर पार्टी के चुनावी प्रबंधन और चुनाव प्रचार को गति देने के प्लान पर काम किया, जिसमें उन्हें सफलता भी मिली। डोटासरा ने इस उप चुनाव में अपने पूरे राजनीतिक कौशल का इस्तेमाल किया, उसी का परिणाम रहा की राजस्थान और दिल्ली में भारतीय जनता पार्टी की सरकार होने के बावजूद भी यहां वसुंधरा राजे जैसी बड़ी राजनीतिक हस्ती के क्षेत्र में कांग्रेस पार्टी ने उपचुनाव में जीत हासिल की। इसलिए इस जीत के बाद डोटासरा के नेतृत्व क्षमता और उनकी पॉलिटिकल कुशलता की जयपुर से लेकर दिल्ली तक खूब चर्चा हुई।

एक श्रेष्ठ किसान कांग्रेस और जाट नेता के रूप में डोटासरा ने खुद को साबित किया

राजस्थान प्रदेश के गठन के बाद से ही राजस्थान में कांग्रेस पार्टी में किसान और जाट नेताओं का जबरदस्त वर्चस्व रहा है। राजस्थान कांग्रेस में एक से बढ़कर एक किसान और जाट नेता हुए हैं, जिनकी प्रतिष्ठा और वर्चस्व राजस्थान तक सीमित नहीं था, बल्कि कांग्रेस पार्टी का दिल्ली दरबार भी राजस्थान कांग्रेस के नेताओं का काफी सम्मान किया करता था। लेकिन यह भी सच है कि पिछले कई सालों से राजस्थान कांग्रेस में दबंग किसान और जाट नेताओं का टोटा पड़ गया। हालांकि पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष नारायण सिंह, गोविंद सिंह डोटासरा, हरीश चौधरी, हेमाराम चौधरी जैसे नेता अब भी पार्टी में मौजूद हैं, लेकिन इनमें नारायण सिंह और हेमाराम चौधरी जैसे नेताओं की आयु काफी ज्यादा हो चुकी है, इसलिए ऐसे नेताओं ने स्वास्थ्य कारण की वजह से खुद को अपने घर तक सीमित कर लिया है। हेमाराम चौधरी हालांकि फील्ड में जरूर नजर आते हैं, लेकिन उनकी अब चुनाव लड़ने में कोई दिलचस्पी नहीं रह गई है। इसलिए राजस्थान कांग्रेस में अब पहले की तरह दबंग किसान और जाट नेताओं की बड़ी लिस्ट नजर नहीं आती। कई नेता ऐसे भी हैं जो कांग्रेस छोड़कर भाजपा में जा चुके हैं। ऐसे में गोविंद सिंह डोटासरा ने काफी हिम्मत, धैर्य और कड़ी मेहनत से राजस्थान कांग्रेस में एक श्रेष्ठ किसान और जाट नेता के रूप में खुद को साबित करके दिखाया है। आज डोटासरा जाट समाज के भी एक लोकप्रिय और दबंग कांग्रेस नेता के रूप में उभर कर सामने आए हैं। राजनीतिक विश्लेषक भी मानते हैं कि राजस्थान कांग्रेस में 2-3 नेताओं के नाम संभावित मुख्यमंत्री पद की दौड़ में शामिल हैं, जिसमें एक नाम डोटासरा का भी है। क्योंकि डोटासरा ने पिछले 6 साल में पार्टी के संगठन को मजबूती प्रदान करने में खुद को पूरी तरह से पार्टी के लिए समर्पित करके रखा हुआ है, और तमाम कठिन और विपरीत परिस्थितियों में भी पार्टी को लगातार मजबूती देने का काम किया है। ऐसे में डोटासरा को भी मुख्यमंत्री पद का प्रबल दावेदार माना जा रहा है।

प्रदेश में महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल खोलने में डोटासरा का बड़ा योगदान

प्रदेश में महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल स्थापित करने में शिक्षा मंत्री के रूप में गोविंद सिंह डोटासरा का बड़ा योगदान रहा है। पिछली सरकार के कार्यकाल के दौरान प्रदेश में कई जगहों पर अंग्रेजी स्कूलों की स्थापना की गई, जिसके माध्यम से ग्रामीण क्षेत्र के बच्चे भी इंग्लिश में बचपन से ही पारंगत होने लगे। हालांकि इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता की पिछले सरकार के समय प्रदेश भर में खोले गए इंग्लिश स्कूलों में कई जगहों पर पर्याप्त शिक्षक नहीं होने की वजह से स्कूलों की शिक्षण व्यवस्था ठीक तरह से संपादित नहीं हो पाई। लेकिन यह भी कहना पड़ेगा कि कोई भी बड़ा प्रयोग शुरू में धरातल पर लाया जाता है तो उसमें कई तरह की समस्याएं और मुश्किलें सामने आती हैं, लेकिन धीरे-धीरे मुश्किलों का समाधान भी निकलता रहता है। इसलिए पिछली सरकार के समय प्रदेश भर में खोली गई महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल निश्चित रूप से प्रदेश में छात्रों में इंग्लिश के प्रति नॉलेज बढ़ाने में एक बहुत बड़ा कारगर कदम साबित होगी। हालांकि प्रदेश की भजनलाल सरकार भी अब इन इंग्लिश मीडियम स्कूल की व्यवस्थाओं को मजबूती देने और सुधारने में दिलचस्पी ले रही है, लेकिन यह तो कहना ही पड़ेगा की इन इंग्लिश मीडियम स्कूलों से प्रदेश के ग्रामीण मजदूर और किसान परिवार के बच्चों को काफी कुछ सीखने को मिला है, जो आगे चलकर अंग्रेजी के क्षेत्र में उनके भविष्य को उज्जवल बनाने की दिशा में काफी कारगर साबित माना जा सकता है।

शिक्षा मंत्री के कार्यकाल में कई निर्णय को लेकर चर्चा में रहे डोटासरा

पिछली गहलोत सरकार में शिक्षा मंत्री के रूप में डोटासरा कई निर्णय को लेकर चर्चा में रहे और भाजपा के निशाने पर भी लगातार रहे। जिसमें डोटासरा ने सामाजिक विज्ञान की किताब में वीर सावरकर के चैप्टर को हटाने का भी एक निर्णय था, जिसमें डोटासरा का कहना था कि सावरकर वीर नहीं थे, क्योंकि उन्होंने जेल से छूटने के लिए ब्रिटिश सरकार से क्षमा याचना मांगी थी, इसलिए उन्हें वीर नहीं कहा जा सकता। इस निर्णय को लेकर भारतीय जनता पार्टी ने विधानसभा में काफी हंगामा और विरोध किया था। इसी तरह से हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप को जीत मिलने का जो चैप्टर था उस पर डोटासरा ने एतराज जताया था और कहा था कि हल्दीघाटी के युद्ध में महाराणा प्रताप को पराजय मिली थी, जीत नहीं मिली थी, इसलिए छात्रों को गलत जानकारी नहीं दी जा सकती। यह कहकर उन्होंने चैप्टर में बदलाव करने की बात कही थी। ऐसे और भी निर्णय थे जो राजस्थान विधानसभा में ही नहीं बल्कि राजस्थान की राजनीति में कई दिनों तक चर्चा का केंद्र बिंदु बन रहे, लेकिन डोटासरा ने भारतीय जनता पार्टी के नेताओं की ओर से इन सभी निर्णय पर उठाए गए सवालों का सटीक जवाब दिया।

जयपुर में हिंदुत्व और सनातन धर्म का अलख जगा रहे बालमुकुंद आचार्य

1. भाजपा के संत विधायकों में पिछले 2 साल में सबसे ज्यादा रहे चर्चित, हिंदुओं के पलायन को रोकने में निभा रहे बड़ी भूमिका, जयपुर में मांस और शराब के अवैध कारोबार पर अंकुश लगवाने में भी रहे अग्रणी

2. सनातन धर्म की रक्षा और प्रचार प्रसार, गोवंश की रक्षा और गौशालाओं के विकास के प्रति समर्पित भाव से कर रहे कार्य, जयपुर में अवैध बांग्लादेशी और गलत इरादों से अवैध रूप से रह रहे लोगों को शहर से बाहर निकालने का ले लिया संकल्प, हवा महल विधानसभा क्षेत्र में बिना भेदभाव यह करवा रहे विकास कार्य

जयपुर। यूं तो प्रदेश भाजपा विधायक दल में साधु संत की भरमार है, लेकिन पिछले 2 साल में इन साधु संत विधायकों में जयपुर की हवा महल विधानसभा सीट से विधायक बालमुकुंद आचार्य सबसे ज्यादा चर्चित और सुर्खियों में रहे। अलवर के पूर्व सांसद और मौजूदा विधायक बाबा बालक नाथ, महंत प्रताप पुरी, ओटाराम देवासी जैसे साधु संत भाजपा विधायक दल की शोभा बढ़ा रहे हैं, और यह सभी साधु संत अपनी परंपरागत साधु संत की वेशभूषा में ही राजस्थान विधानसभा में भी अपनी उपस्थिति दिखा रहे हैं। इनमें ओटाराम देवासी प्रदेश की भजनलाल सरकार के मंत्रिमंडल में भी शामिल हैं, लेकिन इन सब साधु संत विधायकों में जयपुर की हवा महल विधानसभा सीट से पहली बार चुनाव लड़कर पहली बार विधानसभा में पहुंचे विश्व विख्यात हाथोज धाम के पुजारी बालमुकुंद आचार्य ने, विधायक चुने जाने के अगले ही दिन हनुमान जी की गदा हाथ में लेकर गुलाबी शहर की सड़कों पर अवैध मांस और शराब का कारोबार करने वाले लोगों और जयपुर में कई सालों से गलत इरादों से अवैध रूप से रह रहे लोगों के खिलाफ एलान-ए-जंग का आगाज करके जयपुर में सनसनी फैला दी। बाबा का यह ऐलाने जंग पिछले 2 साल से अनवरत रूप से जारी है। पिछले 2 साल में बाबा एक भी दिन निठल्ले नहीं बैठे और अपने विधायक चुने जाने से पहले ही जिस विजन और संकल्प के साथ पॉलीटिकल सफर की शुरुआत की थी, उस विजन और संकल्प को पूरा करने में अपनी जान हथेली पर रखकर चल रहे हैं। इस दौरान उन्हें कई बार सोशल मीडिया पर जान से मारने की धमकी भी मिली, लेकिन इन धमकियों के बाद बाबा ने जोश और उत्साह के साथ अपनी लड़ाई को आगे बढ़ाया। वे एक तरफ सनातन धर्म की रक्षा और प्रचार प्रसार में पूरी ताकत से जुटे हैं, तो दूसरी तरफ अपने निर्वाचन क्षेत्र में बिना जातिगत और सांप्रदायिक भेदभाव के बड़े पैमाने पर विकास कार्य भी करवाए हैं। इस दौरान राजस्थान विधानसभा के विभिन्न क्षेत्रों में इन्होंने दमदार तरीके से अपने क्षेत्र की मूलभूत समस्याओं और विकास का मुद्दा तो उठाया ही, इसके अलावा जयपुर में महिला स्कूल और कॉलेज के बाहर मनचले लड़कों और छात्रों को परेशान करने वाले अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों की गतिविधियों पर अंकुश लगाने के लिए विधानसभा में भी जोरदार और प्रभावी तरीके से पक्ष रखकर अपनी ही पार्टी की सरकार से छात्राओं की सुरक्षा को सुनिश्चित करने का आग्रह किया। आचार्य की इस मांग पर उन्हें सदन का पूरा सपोर्ट भी मिला। साधु संत से विधायक बनने के बाद बालमुकुंद आचार्य की दिनचर्या पूरी तरह से बदल गई है। उन्हें रोजाना हवामहल विधानसभा क्षेत्र की गलियों, चौराहों और कॉलोनियों में घूमते हुए आसानी से देखा जा सकता है। पहले जहां लोग हाथोज धाम का संत होने के नाते उनके मंदिर में जाकर उनके दर्शन के लिए देर तक खड़े रहते थे, अब बाबा खुद सनातन धर्म की रक्षा और हिंदुत्व को बचाने के लिए जयपुर में हिंदुओं में अलख जगाने का जोरदार अभियान छेड़े हुए हैं। लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि विधायक आचार्य किसी अन्य धर्म और जाति के लोगों का कल्याण और विकास नहीं चाहते। उनकी ख्वाहिश है कि भारत में रहने वाला हर व्यक्ति भारत माता की रक्षा और भारत माता की सेवा के लिए तन मन धन से समर्पित रहे। लेकिन अगर कोई गलत इरादे और गलत भावनाओं से भारत में राष्ट्रीय एकता और अखंडता को खतरा पहुंचाने का कार्य करे, यह बाबा को बिल्कुल भी मंजूर नहीं। इसीलिए बाबा जयपुर शहर और जयपुर जिले में कई जगहों पर बड़ी-बड़ी बस्तियां बनाकर बांग्लादेश से आकर रह रहे लोगों को राजस्थानी नहीं, बल्कि भारत से बाहर करने की पुरजोर मांग कर रहे हैं। इसके लिए बाकायदा विधायक बालमुकुंद आचार्य अपने निर्वाचन क्षेत्र में भी घूम फिर कर गलत भावना और गलत इरादे से अवैध रूप से रह रहे लोगों की पहचान करने के लिए कई बार खुद मौके पर पहुंचे हैं, जिस पर विपक्ष के नेताओं ने सवाल भी खड़े किए। लेकिन आचार्य का जोश हाई है और तूफान की तरह अपने विजन और संकल्प को पूरा करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। रास्ते में चाहे कोई कितनी ही रुकावट और मुश्किलें खड़ी करे, बाबा रुकने वाले नहीं।

बालमुकुंद आचार्य के भाजपा में शामिल होने के पीछे क्या है गहरा राज

वर्ष 2023 के विधानसभा चुनाव से पहले यह किसी को भी उम्मीद नहीं थी कि बालमुकुंद आचार्य राजनीति के अखाड़े में उतरने वाले हैं। शायद आचार्य भी यह नहीं जानते थे कि भाजपा उन्हें चुनाव मैदान में उतार सकती है। हालांकि हाथोज धाम का राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश के मंदिरों और पवित्र स्थलों में बड़ा नाम है। इस मंदिर में भारतीय जनता पार्टी के बड़े-बड़े नेता ही नहीं, बल्कि कांग्रेस और अन्य राजनीतिक दलों के नेता भी दर्शन के लिए कई सालों से आते रहे हैं। यहां व्यापारी, कारोबारी, समाजसेवी और विभिन्न क्षेत्र से जुड़े लोगों का मंदिर में आना जाना लगा रहता है। इसलिए हाथोज धाम का संत और पुजारी होने के नाते राजनेताओं से आचार्य की अच्छी जान पहचान और मुलाकात थी। लेकिन यह मुलाकात उन्हें राजनीति के अखाड़े में भेज देगी, इसका अंदाजा खुद आचार्य को भी नहीं था। हां इतना जरूर था कि पिछले विधानसभा चुनाव से डेढ़ 2 साल पहले बालमुकुंद आचार्य जयपुर के चार दिवारी क्षेत्र में बड़े पैमाने पर तोड़े गए मंदिरों और कई अल्पसंख्यक इलाकों में मंदिरों की जमीन पर किए गए अतिक्रमण से काफी गुस्से में थे। और खुद जयपुर के चार दिवारी इलाके में उन जगहों पर जहां पर मंदिरों को तोड़ा गया, वहां वे निडर होकर गए, मीडिया को भी बुलाया, मीडिया को ही बताया और मंदिरों की हालत का वीडियो बनाकर उसे सोशल मीडिया पर अपलोड करके जयपुर के लोगों को तो यह बताने का प्रयास किया ही कि यहां पर प्राचीन काल से मंदिर था, जिसकी अब यह हालत कर दी गई है। इसके अलावा उन्होंने प्रशासन, पुलिस, नगर निगम, जेडीए सभी विभागों को इसकी शिकायत भेजी और मंदिर की रक्षा के लिए व्यापक कदम उठाने का आग्रह किया। तत्कालीन गहलोत सरकार से जुड़े लोगों को और स्थानीय जनप्रतिनिधियों को भी वास्तविक हालातों की जानकारी दी। लेकिन तत्कालीन गहलोत सरकार की ओर से जब उनकी रिक्वेस्ट पर ध्यान नहीं दिया गया, तो उन्होंने सोशल मीडिया के माध्यम से जयपुर में हिंदुओं में जन जागृति अभियान का जोरदार तरीके से शुभारंभ किया। चुनाव से पहले अपने इन आंदोलनों और अभियानों की वजह से बालमुकुंद आचार्य जयपुर में काफी चर्चित हो गए। हालांकि लोग उन्हें अब से पहले प्रमुख संत के रूप में ही मानते थे, लेकिन जयपुर के लोग अब उन्हें उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ की तरह मानने लगे थे। आचार्य ने जयपुर के चार दिवारी क्षेत्र में सनातन धर्म की रक्षा, हिंदू और हिंदुत्व की रक्षा तथा गौ माता की सेवा के लिए सामाजिक संगठनों से जुड़े लोगों, व्यापार संगठन से जुड़े लोगों और विभिन्न जातियों और बिरादरी के संगठन से जुड़े लोगों से सतत संवाद करके उन्हें सनातन धर्म की रक्षा के लिए सामूहिक रूप से एक होने का आग्रह किया, जिसमें आचार्य को सफलता भी मिली। विधानसभा चुनाव से 6 महीने पहले ही बालमुकुंद आचार्य ने जयपुर के चार दिवारी क्षेत्र में खुद को तूफानी बाबा के रूप में मशहूर कर लिया था। इनकी कार्यशाली और गतिविधियों पर प्रदेश भाजपा से जुड़े बड़े नेताओं की ही निगाह नहीं थी, बल्कि दिल्ली में बैठे भाजपा के बड़े नेताओं की निगाह भी आचार्य पर टिकी हुई थी। प्रदेश भाजपा और केंद्र में बैठे भाजपा के रणनीतिकारों को जयपुर की हवा महल विधानसभा सीट पर एक मजबूत उम्मीदवार की तलाश थी, क्योंकि उस समय पिछली गहलोत सरकार के कैबिनेट मंत्री महेश जोशी इसी विधानसभा क्षेत्र से विधायक थे। जोशी जयपुर के पूर्व में सांसद भी रह चुके थे और किशनपोल विधानसभा क्षेत्र से विधायक भी रह चुके थे। इसलिए जोशी जयपुर की राजनीति के उस समय सबसे बड़ा चेहरा और लोकप्रिय नेता थे, और हवा महल विधानसभा क्षेत्र में उन्होंने मुस्लिम समुदाय के लोगों के बीच जोरदार पकड़ बना ली थी। इस निर्वाचन क्षेत्र में बड़ी संख्या में मुस्लिम मतदाताओं की संख्या है, इसलिए भाजपा के रणनीतिकार यह जानते थे कि इस सीट पर कांग्रेस को हराने के लिए दमदार नेता चाहिए जो हिंदू वोटों का ध्रुवीकरण कर सके और जो परंपरागत कांग्रेस के हिंदू मतदाताओं के वोट हासिल कर सके। इसमें उन्हें बालमुकुंद आचार्य बिल्कुल फिट नजर आए, क्योंकि आचार्य उस समय प्रिंट मीडिया, इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया में शहर के परकोटे क्षेत्र में मंदिरों की सुरक्षा के मामले को लेकर जोरदार तरीके से सुर्खियों में बने हुए थे। इसलिए प्रदेश भाजपा के तत्कालीन प्रभारी अरुण सिंह भी आचार्य को चुनाव लड़वाने के पक्ष में थे। भाजपा यह भी जानती थी कि आचार्य को भाजपा में जॉइनिंग करवा के जयपुर के अन्य विधानसभा सीटों और जयपुर जिले की अन्य सीटों पर भी हिंदू वोटों का ध्रुवीकरण करने में फायदा मिलेगा। इसलिए काफी सोच विचार और मंथन करने के बाद बाल मुकुंद आचार्य को चुनाव से पहले भाजपा में जॉइनिंग करवाई गई, और फिर उन्हें हवा महल विधानसभा सीट से टिकट भी दिया गया, जिसमें उन्हें सफलता भी मिली।

जैसा योगी आदित्यनाथ का स्टाइल वैसा ही बालमुकुंद आचार्य का स्टाइल

जानकार लोगों का कहना है कि शुरू-शुरू में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को भी राजनीति में खुद को साबित करने के लिए काफी संघर्ष करना पड़ा था। समाजवादी पार्टी के नेताओं ने सार्वजनिक मंच, यहां तक की संसद में भी कई बार योगी आदित्यनाथ की हंसी उड़ाई, उपहास किया, उनके साथ बदतमीजी और गुंडागर्दी भी की गई। लेकिन योगी आदित्यनाथ डटकर मुकाबला करते रहे। लेकिन आज योगी आदित्यनाथ का स्टाइल पूरे देश में चर्चा का विषय बना हुआ है। उत्तर प्रदेश में बड़े-बड़े बदमाशों को या तो एनकाउंटर में मार दिया गया है, या फिर बड़े-बड़े बदमाश जेल की सलाखों के पीछे हैं। बड़े-बड़े राजनेता जो भ्रष्टाचार करके करोड़पति बन गए, उन सबको जेल भेज दिया। आज योगी आदित्यनाथ उत्तर प्रदेश भाजपा के ही नहीं, बल्कि उनकी गिनती राष्ट्रीय भाजपा के लोकप्रिय बड़े नेताओं में होती है। हालांकि बाल मुकुंद आचार्य का पॉलीटिकल करियर आगे किस रफ्तार से बढ़ेगा यह तो आने वाला समय बताएगा, लेकिन पिछले 2 साल में उन्होंने जिस तरह से खुद को सनातन धर्म की रक्षा और प्रचार प्रसार, हिंदू और हिंदुत्व की रक्षा, राष्ट्रीय एकता अखंडता, गौ माता की रक्षा, गौशालाओं का विकास, अवैध रूप से रह रहे लोगों को राजस्थान और देश से बाहर भेजने के प्रयास जैसे कार्यों में खुद को पूरी तरह से समर्पित रखा है, और निडर होकर बिना किसी पुलिस के सहायता के अपनी जान को खतरे में डालकर संवेदनशील इलाकों में अवैध और अनैतिक गतिविधियों का पुरजोर विरोध करके उन पर अंकुश लगवा रहे हैं। सड़कों पर लड़ाई लड़ने के अलावा राजस्थान विधानसभा में भी सनातन धर्म की रक्षा, हिंदू और हिंदुत्व तथा गौ माता की रक्षा के लिए और असामाजिक तत्वों के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए प्रभावी भाषण देकर अपनी बात मनवाने में कामयाब हो रहे हैं। उससे लोगों में चर्चा होने लगी है कि बाल मुकुंद आचार्य अब योगी आदित्यनाथ के रंग में रंगे नजर आ रहे हैं।

बदन पर भगवा वस्त्र और हाथों में गदा लिए जयपुर की सड़कों पर निकल पड़े बालमुकुंद आचार्य

विधायक चुने जाने के बाद भी बालमुकुंद आचार्य हमेशा हर जगह अपनी परंपरागत वेशभूषा में नजर आते हैं। उनके शरीर पर भगवा वस्त्र, हाथ में हनुमान जी की गदा, माथे पर चंदन का तिलक और पहले की तरह ही सिर के बड़े-बड़े बाल और उनका तेजस्वी चेहरा उनकी पर्सनैलिटी में चार चांद लगाए हुए हैं। विधायक चुने जाने के दूसरे दिन ही अपनी परंपरागत वेशभूषा और स्टाइल में आचार्य अपने निर्वाचन क्षेत्र की सड़कों पर अवैध मांस और शराब की दुकानों को बंद करने के लिए निकल पड़े थे। उनका रूद्र रूप देखकर जयपुर के चार दिवारी पर आसपास के इलाके में रोड पर खुले में मांस और शराब का कारोबार करने वाले लोगों ने अपने प्रतिष्ठान खुद ही बंद कर दिए थे। उनका यह सिलसिला अब भी बना हुआ है और वह लगातार अपने निर्वाचन क्षेत्र के अलावा जयपुर के अन्य निर्वाचन क्षेत्र में भी खुले में मांस और शराब की दुकानों का पुरजोर विरोध करके उन्हें बंद करवाने में सफल रहे। अन्यथा जयपुर में पहले भी भाजपा और कांग्रेस पार्टी की सरकारें रही हैं, जयपुर के परकोटे और कई इलाकों में कई सालों से रोड पर ही बड़ी-बड़ी अवैध मांस और शराब की दुकान संचालित हो रही थीं, जिनके खिलाफ कार्रवाई करने में नगर निगम प्रशासन और पुलिस हमेशा बैकफुट पर नजर आए। लेकिन बाल मुकुंद आचार्य ने प्रभावी तौर पर जोरदार तरीके से अवैध धंधों का जोरदार विरोध किया, जिसके बाद नगर निगम, पुलिस और प्रशासन के अधिकारियों को मौके पर जाकर कार्रवाई करनी पड़ी। अब भी आचार्य नियमित रूप से अपने निर्वाचन क्षेत्र के हर इलाके में जाकर वस्तु स्थिति का जायजा लेते हैं, हर जाति और धर्म के लोगों के साथ बैठकर बातचीत करते हैं, संवाद करते हैं, उनकी समस्याओं को पूछ कर उनका समाधान भी करवाते हैं। लेकिन अवैध मांस और अवैध शराब की दुकानों को लेकर उनके दिल में बिल्कुल भी रहम नहीं है। वह कहते हैं कोई भी धंधा हो उसे नियम और कायदों के मुताबिक संचालित करना चाहिए, गैर कानूनी कार्य उन्हें बर्दाश्त नहीं। इसीलिए विपक्ष के नेता उन पर यह आरोप लगाते हैं कि वह सांप्रदायिक हैं, लेकिन बाल मुकुंद आचार्य कहते हैं कि मुस्लिम समुदाय में भी बड़ी संख्या में उनके समर्थक हैं जो उन्हें प्यार और सम्मान करते हैं। बालमुकुंद आचार्य कहते हैं कि वह अपने क्षेत्र के जनप्रतिनिधि हैं और अकेले हिंदू मतदाताओं के दम पर उन्होंने चुनाव नहीं जीता है, बल्कि मुस्लिम भाइयों ने भी उन्हें वोट किया है। इसलिए सबके हितों की रक्षा करना उनका कर्तव्य है, लेकिन जो देश के साथ गद्दारी करेगा वे उन्हें पसंद नहीं।

विधानसभा के विभिन्न सत्रों में आचार्य के ओजस्वी भाषण हमेशा सुर्खियों में रहे

पिछले करीब 2 साल में राजस्थान विधानसभा के विभिन्न सत्र में बाल मुकुंद आचार्य साधु संत की अपनी परंपरागत वेशभूषा में सदन में नजर आए। सदन की चौखट पर पहला कदम रखने से पहले उन्होंने हमेशा सदन की सीढ़ी पर नारियल फोड़ा, 'सीताराम' और 'जय हनुमान' के नारे लगाए, नारियल का प्रसाद वहां मौजूद पत्रकारों को खिलाया। इस दौरान उनके हाथ में हनुमान जी की गदा भी कई बार नजर आई। सदन के विभिन्न सत्रों में उन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं और विकास कार्यों के मुद्दे तो प्रभावी तरीके से अपने ओजस्वी भाषण के माध्यम से उठाए ही, इसके अलावा इन्होंने अपने निर्वाचन क्षेत्र के साथ-साथ जयपुर में कई जगहों पर स्थित महिला स्कूल और महिला कॉलेज के बाहर मनचले लोगों और असामाजिक तत्वों की ओर से छात्रों को परेशान करने के मामले में महिला कॉलेज और स्कूल के बाहर सीसीटीवी कैमरे लगाकर सुरक्षा के कड़े प्रबंध करने का मामला भी उठाया। इसके अलावा परीक्षा के दिनों में मस्जिदों में बजने वाले अजान की आवाज को कम करने की डिमांड भी कई बार कर चुके हैं। आचार्य का कहना है कि बहुत तेज आवाज में सुबह-सुबह अजान बजाने से ध्वनि प्रदूषण की वजह से सुबह-सुबह परीक्षा की तैयारी कर रहे छात्र-छात्राओं को काफी परेशानी का सामना करना पड़ता है, क्योंकि सुबह-सुबह बहुत से छात्र स्वच्छ और अच्छे माहौल में पढ़ाई करना ज्यादा पसंद करते हैं। ऐसे में काफी देर तक मस्जिद में तेज आवाज से बजने वाले अजान से छात्रों की पढ़ाई डिस्टर्ब होती है। इसलिए इस दिशा में भी कोई अच्छा रास्ता निकालने की बात आचार्य ने कई बार सदन में भी कही है, तो कई बार उन्होंने प्रशासन, पुलिस का ध्यान भी इस मुद्दे पर आकर्षित किया है। अपने निर्वाचन क्षेत्र की समस्याओं को लेकर भी आचार्य हमेशा गंभीर और अलर्ट मोड पर नजर आए। नगर निगम, जेडीए, राजस्थान आवासन मंडल, पुलिस, बिजली, सड़क, पानी, चिकित्सा इत्यादि सभी विभागों से जुड़ी समस्याओं के समाधान के लिए सतत रूप से प्रयास करते हुए नजर आए हैं। हवा महल विधानसभा क्षेत्र के निर्वाचन क्षेत्र में बड़ी संख्या में मुस्लिम बस्तियां भी हैं, इसलिए इन बस्तियों में पानी, बिजली, सड़क, शिक्षा, चिकित्सा जैसी आधारभूत सुविधाओं को संपादित करवाने में आचार्य ने अपनी ओर से कोई कसर बाकी नहीं छोड़ी है। इसीलिए मुस्लिम समाज के लोग बड़ी संख्या में आचार्य के फैन हैं। यह बात अलग है कि विपक्ष के नेता इन पर सांप्रदायिकता फैलाने का आरोप लगाते रहे हैं, लेकिन हकीकत यह भी है कि आचार्य के जन्मदिन पर हमेशा हर साल हवा महल विधानसभा क्षेत्र में जितने हिंदुओं ने आचार्य को शुभकामना देने वाले होर्डिंग और पोस्टर स्थापित नहीं किए, उससे कहीं ज्यादा होर्डिंग मुस्लिम समाज के नेताओं और लोगों ने आचार्य के जन्मदिन पर अपने क्षेत्र में जगह-जगह स्थापित किए, जो यह दिखाता है कि मुस्लिम समाज के लोग भी बड़ी संख्या में आचार्य के साथ खड़े हुए हैं।

घुसपैठियों और अवैध रूप से गलत इरादे से रह रहे लोगों के खिलाफ आचार्य ने छेड़ रखा है बड़ा अभियान

हालांकि प्रदेश की भजनलाल सरकार राजधानी जयपुर में ही नहीं, बल्कि पूरे प्रदेश में अवैध रूप से रह रहे लोगों, अवैध बांग्लादेशियों को राजस्थान और देश की सीमा से बाहर भेजने की प्रक्रिया पर जोर-शोर से कार्य कर रही है। इस कार्य में भाजपा विधायक बालमुकुंद आचार्य सरकार, पुलिस और प्रशासन का पूरा सहयोग कर रहे हैं। आचार्य नियमित रूप से अपने निर्वाचन क्षेत्र में घूम फिर कर उन लोगों को अपने स्तर पर चिन्हित करने का प्रयास कर रहे हैं जो सालों से यहां गलत नियत और गलत इरादे से रहकर देश के साथ गद्दारी करने की फिराक में हैं। इस तरह के लोगों को चिन्हित करने के लिए आचार्य खुद अपने निर्वाचन क्षेत्र के अलावा जयपुर के उन क्षेत्रों में भी दौरा करते रहते हैं जहां पर उन्हें गलत लोगों के रहने की शिकायत और जानकारी मिलती है। इसके लिए आचार्य कई बार मौके पर भी गए हैं और उन्होंने खुद ऐसे गलत लोगों की जांच पड़ताल के लिए उनके दस्तावेजों की जांच पड़ताल की है। जिसमें कई जगहों पर उन्हें यह भी पता चला कि वोट बैंक की राजनीति के चलते देश की सीमा से बाहर और अलग राज्यों से आए अपराधिक प्रवृत्ति के लोगों के भी यहां पर पहचान पत्र बना दिए गए, जिसके आधार पर उन्होंने कई अन्य सरकारी कागजात बनाकर सरकारी योजनाओं का फायदा भी उठा रहे हैं। गलत इरादे और देश से गद्दारी करने के इरादे से पहचान पत्र और अन्य सरकारी कागजात बनाने वाले ऐसे लोगों को आचार्य ने मौके पर जाकर पकड़ा है, उन्हें चिन्हित किया है। एक समय ऐसा था जब जयपुर में कई इलाकों में बांग्लादेश से आए लोगों की बड़ी-बड़ी बस्तियां यहीं के राजनेताओं ने स्थापित करवा दीं, और उनके सभी सरकारी दस्तावेज बनाकर उन्हें भारत का नागरिक भी बना दिया, जो बाद में जयपुर में ही अपराधी गतिविधियों में पकड़े भी गए। इसलिए जयपुर में घुसपैठ की समस्या कई सालों से बनी हुई है, लेकिन पिछले 2 साल में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने अवैध रूप से रह रहे लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की है। लोगों को चिन्हित करके उन्हें वापस उनके देश भेजने की योजना पर भी सरकार कार्य कर रही है, क्योंकि वर्तमान में राजस्थान भाजपा बालमुकुंद आचार्य जैसे राष्ट्र प्रेम रखने वाले नेताओं के रंग में रंगी नजर आ रही है। हालांकि देश की आजादी के बाद से ही भाजपा हिंदू, हिंदुत्व, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, सनातन धर्म को सर्वोपरि मानती है, लेकिन नरेंद्र मोदी के देश का प्रधानमंत्री बनने के बाद से पूरे देश में सनातन धर्म, हिंदू और हिंदुत्व तथा राष्ट्रीय एकता और अखंडता को लेकर एक व्यापक जागरण अभियान चल रहा है। और इस अभियान में भारतीय जनता पार्टी में शामिल साधु संत जनप्रतिनिधि अपनी अग्रणी भूमिका निभा रहे हैं। उससे अब कहीं ना कहीं राजस्थान ही नहीं, बल्कि उन प्रदेशों जहां भारतीय जनता पार्टी की सरकार है, वहां पर दूसरे देश से गलत इरादे से चोरी चुपके और सुनियोजित षड्यंत्र के तहत आए लोगों को हर हाल में देश की सीमा से बाहर भेजने का कार्य प्रगति पर है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा से हैं बहुत ही अच्छे पॉलिटिकल रिश्ते, कई जगहों पर भजन लाल शर्मा की जमकर की है प्रशंसा

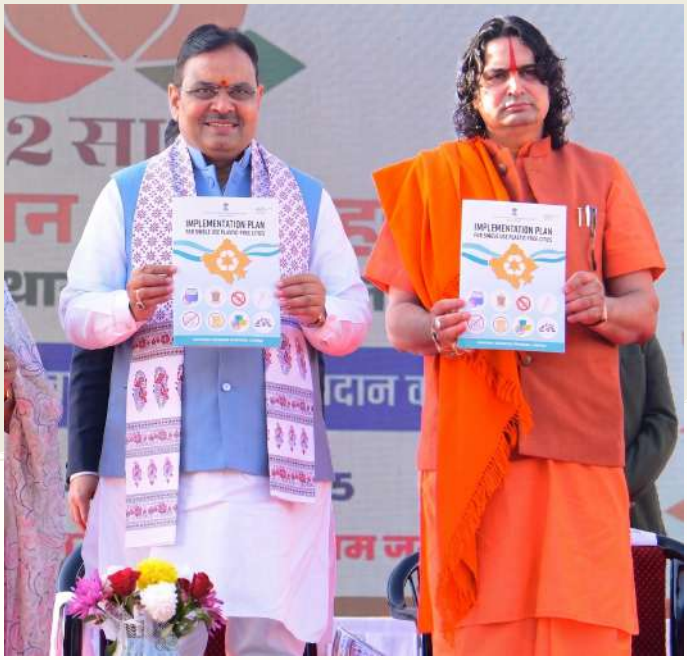

विधायक बनने से पहले मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा बालमुकुंद आचार्य का एक प्रमुख संत के रूप में आदर और सम्मान करते थे। आचार्य अखिल भारतीय संत समिति राजस्थान के प्रमुख हैं और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा साधु और संत का हमेशा आदर भाव से सम्मान करते हैं। मुख्यमंत्री शर्मा काफी धार्मिक प्रवृत्ति के हैं और उनकी दैनिक दिनचर्या में पूजा पाठ, साधु संत की सेवा और गौ माता की सेवा अहम हिस्सा रही है। इसलिए आचार्य के विधायक बनने से पहले और भजनलाल शर्मा के मुख्यमंत्री बनने से पहले से ही यह दोनों दिग्गज हस्तियां एक दूसरे से दिल और आत्मा से जुड़ी हुई थीं। अब जब आचार्य विधायक चुन लिए गए और भजनलाल शर्मा मुख्यमंत्री बन गए, तो इन दोनों के बीच आपस का रिश्ता और गहरा, मजबूत हुआ है। दोनों एक ही पार्टी में हैं, बड़े पदों पर हैं, इसलिए दोनों के बीच जल्दी-जल्दी मुलाकातें होना भी लाजमी है। दोनों ही सनातन धर्म, हिंदू, हिंदुत्व, राष्ट्रीय एकता, अखंडता, सामाजिक समानता, सामाजिक न्याय, गौ माता की रक्षा और संरक्षण तथा प्रदेश और देश के सर्वांगीण विकास को सामने रखते हुए समाज में अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति तक सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाने की दिशा में समर्पित भाव से कार्य कर रहे हैं। दोनों ही के विचार काफी मिलते जुलते हैं। दोनों ही सादा जीवन उच्च विचार की परिकल्पना के आधार पर जीवन जी रहे हैं। ऐसे में मुख्यमंत्री शर्मा और विधायक आचार्य के बीच पिछले 2 साल में पॉलिटिकल रिश्ते इतने मजबूत बन गए हैं कि विधायक आचार्य हर जगह मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की प्रशंसा करते नजर आ रहे हैं। मुख्यमंत्री शर्मा भी विधायक के तौर पर बालमुकुंद आचार्य को काफी पसंद करते हैं। आचार्य निडर होकर सनातन धर्म और हिंदुत्व का झंडा लहराकर विपक्ष को कड़ी चुनौती दे रहे हैं और अपने निर्वाचन क्षेत्र के हर जातियों और बिरादरी के लोगों के कल्याण और विकास के लिए समान भाव से कार्य कर रहे हैं, उसको देखकर मुख्यमंत्री शर्मा भी उनसे काफी प्रभावित हैं।

जयपुर में हिंदुओं के पलायन को रोकने में आचार्य की भूमिका रही

राजधानी जयपुर के कई इलाकों में हिंदुओं के पलायन किए जाने की खबरें पिछले कुछ सालों से मीडिया की सुर्खियों में रही। जयपुर के चार दिवारी क्षेत्र और बाहरी इलाकों में अल्पसंख्यक बहुल इलाकों में हिंदुओं के परेशान होकर उनके पलायन करने से हिंदू संगठन भी काफी गुस्से में थे। कई हिंदुओं के बहुत ही कम दाम में अपनी प्रॉपर्टी मजबूरी में बेचकर जाने के मामले भी चर्चा में रहे। हालांकि हिंदू अपनी मर्जी से प्रॉपर्टी बेचकर पलायन कर रहे थे, लेकिन हिंदू संगठनों से जुड़े लोग हिंदुओं के इस पलायन को ठीक नहीं मान रहे थे। बालमुकुंद आचार्य ने भी इस तरह की घटना को काफी सीरियसली लिया। विधायक नहीं बनने से पहले भी आचार्य यह बिल्कुल नहीं चाहते थे कि हिंदू डर कर अल्पसंख्यक बहुल इलाके से अपना घर छोड़ें। इसीलिए हिंदुओं में जन जागृति पैदा करने, हिंदुओं में जोश पैदा करने और सनातन धर्म की रक्षा तथा हिंदुत्व के प्रचार प्रसार के लिए आचार्य ने जयपुर में विभिन्न सामाजिक संगठनों, व्यापारिक संगठनों, बजरंग दल से जुड़े लोगों, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ और विश्व हिंदू परिषद से जुड़े लोगों से सतत रूप से संवाद करके जयपुर के चार दिवारी क्षेत्र में ही नहीं, बल्कि जयपुर के बाहरी इलाकों में भी हिंदुओं में एकता का भाव पैदा करने में आचार्य ने बड़ी भूमिका निभाई। जो हिंदू पहले अल्पसंख्यक बहुल इलाकों से मजबूरी में अपना घर कम दाम में बेचकर पलायन कर रहे थे, उन्हें उनके घर जाकर भरोसा दिलाया कि उनकी रक्षा की जाएगी, उन्हें किसी भी तरह से परेशान नहीं होने दिया जाएगा। इसके लिए पुलिस और प्रशासन से जुड़े अधिकारियों को भी ऐसे परिवारों की रक्षा करने के लिए निर्देशित किया गया। इसी का परिणाम रहा कि पिछले 2 साल में जयपुर में अल्पसंख्यक बहुल इलाकों से हिंदुओं के पलायन का सिलसिला रुक गया है। इस कार्य में भाजपा विधायक आचार्य की बड़ी भूमिका रही है। भाजपा विधायक आचार्य प्रत्येक हिंदू परिवार को गाय पालने और गाय की रक्षा करने का संकल्प भी दिलवा रहे हैं। इसके अलावा अपने स्तर पर भी गायों की सुरक्षा और संरक्षण के लिए तथा उनके खाने-पीने के लिए आचार्य नियमित रूप से प्रबंध करते रहते हैं। उनके हाथोज धाम मंदिर के तहत भी गौशालाओं का संचालन किया जा रहा है, जिसमें बड़ी संख्या में गाय मौजूद हैं।

मुख्यमंत्री भजनलाल ने जयपुर के लोगों को दिया बेहतरीन शुभ "संदेश"

1. वर्ष 2011 में सिर्फ 25 साल की आयु में ही आईएएस अफसर बनने वाले संदेश नायक एक ईमानदार, कर्मठ, दबंगई, त्वरित निर्णय क्षमता और फाइलों की बजाय जमिनी तौर पर प्रभावी तरीके से काम करने जैसे गुणों के मालिक माने जाते हैं। सीकर, भरतपुर, चुरू जैसे संवेदनशील जिलों के कलेक्टर पद पर रहते हुए कानून व्यवस्था के साथ-साथ अपराध जगत से जुड़े लोगों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करवा कर लोगों के दिलों में बनाया एक अलग मुकाम। करीब 15 साल की अब तक की सर्विस में अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से प्रदेश सरकारों को किया खूब प्रभावित। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन और संकल्प को खुद दिल की गहराइयों से करते हैं महसूस।

2. राजधानी जयपुर की चुनौतियों और समस्याओं से पहले से ही अच्छी तरह से है वाकिफ। पिछले कलेक्टर जितेंद्र कुमार सोनी के प्रयासों को आगे बढ़ाने के साथ-साथ राजधानी जयपुर के लिए विशेष प्लानिंग के साथ आए हैं संदेश नायक

जयपुर। यूं तो मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा प्रदेश के सभी जिलों के समुचित और समान विकास के लिए निरंतर सतत प्रयास कर रहे हैं, लेकिन अभी हाल ही में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने जयपुर के लोगों को एक ऐसा बेहतरीन शुभ 'संदेश' दिया है जिससे लोगों की उम्मीद और सपनों को पंख से लग गए हैं। उन्हें ऐसा लगने लगा है कि जिले में अब हर घर में शुभ और मंगल 'संदेश' ही निरंतर सुनने को मिलते रहेंगे, क्योंकि इसके दो कारण बताए गए हैं। एक, जयपुर के नए कलेक्टर संदेश नायक के नाम में ही बहुत बड़ा भावार्थ छुपा हुआ है। संदेश के साथ जो नायक शब्द जुड़ा हुआ है, वह अपने आप में इनके नाम की गरिमा और जिम्मेदारी को और बढ़ा देता है। शायद अपने नाम के इस भावार्थ को संदेश नायक शुरू से ही समझते थे। जब उन्होंने भारतीय प्रशासनिक सेवा सर्विस की शपथ ली, उस समय ही इन्होंने यह संकल्प ले लिया था कि माता-पिता ने उन्हें जो नाम दिया है उसके भावार्थ को साकार करेंगे। यही वजह रही कि अब तक की पिछले 15 साल की सर्विस में संदेश नायक को प्रदेश भर में अलग-अलग जगह पर बड़ी-बड़ी जिम्मेदारी दी गई, जिसमें भरतपुर, सीकर और सिरोही जैसे संवेदनशील जिलों के कलेक्टर भी बने। जयपुर स्मार्ट सिटी परियोजना के प्रबंध निदेशक बनाए गए, खान और विज्ञान विभाग के निदेशक तथा कॉलेज शिक्षा के निदेशक भी बनाए गए, और भी कई बड़ी-बड़ी जिम्मेदारियां इन्हें दी गई। इन सब जिम्मेदारियां को इन्होंने बहुत ही शानदार और उत्कृष्ट तरीके से निभाया। इसीलिए आज संदेश नायक को कर्मठ, इमानदार, मेहनती, त्वरित निर्णय लेने की क्षमता और फाइलों की बजाय जमीनी तौर पर प्रभावी रूप से कार्य करने वाले युवा जांबाज आईएएस अफसर के रूप में जाना जाता है। संदेश नायक एक ऐसे ऑफिसर माने जाते हैं जो कानून और शांति व्यवस्था को बनाए रखने के साथ-साथ अपराध जगत से जुड़े लोगों के खिलाफ भी प्रभावी कार्रवाई करवाने में हमेशा आगे रहते हैं। ऐसा इन्होंने चूरू, भरतपुर और सिरोही जिले में कलेक्टर पद पर रहने के दौरान करके भी दिखाया है, जहां बड़े-बड़े संगठित अपराध ग्रुप से जुड़े बदमाशों की धरपकड़ के लिए जिला पुलिस के साथ लगातार काम करते हुए दिखे। इसलिए अब जयपुर जिले की जनता को भी ऐसा लगता है कि पिछले कलेक्टर जितेंद्र कुमार सोनी जो अच्छे अधूरे काम छोड़ कर गए हैं, उन कामों को तो तेजी से आगे लेकर जाएंगे ही, इसके अलावा अपने नवाचार और नवीन प्रयोगों के माध्यम से जयपुर जिले में ब्यूरोक्रेसी की एक ऐसी मिसाल और व्यवस्था कायम करेंगे जो अंतिम छोर पर बैठे ग्रामीण और मजदूर के परिवार के आंगन में भी शुभ 'संदेश' की किरण पहुंचाएगी।

पिछले कलेक्टर जितेंद्र कुमार सोनी के अधूरे कामों को पूरा करना भी है जरूरी

जयपुर जिला कलेक्टर के रूप में पिछले कलेक्टर जितेंद्र कुमार सोनी का कार्यकाल भी काफी अच्छा माना जाता है। सोनी को अब संदेश नायक की जगह मुख्यमंत्री के विशेष सचिव के रूप में नियुक्ति दी गई है, इसलिए जयपुर के नए कलेक्टर संदेश नायक के लिए उन अधूरे कामों को भी पूरा करना जरूरी हो गया है जो कार्य सोनी छोड़कर गए हैं। सोनी ने जिले भर में सैकड़ो की संख्या में रास्ता विवाद का निपटारा करके ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को काफी राहत पहुंचाई थी, इसलिए इस विषय पर संदेश नायक को अब और तेजी गति से कार्य करने की जरूरत है। हालांकि इसमें कोई दो राय नहीं, संदेश नायक काफी सख्त और दबंग अधिकारी तो है ही, इसके अलावा तुरंत निर्णय लेने में भी विलंब नहीं करते। इसलिए जिले भर में रास्ता विवाद को लेकर कई जगहों पर टकराव के हालात बने हुए हैं। इन विवादों को सुलझाने में कुशल प्रशासक के रूप में सोनी ने जो भूमि का निभाई, उस तरह की भूमिका संदेश नायक को निभानी होगी। हालांकि संदेश नायक पूर्व में कई जिलों के कलेक्टर रह चुके हैं, इसलिए इस तरह के मामलों को सुलझाने में वे पहले से ही काफी निपुण है। इसलिए जयपुर जिले में आने वाले दिनों में यह तय है कि कहीं पर भी रास्ता विवाद जैसा कोई विषय सामने नहीं आएगा, क्योंकि सोनी के बाद अब संदेश इस विवाद को सुलझाने के लिए पूरी तरह से अटल और तैयार खड़े हैं। इसके अलावा केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की ओर से विभिन्न तरह की जनकल्याणकारी योजनाओं के सफल क्रियान्वयन के कार्य को तेजी से आगे बढ़ना और अंतिम पायदान पर बैठे व्यक्ति को सरकार की योजनाओं का लाभ पहुंचाना, यह बहुत बड़ी जिम्मेदारी संदेश नायक के कंधों पर है। क्योंकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा दोनों का एक ही संकल्प और विजन है, अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति का भला करना और अंतिम छोर पर बैठे व्यक्ति तक सरकार की योजना पहुंचाना। इसके लिए इन योजनाओं के क्रियान्वयन की मॉनिटरिंग की जिम्मेदारी जिला कलेक्टर की ही होती है। इसके अलावा ग्राम पंचायत, आंगनबाड़ी केंद्रों, जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर नगर निगम, नगर पालिका इत्यादि से जुड़े कार्यों की प्रभावी तौर पर मॉनिटरिंग, विभिन्न विभागों और संस्थाओं से नियमित रूप से बेहतर समन्वय और तालमेल बनाते हुए लोगों की समस्याओं का ज्यादा से ज्यादा निवारण करना, इन सब बड़े कार्यो के संपादन और चुनौतियों के समाधान के लिए संदेश नायक बिल्कुल परफेक्ट ऑफिसर के रूप में दिख रहे हैं। क्योंकि कलेक्टर के रूप में इन्होंने कई जिलों में उत्कृष्ट कार्य किया है, इसलिए भले ही जयपुर जिला आबादी और विस्तार की तुलना में काफी बड़ा हो और राजधानी होने के नाते यहां कई बड़ी-बड़ी समस्याएं और चुनौतियां जरूर हो, लेकिन इन सब समस्याओं का समाधान करने और चुनौतियों का मुकाबला करने में शारीरिक और मानसिक तौर पर संदेश नायक काफी मजबूत और दबंग अधिकारी दिख रहे हैं। इसलिए सभी को इनसे अच्छे प्रदर्शन की उम्मीद है।

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन और संकल्प को बारीकी से समझते भी हैं और महसूस भी करते हैं संदेश नायक

जयपुर जिला कलेक्टर पद पर नियुक्त होने से पहले संदेश नायक मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विशेष सचिव पद पर तैनात थे, इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विजन, संकल्प और सोच को वे अच्छी तरह से जानते हैं। मुख्यमंत्री के विशेष सचिव पद पर रहने के दौरान इन्होंने सरकार के लिए कई तरह की नीतियां बनाने में भी परिश्रम किया तथा विभिन्न विभागों के अधिकारियों और राज्य मंत्रिमंडल के सदस्यों के संपर्क में रहे और सरकार की नीति निर्माण, नीतिगत निर्णय जैसे कार्यों में संदेश नायक की विशेष भूमिका रही। इसलिए संदेश नायक मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के व्यक्तित्व, कार्य शैली से तो अच्छी तरह से वाकिफ हो ही गए, इसके अलावा सरकार की आकांक्ष और विजन को भी अच्छी तरह से समझते हैं। अब जिस तरह से मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने उन्हें जयपुर जैसे महत्वपूर्ण जिले की जिम्मेदारी दी है, तो इस जिम्मेदारी के देने के पीछे मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की क्या सोच और विजन है, इसको भी बिना बताए ही संदेश नायक समझ गए हैं। हालांकि भजन लाल शर्मा मुख्य रूप से भरतपुर जिले के नदबई तहसील के रहने वाले हैं और मुख्यमंत्री बनने से पिछले 25-30 साल से जयपुर के सांगानेर इलाके में ही घर बनाकर रह रहे थे, इसलिए राजधानी जयपुर की बड़ी-बड़ी चुनौतियों और बड़ी-बड़ी समस्याओं के बारे में भजनलाल शर्मा अच्छी तरह से जानते हैं। पिछले बरसात के सीजन में भी भजन लाल शर्मा ने जयपुर की सड़कों पर उतरकर जयपुर शहर के हालातो को अपनी आंखों से देखा और फिर मौके पर ही मौजूद नगर निगम, जयपुर विकास प्राधिकरण, राजस्थान आवासन मंडल और अन्य विभागों के संबंधित अधिकारियों को समस्याओं के निस्तारण के निर्देश भी दिए, जिसमें काफी कुछ सुधार भी हुआ। लेकिन अभी भी राजधानी जयपुर में कई बड़ी-बड़ी चुनौतियां और कई बड़ी-बड़ी समस्याएं है, जिन्हें दूर करने की बड़ी चुनौती अब संदेश नायक के कंधों पर आ गई है।

जनसुनवाई कार्यक्रमों को लेकर शुरू से ही गंभीर रहे हैं संदेश नायक

संदेश नायक के जिला कलेक्टर पद पर नियुक्त होने के बाद जयपुर जिला प्रशासन की ओर से संपादित किए जा रहे जनसुनवाई के कार्यक्रमों के प्रभावित तरीके से संपादित होने के प्रबल आसार दिख रहे हैं। क्योंकि विभिन्न जिलों में जिला कलेक्टर पद पर रहने के दौरान संदेश नायक ने लोगों की समस्याओं के निस्तारण के लिए बहुत ही शानदार तरीके से जनसुनवाई कार्यक्रमों का आयोजन किया था। इन जनसुनवाई कार्यक्रमों में संदेश नायक ने खुद उपस्थित होकर बड़े स्तर पर लोगों की समस्याओं को सुना और उनकी समस्या के निदान के लिए हर तरह से सरकारी स्तर पर प्रयास भी किया, जिसकी वजह से नायक की वर्किंग स्टाइल की लोगों ने खूब तारीफ भी की। संदेश नायक ने विभिन्न जिलों में जिला कलेक्टर रहने के दौरान गांव में रात्रि चौपाल का भी आयोजन किया और ग्रामीणों के साथ जाजम पर बैठकर इन्होंने ग्रामीणों की शिकायतों को सुना और उनके निदान के प्रयास किए और गांव में ही उन्होंने रात्रि विश्राम भी किया। इसलिए अपने प्रभावी जनसुनवाई कार्यक्रमों को लेकर संदेश नायक पहले से ही काफी पॉपुलर हैं। अब जयपुर में भी जनसुनवाई कार्यक्रमों को नई गति और नई दिशा आने वाले दिनों में मिल सकती है। भले ही संदेश नायक दबंग और कड़क मिजाज वाले अधिकारी माने जाते हो, लेकिन भोले भाले ग्रामीण लोगों से मुलाकात के दौरान संदेश नायक बिल्कुल सहज भाव में उनके साथ पेश आते हैं और उनकी बातों को और शिकायतों को ऐसे सुनते हैं जैसे वे उनके परिवार के सदस्य ही हो। इसलिए संदेश नायक के व्यवहार और कार्य शैली को देखकर भोला भाला अनपढ़ व्यक्ति भी बिना किसी डर और घबराहट के अपनी पीड़ा उन्हें बता देता है।

जयपुर में कई बड़े-बड़े प्रोजेक्ट, ओवर ब्रिज और पुलिया निर्माण को समय पर कंप्लीट करवाना है बड़ी जिम्मेदारी

राजधानी जयपुर में इस समय अनेक प्रोजेक्ट, ओवरब्रिज और पुलियाओं इत्यादि के निर्माण कार्य चल रहे हैं। इसके अलावा बजट में भी प्रदेश की भजनलाल सरकार ने जयपुर में वर्ल्ड क्लास व्यवसायिक संस्थानों और वर्ल्ड क्लास हॉस्पिटैलिटी संस्थाओं इत्यादि के निर्माण की घोषणा की है। इसलिए जो प्रोजेक्ट अभी निर्माणधीन है उन सभी प्रोजेक्ट का समय पर कंप्लीट होना और जो प्रोजेक्ट अब शुरू होने जा रहे हैं उनका निर्धारित अवधि में कंप्लीट हो जाना, इन सब कार्यों की जिम्मेदारी संदेश नायक के कंधों पर है। जानकारी के अनुसार वर्तमान में जयपुर में अलग-अलग इलाकों में दर्जन भर से ज्यादा बड़े-बड़े प्रोजेक्ट पर कार्य चल रहा है। इन सब का निर्माण कार्य समय पर पूरा हो और यह सब निर्माण कार्य गुणवत्ता के मामले में भी बिल्कुल परफेक्ट हो, इसलिए इन सब कार्यों पर कड़ी मॉनिटरिंग रखना अपने आप में संदेश नायक के लिए एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी है। इनमें कई निर्माण प्रोजेक्ट जयपुर विकास प्राधिकरण के तहत तो कई प्रोजेक्ट राजस्थान आवासन मंडल और कई प्रोजेक्ट जयपुर स्मार्ट सिटी परियोजना के तहत संपादित हो रहे हैं। इसलिए इन सभी संस्थाओं के साथ बेहतर तरीके से नियमित संवाद करके सभी कार्यों को निर्धारित अवधि में पूरा करने की दिशा में जयपुर कलेक्टर संदेश नायक को काफी कड़ी मेहनत करनी होगी।

खूबसूरत शहर जयपुर पर ना लगे कोई दाग, संदेश नायक को कुछ करना होगा खास

पूरी दुनिया में जयपुर शहर अपनी सुंदरता, अच्छी बसावट, अपनी मेहमाननवाजी, ऐतिहासिक किले और ऐतिहासिक पर्यटन स्थलों, अपने खान-पान, रहन-सहन, वेशभूषा, लोक संगीत, लोक नृत्य इत्यादि को लेकर काफी पॉपुलर है। इसीलिए यहां हर साल बड़ी संख्या में देसी और विदेशी पर्यटक घूमने आते हैं। पर्यटक ही नहीं देश और विदेश के बड़े-बड़े राजनेता, बड़े-बड़े उद्योगपति, बड़े-बड़े खिलाड़ी और विभिन्न क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय स्तर पर नाम कमा रहे विशिष्ट व्यक्ति जयपुर घूमने जरूर आते हैं। ऐसे में राजधानी जयपुर में अति विशिष्ट लोगों के भ्रमण का सिलसिला करीब करीब रोजाना ही देखने को मिलता है, जो जयपुर पुलिस और जिला प्रशासन के लिए रोजाना एक चुनौती बनी हुई है। इसलिए जयपुर शहर में प्रशासन और पुलिस की थोड़ी सी भी लापरवाही और शिथिलता की वजह से खूबसूरत शहर जयपुर शहर को कहीं दाग न लग जाए, इसके लिए नए कलेक्टर संदेश नायक को न केवल पर्यटकों और देश-विदेश से आने वाले विशिष्ट जनों की सुरक्षा प्रबंध पर कड़ी निगरानी रखने की जरूरत है, बल्कि विभिन्न पर्यटन स्थलों पर पर्यटकों को अच्छी से अच्छी सुविधा उपलब्ध हो, इसके लिए भी संबंधित विभागों के साथ जिला प्रशासन को समन्वय और तालमेल बनाते हुए उन्हें आवश्यक दिशा निर्देश देते रहना है। क्योंकि पिछले दोनों विदेशी पर्यटकों के साथ अभद्र व्यवहार होने जैसे वीडियो सोशल मीडिया पर खूब वायरल हुई जो जयपुर शहर की छवि के लिए ठीक नहीं कहे जा सकते। इस दिशा में कलेक्टर होने के नाते संदेश नायक को जयपुर पुलिस के साथ मिलकर कुछ इस तरह से नवाचार और नए प्रयोग करने होंगे जिससे जयपुर में रहने वाला और जयपुर में घूमने आने वाला हर व्यक्ति खुद को सुरक्षित और सहज महसूस कर सके।

सिर्फ 25 साल की आयु में ही बन गए थे आईएएस अधिकारी

संदेश नायक मुख्य रूप से कर्नाटक के रहने वाले हैं और बीटेक डिग्री धारी है। वर्ष 2010 में भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा में इनकी 129 रैंक थी। वर्ष 2011 में इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी के रूप में कार्य करने के लिए राजस्थान स्टेट दिया गया। इनका जन्म 1986 में हुआ था, इसलिए सिर्फ 25 साल की आयु में ही इन्हें भारतीय प्रशासनिक सेवा अधिकारी के रूप में कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। बीटेक के अलावा संदेश नायक कांट्रेक्चुअल डिस्प्यूट रेजोल्यूशन का डिप्लोमा भी लिए हुए हैं। इस डिप्लोमा से इन इनकी पर्सनालिटी में और भी चार चांद लगे। प्रदेश में वर्ष 2011 से लेकर अब तक प्रशासनिक अधिकारी के रूप में संदेश नायक ने खुद को एक उत्कृष्ट और प्रभावी अधिकारी के रूप में साबित किया। इसी वजह से प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस पार्टी की सरकारों के दौरान भी इन्हें काफी अच्छे महत्वपूर्ण विभाग और जिले काम करने के लिए दिए गए, जिनमें हर जगह पर और हर पद पर इन्होंने सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करके सरकारों को भी प्रभावित किया और आमजन में भी काफी लोकप्रिय साबित हुए। हालांकि संदेश नायक काफी तेज तर्रार और दबंग अधिकारी माने जाते हैं, लेकिन भरतपुर, सिरोही और चूरू जिला कलेक्टर पद पर रहने के दौरान इन्होंने अपने जनसुनवाई कार्यक्रमों से लोगों के दिलों में अलग मुकाम बनाया। आज भी भरतपुर, चूरू और सिरोही जिले के लोग और व्यापार जगत से जुड़े लोग इन्हें उनके अच्छे कार्यों और नवाचारों से याद करते हैं। भारतीय प्रशासनिक सेवा की सर्विस में शुरू में एसडीएम पद पर रहते हुए ही अपनी वर्किंग स्टाइल से सबको प्रभावित कर दिया था। संदेश नायक के लिए जयपुर कोई नया शहर नहीं है क्योंकि जयपुर में वर्ष 2016 में शहरी विकास विभाग में अवर सचिव पर इन्हें नियुक्ति दी गई। इसके अलावा जुलाई 2020 से अक्टूबर 2021 तक कॉलेज शिक्षा के निदेशक पद पर रहे, तथा वर्ष 2022 से अक्टूबर 2023 तक भूविज्ञान और खान विभाग में डायरेक्टर पद पर रहे, और अक्टूबर 2023 से जनवरी 2024 तक राजफेड़ के प्रबंध निदेशक भी रहे। बड़ी बात यह है कि जयपुर स्मार्ट सिटी परियोजना के प्रबंध निदेशक पद पर भी इन्हें नियुक्ति दी गई। इसलिए जयपुर के विकास को गति देने में संदेश नायक को कहीं भी किसी भी समस्या को समझने में और उसे दूर करने में दिक्कत नहीं आएगी, क्योंकि जयपुर की समस्याओं और चुनौतियों को संदेश नायक पहले से ही अच्छी तरह से जानते हैं। कुल मिलाकर वर्ष 2011 से लेकर अब तक संदेश नायक का राजस्थान में सर्विस रिकॉर्ड काफी बेमिसाल और शानदार रहा है। इसीलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने पहले खुद का मुख्य सचिव बनाया और फिर इन्हें जयपुर जैसे जिले की बड़ी जिम्मेदारी दी।

जयपुर के ट्रैफिक मैनेजमेंट को मजबूत करने और कानून व शांति व्यवस्था की मजबूती के लिए जयपुर पुलिस से बेहतर तालमेल बहुत जरूरी

राजधानी जयपुर आबादी और विस्तार के मामले में बहुत ही तेजी से राजस्थान में नहीं बल्कि पूरे देश में आगे बढ़ रहा है। जयपुर शहर के आसपास ग्रामीण इलाकों में जयपुर की चारों दिशाओं में बड़े-बड़े प्रोजेक्ट, बड़े-बड़े हॉस्पिटल, अंतरराष्ट्रीय प्लेग्राउंड, बड़े-बड़े व्यावसायिक और शिक्षण संस्थान स्थापित हो गए हैं। कॉलोनाइजर शहर के चारों तरफ शानदार कॉलोनिया डेवलप कर रहे हैं, जिसकी वजह से जयपुर में जमीन जायदाद और रियल एस्टेट का कारोबार भी पिछले कई सालों से लगातार गति पकड़े हुए हैं। ऐसे में जयपुर पुलिस की लाख कोशिश के बावजूद भी जयपुर में ट्रैफिक मैनेजमेंट कई वजह से मजबूत नहीं हो पा रहा है। हालांकि प्रदेश की भजनलाल सरकार ने जयपुर में ट्रैफिक व्यवस्था को सुधारने के लिए कई बड़े कदम उठाए हैं। कई जगहों पर ओवरब्रिज, पुलिया और अंडरग्राउंड सड़क और रास्तों का निर्माण करके जिन रास्तों पर ट्रैफिक का अत्यधिक बोझ होता है वहां ट्रैफिक के बोझ को कम करने का प्रयास किया जा रहा है, लेकिन यह तमाम प्रयास भी जयपुर की ट्रैफिक व्यवस्था के सुधार के लिए बोने साबित हुए हैं। जयपुर के चारदिवारी इलाके और शहर में चारों तरफ कई जगहों पर बरसात के दिनों में पानी भरने और जल भराव की जो समस्या पैदा हो जाती है उसके हमेशा हमेशा के निस्तारण के लिए प्रदेश की भजनलाल सरकार पूरे जतन के साथ कार्य कर रही है। इसलिए इस कार्य में कलेक्टर संदेश नायक को भी अपने नवाचार और नवीन प्रयोग के माध्यम से शहर में जल भराव जैसी समस्याओं का निस्तारण करवानी में अपनी अहम भूमिका निभानी होगी। इसके लिए जयपुर विकास प्राधिकरण, जयपुर नगर निगम, राजस्थान हाउसिंग बोर्ड, सार्वजनिक निर्माण विभाग इत्यादि संस्थाओं और विभागों के साथ मिलकर संदेश नायक इन विकट चुनौतियों और समस्याओं का हमेशा हमेशा के लिए निस्तारण करवाने में सफल होते हैं, तो यह अपने आप में उनके लिए तो एक बहुत बड़ी उपलब्धि मानी जाएगी ही, इसके अलावा शहर के लोगों के लिए यह एक अच्छे सपने के पूरे होने जैसा साबित होगा। वैसे जयपुर की ट्रैफिक व्यवस्था को मजबूती देने के लिए समय-समय पर विभिन्न विभागों की सामूहिक बैठक होती रहती है जिसमें कलेक्टर भी मौजूद रहते हैं। बैठक में कई निर्णय भी लिए जाते हैं लेकिन निर्णय की क्रियान्वती कहीं ना कहीं नहीं हो पाती, जिसकी वजह से यह बैठक सिर्फ कागजी कार्रवाई बनकर ही रह जाती है। इसलिए इस तरह की बैठकों पर संदेश नायक को गंभीरता से काम करने की जरूरत है। जयपुर शहर और जयपुर ग्रामीण की पापुलेशन लगातार बढ़ रही है। जयपुर शहर को संवेदनशील शहर माना जाता है। यहां अब सड़क, रेल और वायु यातायात कनेक्टिविटी में जबरदस्त सुधार हुआ है। रियल एस्टेट का कारोबार चरम पर है तो दूसरी तरफ जयपुर शहर के आसपास सभी दिशाओं में बड़े-बड़े हाई प्रोफाइल शैक्षणिक संस्थान, बड़े-बड़े मॉल, बड़े-बड़े हॉस्पिटल इत्यादि स्थापित होने की वजह से देश और दुनिया भर के लोगों का यहां पहले की तुलना में ज्यादा आवागमन होता है। जयपुर औद्योगिक शहर के रूप में भी आविकसित हो रहा है। इन तमाम वजह से अपराध जगत से जुड़े लोगों की निगाह भी इस खूबसूरत शहर पर टिकी गई है। बड़े-बड़े गैंगस्टर के गैंग के सदस्य यहां एक्टिव हैं। हफ्ता वसूली और और जान से मारने की धमकी जैसे मामले शहर के विभिन्न पुलिस स्टेशनों में आए दिन दर्ज हो रहे हैं। हालांकि पिछले सवा दो साल में

जयपुर में भी अपराध की घटनाओं में कमी आई है, लेकिन फिर भी जयपुर में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखना जयपुर पुलिस के लिए हमेशा बड़ी चुनौती रही है और अब यह चुनौती और भी ज्यादा बढ़ गई है। इसलिए जिला कलेक्टर होने के नाते संदेश नायक के लिए जयपुर पुलिस के साथ नियमित रूप से संवाद और आपसे सहयोग और तालमेल के माध्यम से, एक तरफ जहां शहर में शांति और कानून व्यवस्था बनाए रखने के लिए नियमित रूप से शांति समितियां की बैठक का आयोजन करके शहर में एक स्वच्छ और अच्छा माहौल बनाने की दिशा में काम करने की जरूरत है, तो दूसरी तरफ अपराध जगत से जुड़े लोगों के खिलाफ जयपुर पुलिस की ओर से प्रभावी कार्रवाई की प्रक्रिया निरंतर चलती रहे, इसके लिए संदेश नायक को जयपुर पुलिस को लगातार प्रेरित और उत्साहित करते रहना होगा। हालांकि संदेश नायक हमेशा अपराध जगत से जुड़े लोगों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई करने में कभी पीछे नहीं हटे, इस तरह की कार्रवाई इन्होंने भरतपुर, सीकर और चूरू जिले में कलेक्टर पद पर रहने के दौरान जिला पुलिस के मार्फत खूब करवाई है।

शहरी और ग्रामीण इलाकों में सरकार की योजनाओं के प्रचार प्रसार के कार्य को जोरदार तरीके से गति देना भी जरूरी

प्रदेश में आने वाले दिनों में पंचायत और नगर निकाय के चुनाव आयोजित होंगे। जयपुर जिले में जयपुर नगर निगम और कई नगर पालिका और बड़ी संख्या में ग्राम पंचायत, पंचायत समितियां, जिला परिषद इत्यादि में चुनाव होना निश्चित है। जानकार लोगों का कहना है कि मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा की भरपूर कोशिश है कि केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी जन-जनतक पहुंचे। मुख्यमंत्री शर्मा को अब भी कहीं ना कहीं ऐसा लगता है कि सरकार की योजनाओं की जानकारी कई लोगों को नहीं है, जिसकी वजह से उन्हें ना तो सरकार की उपलब्धियां का पता चल पाता है और ना ही ऐसे लोग सरकार की योजनाओं का फायदा उठा पाते हैं। इसलिए जयपुर जिले में एक बड़ा इलाका ग्रामीण इलाका भी है। ऐसे में ग्रामीण इलाके में गांव-गांव और छोटी-छोटी ढाणी में बैठे किसान, मजदूर, दलित, अल्पसंख्यक इत्यादि सभी को सरकार की योजनाओं की जानकारी प्रभावी तरीके से दी जाए, इसके लिए जिला प्रशासन के माध्यम से भी सरकार कई तरह के उपाय और तरीकों के माध्यम से योजनाओं के बारे में प्रचार प्रसार कर रही है। लेकिन कहीं ना कहीं यह भी सत्य है कि प्रशासनिक शिथिलता की वजह से कई बार कई जगहों पर लोगों को इन योजनाओं की जानकारी नहीं मिल पाती, जिसकी वजह से वांछित व्यक्ति सरकार की इन योजनाओं की जानकारी नहीं होने की वजह से फायदा नहीं उठा पाए। इसलिए नए कलेक्टर संदेश नायक के लिए यह काफी महत्वपूर्ण हो गया है कि जयपुर जिले में हर घर और हर व्यक्ति तक केंद्र और राजस्थान सरकार की योजनाओं की जानकारी पहुंचे। इसके लिए एक व्यापक कार्य योजना और रणनीति जयपुर जिला प्रशासन को अपने स्तर पर भी तैयार करनी होगी। हालांकि सरकार और जिला प्रशासन ग्राम पंचायत, पंचायत समिति दफ्तर, जिला परिषद दफ्तर इत्यादि के माध्यम से सरकार की योजनाओं का प्रचार प्रसार कर रही है, लेकिन यह प्रचार प्रसार ठीक तरह से संपादित हो रहा है या नहीं, इस पर संदेश नायक को कड़ी मॉनिटरिंग और कड़ी मेहनत करने की जरूरत है। अगर इस काम में संदेश नायक सफल हो जाते हैं तो यह उनके लिए सोने पर सुहागा जैसा साबित होगा। क्योंकि पिछले सब 2 साल में प्रदेश की बजरंग लाल, क्योंकि पिछले सवा दो साल में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने प्रदेश के शहरी और ग्रामीण इलाकों में लोगों की समस्याओं के समाधान के लिए शहरी और ग्रामीण स्तर पर विभिन्न तरह के कैंप और शिविर का आयोजन करके लोगों को राहत पहुंचाने का प्रयास भी किया है, जिसमें जयपुर जिले की उपलब्धि भी सही मानी जा रही है। लेकिन अभी इस काम को और गति देने की जरूरत है।

साइबर क्राइम के नेटवर्क की कमर तोड़ने वाले ठंडे दिमाग और विलक्षण प्रतिभा के धनी आईपीएस "संजीव नैन"

लो-प्रोफाइल के ऐसे ईमानदार, संयमित और अनुशासित ऑफिसर, जो सुर्खियां बटोरने और ढिंढोरा पीटने की बजाय गहन अनुसंधान, रिसर्च स्टडी करके जटिल से जटिल अपराधों का खुलासा करने में दिखा चुके बादशाहत, ऐसे ऑफिसर जो फरियादियों ज्यादा सुनते हैं और खुद कम बोलकर पीड़ितों को राहत दिलाने में हमेशा रहे अग्रणी, जिन्होंने पीएम नरेंद्र मोदी की बड़ी जनसभाओं, राहुल गांधी की यात्रा और अनेक बड़े-बड़े जन आंदोलन को शांतिपूर्वक संपादित करके "खाकी" पर कभी भी नहीं लगने दिया दाग, ऐसे अधिकारी जिनके दिल में सड़कों पर लावारिस घूम रहे बच्चों की भलाई के लिए भी है भरपूर स्नेह

जयपुर। पुरानी कहावत है- 'डाकन को नहीं, डाकन की मां को मारो ताकि डाकन पैदा ही ना हो। इस कहावत का भाव बहुत ज्यादा प्रभावी और गहरा है, जिसने इस कहावत के अर्थ को समझ लिया, उससे बढ़कर कोई ज्ञानी नहीं। और इस भाव को अगर पुलिस डिपार्टमेंट से जुड़े लोगों ने समझ कर अपने कर्तव्य और जिम्मेदारी को निभाया, तो पुलिस की नौकरी में उसका कोई मुकाबला नहीं। कुछ इसी भाव से पिछले कई सालों से पुलिस की नौकरी में अपना उत्कृष्ट और उल्लेखनीय प्रदर्शन करने वाले आईपीएस संजीव नैन के बारे में कहा जाता है कि वे अपराधी की बजाय अपराध की जड़ को नष्ट करने के प्रयासों और तरीकों पर अपना ध्यान ज्यादा केंद्रित करते हैं, ताकि समाज में अपराध हो ही ना सके। हालांकि अपराध समाज से ही निकलता है, इसलिए यह कहना कि अमुक अधिकारी या फिर कोई सरकार अपने फैसले और निर्णय से अपराध को जड़ से मिटा देगी, इसको कल्पना ही माना जा सकता है। लेकिन आईपीएस संजीव नैन की स्टाइल और सोच के आधार पर पुलिस डिपार्टमेंट में कोई काम करें, तो जाहिर तौर पर विभिन्न तरह के अपराधों में तेजी से गिरावट जरूर आ सकती है, क्योंकि संजीव नैन ने यह अद्भुत करिश्मा और क्रांतिकारी बदलाव अलवर में पुलिस अधीक्षक पद पर रहते हुए करके दिखाया। जिसमें उन्होंने अपने पुलिस अधीक्षक के कार्यकाल में अलवर जिले में साइबर क्राइम से जुड़े बड़े-बड़े ग्रुप की कमर तोड़ दी थी। इस नेटवर्क को तोड़ने में उन्होंने अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों के साथ काफी मेहनत की, और गहन रिसर्च, अनुसंधान, डिजिटल डाटा संकलन, आधुनिक संचार साधनों, उपकरण तथा नई तकनीक की बारीकियों को समझकर और इनका बेहतर समुचित उपयोग करके संजीव नैन और उनकी टीम उन जगहों तक पहुंच गई थी, जहां से साइबर क्राइम जन्म लेता है। इसलिए जिसकी गोद से साइबर क्राइम पल रहा था, उस गोद की संजीव ने कब्र खोद डाली। उसी का नतीजा रहा की अलवर जिले में साइबर क्राइम का ग्राफ जबरदस्त तरीके से नीचे गिर गया था। अलवर जिला जो साइबर अपराध के लिए राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में सुर्खियों में बना हुआ था, वहां साइबर अपराध से जुड़े सैकड़ो लोगों को चिन्हित करके उन्हें जेल की सलाखों में भेजा गया। कई बड़े-बड़े साइबर अपराध ग्रुप का पर्दाफाश करके उनके सारे नेटवर्क को धराशाई कर दिया, जिसकी वजह से अलवर जिले में इनके कार्यकाल में साइबर अपराध की घटनाएं बहुत ही नाम मात्र की होने लगी थी। जो अपराधी पुलिस की गिरफ्त में आने से बच गए थे, उन्होंने अलवर पुलिस की प्रभावी कार्रवाई को देखकर या तो शांत हो गए, या फिर उन्होंने अपना ठिकाना बदल लिया। जिसकी वजह से उस समय अलवर पुलिस राजस्थान में ही नहीं, बल्कि पूरे देश में साइबर अपराधियों के खिलाफ कार्रवाई करने को लेकर प्रशंसा का पात्र बन गई थी।

भजनलाल सरकार को क्यों पसंद सजीव नैन ?....

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा भाजपा में शुरू से ही लो-प्रोफाइल के नेता माने जाते रहे हैं, जिन्होंने करीब 20 साल से ज्यादा देश भाजपा कार्यालय में बैठकर हर दिन नियमित रूप से अनुशासित और संयमित तरीके से कर्मठ भाव से पार्टी के संगठन से जुड़े कार्यों को देखा और निपटाया। उनके इस कार्य को भले ही प्रदेश की जनता ने नहीं देखा हो, लेकिन प्रदेश भाजपा में उनकी मेहनत और उनके कार्यों पर भाजपा के दिल्ली दरबार की सालों से नजर रखी हुई थी। इसलिए भले ही उन्हें मीडिया में सुर्खियां नहीं मिली हो, लेकिन उनकी मेहनत, अनुशासन और पार्टी के प्रति समर्पण भाव ने उन्हें पीएम नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के पसंदीदा नेता के रूप में स्थापित कर दिया। इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा खुद अपने स्वभाव और नेचर के मुताबिक लो-प्रोफाइल के मेहनती, ईमानदार और समर्पित भाव से ड्यूटी देने वाले प्रशासनिक और पुलिस अधिकारियों को जनता से सीधे जुड़े महत्वपूर्ण विभागों और पदों पर नियुक्ति दे रहे हैं, ताकि इसका फायदा प्रदेश की जनता को मिल सके। जिसमें संजीव नैन के पूर्व के परफॉर्मेंस और उनकी वर्किंग स्टाइल को देखते हुए ही जयपुर शहर पूर्व के डीसीपी पद पर तैनात किया हुआ है, हालांकि इससे पहले जयपुर पश्चिम के डीसीपी भी रहे। इसके अलावा टोंक, दौसा, अलवर जिलों के पुलिस अधीक्षक पद पर भी नियुक्त रहे। जाहिर तौर पर जयपुर की कानून और सुरक्षा व्यवस्था जयपुर पुलिस के लिए सालों से एक बड़ी चुनौती बनी हुई है। एक तरफ शहर आबादी और विस्तार तेजी से बढ़ रहा है, तो दूसरी तरफ सड़क, रेल और वायु यातायात के नेटवर्क में तेजी से इजाफा हो रहा है, जो अपराध जगत से जुड़े लोगों के आवागमन में काफी सहायक बना हुआ है। ऐतिहासिक और खूबसूरत सिटी होने की वजह से देश और विदेश के पर्यटकों की पसंद का शहर तो पहले से है ही, इसके अलावा देश और दुनिया भर के बड़े-बड़े राजनेताओं, उद्योगपतियों, फिल्म जगत से जुड़े लोगों और विभिन्न क्षेत्र से जुड़े लोगों के पसंद का शहर भी है, इसलिए इन सेलिब्रिटियों का भी यहां आना-जाना लगा रहता है। बड़े-बड़े शॉपिंग सेंटर, मेट्रो, हाई प्रोफाइल एजुकेशन सेंटर, बड़ी-बड़ी यूनिवर्सिटी, रिंग रोड, ओवर ब्रिज इत्यादि सब कुछ से जयपुर मुंबई महानगर की तरह नजर आने लगा है। इसीलिए जमीन की कीमत आसमान छू रही है, इसलिए बड़े-बड़े गैंगस्टर, भू माफिया सबकी निगाहों में छाया हुआ है। विधानसभा, शासन सचिवालय, हाई कोर्ट बेंच और अन्य बड़े सभी सरकारी दफ्तर होने की वजह से जयपुर पुलिस के कंधों पर बहुत ज्यादा कार्य का बोझ है। राजधानी होने के नाते यहां रोजाना विशिष्ट अतिथियों और सिलेब्रटियों के शहर में इधर-उधर आने-जाने की सुरक्षा व्यवस्था की जिम्मेदारी अलग से निभानी पड़ती है, इसीलिए जयपुर कमिश्नरेट में नियुक्त छोटे बड़े सभी पुलिस अधिकारियों को अन्य जगहों की तुलना में यहां ज्यादा मेहनत और समय देने की जरूरत होती है, ताकि शहर की शांति और कानून व्यवस्था बनी रहे। इसलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा और पुलिस मुख्यालय ने जयपुर पुलिस कमिश्नरेट में संजीव नैन जैसे अधिकारियों को नियुक्त करके जयपुर पुलिस को गतिशील और कर्मसील बनाने का प्रयास किया है।

शिक्षा जगत के अपने पूर्व के अनुभव का पुलिसिंग में कर रहे हैं बेहतर इस्तेमाल

डीसीपी ईस्ट संजीव नैन के पूर्वज उत्तर प्रदेश के बागपत के रहने वाले हैं, और इनका जन्म भी बागपत में ही हुआ, लेकिन इनके पिताजी भरतपुर में गवर्नमेंट कॉलेज में प्रोफेसर पद पर लंबे समय तक रहे, इसलिए उन्होंने भरतपुर सिटी में ही अपना स्थाई निवास बना लिया। इसके अलावा इनकी माता भी भरतपुर सिटी में ही सरकारी स्कूल में टीचर रही, इसकी वजह से संजीव नैन जी की स्कूल और कॉलेज की पढ़ाई भरतपुर में ही संपादित हुई। बाद में राजस्थान यूनिवर्सिटी से इन्होंने पोस्ट ग्रेजुएट भी किया। इस दौरान इन्होंने उत्तर प्रदेश के आगरा से शिक्षक प्रशिक्षण का कोर्स भी कंप्लीट कर लिया, जिसकी वजह से अपने माता-पिता की तरह यह भी सरकारी शिक्षक बन गए। इस तरह से इन्हें बचपन से ही अपने उच्च शिक्षित माता-पिता से मिले अच्छे संस्कार, अनुशासित और संयमित जीवन और सत्यपरक वैचारिक मूल्य के समावेश से उनकी जीवन की गाड़ी एक आदर्श और सफल नागरिक बनने की दिशा में दौड़ ही रही थी कि, सरकारी शिक्षक पद पर रहने के दौरान ही जीवन में कुछ और नया करने की तमन्ना और लोगों की ज्यादा से ज्यादा सेवा करने की ललक ने इन्हें राजस्थान प्रशासनिक सेवा भर्ती परीक्षा देने के लिए आतुर किया। जिसमें इन्हें सफलता भी मिली और यह राजस्थान पुलिस सेवा के लिए चुन लिए गए। राजस्थान पुलिस सेवा में जॉइनिंग के बाद इनकी जीवन शैली तो काफी बदल गई, लेकिन बचपन से मिले संस्कार और अपने शिक्षक जमाने के पूर्व के अनुभव का अपनी पुलिस की नौकरी में बेहतर तरीके से उपयोग किया। जिसमें इन्होंने सबसे ज्यादा फोकस इसी बात पर रखा की दुनिया की कोई भी बड़ी जंग ताकत से नहीं, बल्कि बुद्धि से जीती जा सकती है। चाहे कोई कितना ही मुश्किल और कठिन कार्य हो, उसे बुद्धि से आसानी से संपादित किया जा सकता है। इसलिए पुलिस का तो मुकाबला सीधा अपराध जगत से ही होता है, जिसमें सोशल मीडिया के इस युग में अपराधी और अपराध के तरीकों में जोरदार बदलाव आ गया है, और आधुनिक युग में अपराध जगत में हाई प्रोफाइल स्टडी करने वाले और चतुर लोगों का ज्यादा जमावड़ा है। ऐसे में आईपीएस संजीव नैन ने अपने जीवन की किताब के उस अध्याय को पढ़ा, जिसमें शिक्षक को उसकी बुद्धि, नैतिक आचरण, अनुशासित और संयमित जीवन से समाज का दर्पण और समाज का निर्माता माना जाता है। इसलिए पुलिस की नौकरी में आने के बाद संजीव नैन ने पुलिस के उस चेहरे को ज्यादा पसंद नहीं किया, जिसमें यह माना जाता है कि पुलिस सिर्फ ताकत और डंडे से ही अपराध को काबू में कर सकती है। इस धारणा को इस पूर्व शिक्षक पुलिस अधिकारी ने पूरी तरह से बदलने का प्रयास किया, और अपराधी की बजाय अपराध की जड़ों को अपने बुद्धि कौशल, गहन अनुसंधान, रिसर्च, स्टडी के माध्यम से बिना ताकत आजमाएं नष्ट करने की दिशा में इन्होंने ज्यादा कार्य किया, जिसमें इन्हें काफी सफलता भी मिली। राजस्थान पुलिस सेवा की सर्विस में प्रदेश में अलग-अलग जगह पर पुलिस उप अधीक्षक, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और जिला पुलिस अधीक्षक पद पर कार्य करते हुए इन्होंने कई कठिन और विपरीत परिस्थितियों वाले बड़े-बड़े मामलों, बड़े-बड़े जन आंदोलन को तो शांतिपूर्वक तरीके से हल किया ही, इसके अलावा दर्जनों गंभीर जटिल अपराध की विभिन्न वारदातों का भी खुलासा करके बड़े-बड़े अपराधियों को जेल में बंद किया। यह उपलब्धियां संजीव नैन ने अपने बुद्धि कौशल और चतुर दिमाग की वजह से ही हासिल की, क्योंकि शिक्षक माता-पिता की गोद में पले और फिर खुद भी शिक्षक बने, इसलिए इस बात को बेहतर तरीके से जानते हैं कि आज के सोशल मीडिया के जमाने में चतुर दिमाग वाले शातिर अपराधियों से डंडे के जोर पर नहीं, बल्कि बुद्धि के बल से निपटा जा सकता है। इसीलिए इनका काम करने का अपना एक अलग फंडा है, वह यह की जहां अपराध जन्म लेता है, उस जगह पहुंच कर जगह का नाम मिटा दो, ताकि अपराध जन्म ही ना ले सके। इसी मिजाज के साथ संजीव नैन पुलिस विभाग में अपने काम और ड्यूटी को अंजाम दे रहे हैं, जिसमें कई उल्लेखनीय सफलताएं अपने अकाउंट में दर्ज करवाते हुए खुद का भी और पुलिस का भी मान सम्मान बढ़ा रहे हैं।

लंबे समय तक प्रदेश में कई जगहों पर पुलिस उप अधीक्षक, एसीबी में अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक और पुलिस अकादमी में भी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पद पर रहे नियुक्त

संजीव नैन का वर्ष 1997 राजस्थान पुलिस सेवा में सिलेक्शन हुआ, वर्ष 2022 में पदोन्नति होने के बाद भारतीय पुलिस सेवा के अधिकारी बने। आईपीएस बनने के बाद टोंक, दौसा, अलवर, जयपुर वेस्ट जिलों के एसपी बने, वर्तमान में जयपुर पूर्व डीसीपी पद पर नियुक्त हैं। हालांकि अब तक की पुलिस की सर्विस में पुलिस उप अधीक्षक पद पर इन्होंने प्रदेश में अलग-अलग जगह पर सेवाएं दी, जिसमें चिड़ावा, लाखेरी, श्रीगंगानगर सिटी, महुआ, लक्ष्मणगढ़, गंगापुर सिटी और कई अन्य सर्कल में तैनात रहे। पुलिस उप अधीक्षक पद से अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पद पर पदोन्नति होने के बाद इन्होंने एसीबी में लंबे समय तक कार्य किया, और कई भ्रष्ट अधिकारियों और कर्मचारियों को रंगे हाथों रिश्वत लेते के पकड़े जाने की कार्रवाई में बड़ी भूमिका निभाई। पुलिस अकादमी में भी अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक पद पर रहते हुए यहां प्रशिक्षण लेने आने वाले जवानों को हर तरह से पारंगत और प्रशिक्षित करने में उल्लेखनीय भूमिका निभाई। पुलिस की फील्ड पोस्टिंग के कार्यकाल में इनके नाम अनेक ऐसी उपलब्धियां दर्ज हैं, जिनका यहां शब्दों में बयां करना काफी मुश्किल है, क्योंकि यह सब गंभीर अपराध की घटनाएं एक नहीं बल्कि अनेक हैं, जिनकी अलग-अलग थ्योरी और अलग-अलग जांच की दिशाएं हैं। जिसमें किसी एक घटना का भी यहां जिक्र करें तो यह आर्टिकल काफी लंबा हो जाएगा। इसलिए इस अधिकारी के बारे में इतना ही कहा जा सकता है कि इन्होंने अनेक ब्लाइंड मर्डर, डकैती, नकबजनी जैसे जटिल और गंभीर अपराधों की जांच का बेस्ट सुपरविजन करके कई बड़े-बड़े अपराधियों को जेल की सलाखों में बंद किया। और खुद ने भी हमेशा ईमानदारी और निष्ठा से नौकरी की, और अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों को भी ईमानदारी और निष्ठा भाव से पुलिस का फर्ज अदा करने के लिए प्रेरित करते रहे। इसी वजह से यह जहां भी, जिस भी जगह पर नियुक्त रहे, वहां के लोग इन्हें आज भी याद करते हैं।

टाइम पंक्चुअल और सरकारी दफ्तर के दरवाजे फरियादियों के लिए हमेशा रखते हैं खुला

संजीव नैन टाइम पंक्चुअल ऑफिसर हैं। जितने सरल और सौम्य है, उतने ही नियम और कानून की पालना करवाने में कठोर। कठिन से कठिन और जटिल से जटिल फाइल की अबूझ पहेलियों को भी सुलझाने में इन्हें काफी महारथ हासिल है। वजह यही है कि अगर कोई फरियादी आ जाए तो उसकी फरियाद सुनते हैं, कोई अधीनस्थ अधिकारी आ जाए तो उसके साथ सरकारी मीटिंग कर लेते हैं, या कोई बड़ा अधिकारी बुलाए तो उनके यहां चले जाते हैं। और फिर जैसे ही थोड़ा सा भी समय बचता है, तो फिर वापस अपना दिमाग जटिल फाइल के पन्नों की गुत्थी को सुलझाने में व्यस्त हो जाते हैं। टाइम मैनेजमेंट का इनका यह अपना अनूठा स्टाइल है, जिसमें एक-एक पल को इन्होंने पुलिस की सेवा में समर्पित किया हुआ है। इसलिए आज उनकी गिनती भारतीय पुलिस सेवा के कर्मठ और मेहनती अधिकारियों में होती है। बड़ी बात यह है कि निर्धारित समय से पहले अपने दफ्तर पहुंचते हैं, और कोई जरूरी मीटिंग या जरूरी कार्य होने पर ही दफ्तर को छोड़ते हैं, अन्यथा सुबह से लेकर देर शाम तक अपने दफ्तर में रहते हैं। यहां आने वाले सभी फरियादियों को बाकायदा अपने चेंबर में बुलाते हैं, उन्हें सामने बिठाते हैं, उन्हें यह बिल्कुल ही एहसास नहीं होने देते कि सामने उनके एक आईपीएस ऑफिसर बैठा है। उनकी कोशिश यही रहती है कि सामने बैठा फरियादी उन्हें एक परिवार का सदस्य समझ कर अपनी पीड़ा की सत्यता को उनके सामने ईमानदारी से बयां कर सके, ताकि उसकी समस्या का वह उचित निवारण कर सके। इसलिए संजीव अपने नेचर और स्वभाव के मुताबिक फरियादी को खुलकर बोलने का मौका देते हैं। इसके बाद फरियादी के मामले की तहकीकात करके जांच अधिकारी से तमाम तरह की जानकारियां हासिल करते हैं। जब उन्हें यह लगता है कि यहां पर कहीं ना कहीं जांच अधिकारी की कोई कमी है, तो वे जांच अधिकारी को हिदायत देते हुए मामले की निष्पक्ष जांच करने की बात भी कहते हैं। अगर फिर भी फरियादी संतुष्ट नहीं हो, तो फरियादी को संतुष्ट करने के लिए मामले की जांच बदलने में भी देर नहीं करते, लेकिन उनकी कोशिश हमेशा यही रहती है कि उनके यहां आने वाला हर फरियादी पूरी तरह से संतुष्ट होकर जाए।

जितना पुलिस पब्लिक के लिए सोचती है उतना ही पब्लिक भी पुलिस के लिए सोचे

संजीव नैन राजस्थान पुलिस सेवा 1997 कैडर के अधिकारी हैं। 1997 से लेकर अब तक इतनी लंबी पुलिस की सर्विस में इन्हें कई बार अच्छे और बुरे दोनों अनुभव हासिल हुए। जिसमें सबसे ज्यादा पीड़ा इन्हें उस समय होती है जब किसी मामले में पुलिस रात दिन मेहनत करके और कई तरह की चुनौतियों और मुश्किलों का सामना करते हुए अपराधियों को कोर्ट तक ले जाती है, लेकिन कोर्ट में जाकर वही पीड़ित, जिसने इंसाफ के लिए पुलिस स्टेशन में अर्जी लगाई थी, वही कोर्ट में जज और वकील के सामने दोषी व्यक्ति से राजीनामा और समझौता कर लेता है। इस तरह के कई मामले इन्होंने अपनी आंखों से देखे, तो फिर कहीं ना कहीं पुलिस अधिकारी यह सोचने को मजबूर हो जाता है कि उसने जिस मामले में इतनी मेहनत और भागदौड़ की, उसका प्रतिफल आखिर क्या मिला। अपराधी दो अपराध करके भी सीना तानकर कोर्ट परिसर से ही चला गया और पीड़ित खुश होकर अपने घर लौट गया, लेकिन उस जांच अधिकारी की मेहनत को क्या मिला जिसने दिन रात मेहनत करके अपराधी को पकड़ा। इसलिए एक मुलाकात के दौरान संजीव नैन ने जोर देकर कहा कि जब पुलिस पब्लिक के लिए अपना सब कुछ न्योछावर कर देती है, तो फिर पब्लिक को भी पुलिस के बारे में सोचना चाहिए। जब तक पब्लिक और पुलिस के बीच एक मजबूत विश्वास और दोस्ती का रिश्ता कायम नहीं होगा, तब तक अपराधियों में अपराध करने की प्रवृत्ति में गिरावट नहीं आएगी, क्योंकि एक बार कोर्ट में समझौता और राजीनामा करने के बाद वह फिर से पुराना अपराध जरूर दोहराने की कोशिश करेगा। इसलिए पब्लिक पुलिस को परिवार का सदस्य समझे और अपने यहां आस-पास जितनी भी अच्छी और बुरी गतिविधियां हो, उनके बारे में पुलिस के साथ संवाद करती रहे। संदिग्ध लोगों की जानकारी पुलिस के साथ निरंतर शेयर करती रहे, पुलिस के साथ ज्यादा से ज्यादा वार्तालाप करें, तो आधे से ज्यादा कार्य अपने आप ही आसान हो जाता है, जिसका पूरा फायदा पब्लिक को भी मिलता है। उन्होंने यह भी कहा की पुलिस विभाग में कांस्टेबल, हेड कांस्टेबल और अन्य पदों पर बैठे पुलिस कर्मचारी जो 18 से 24 घंटे ड्यूटी देते हैं, कठिन और विपरीत परिस्थितियों में भी पब्लिक के हितों की रक्षा के लिए तैयार रहते हैं। ऐसे पुलिस कर्मियों और इनके परिवारों के कल्याण और विकास के लिए सरकारों के प्रयास तो सतत रूप से चलते ही रहते हैं, इसके अलावा सामाजिक संगठनों, व्यापारिक संगठनों, भामाशाह और दानदाताओं को पुलिस वेलफेयर के लिए ज्यादा से ज्यादा आगे आना चाहिए। जिसकी वजह से पुलिस और पब्लिक के बीच एक तरफ जहां मित्रता का भाव और मजबूत होगा, तो दूसरी तरफ पुलिस कर्मियों में भी ड्यूटी के प्रति निष्ठा भाव और गहरा मजबूत होगा, क्योंकि जब उन्हें यह महसूस होगा कि समाज हमारे लिए इतना सब कुछ कर रहा है, तो फिर हम पीछे क्यों रहे। उन्होंने कहा कि भामाशाह और दानदाता पुलिस डिपार्टमेंट को छोड़कर अन्य जगहों पर खूब पैसा दान करते हैं, बड़ी-बड़ी जमीन भी दान में देते हैं, लेकिन पुलिस के वेलफेयर के ढांचे को मजबूत करने और पुलिस के संगठन के ढांचे को मजबूत करने में भामाशाह ज्यादा आगे नहीं आते। जबकि प्रदेश में कई पुलिस स्टेशन जगह की कमी की समस्या से जूझ रहे हैं, लेकिन इस समस्या की तरफ सामाजिक संगठन, व्यापारिक संगठन, भामाशाह और दानदाता का ध्यान ज्यादा केंद्रित नहीं होता। यह देखकर बड़ा अजीब लगता है, जबकि पुलिस जैसे संवेदनशील डिपार्टमेंट के लिए भामाशाह और दानदाताओं को ज्यादा आगे आना चाहिए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की बड़ी-बड़ी जनसभाओं, राहुल गांधी की यात्रा और कई अन्य बड़े-बड़े उग्र आंदोलन को शांतिपूर्वक तरीके से निपटाकर खुद को किया साबित

प्रदेश में टोंक, दौसा, अलवर, जयपुर वेस्ट जिलों में पुलिस अधीक्षक पद पर रहने के दौरान संजीव नैन ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कई बड़ी-बड़ी जनसभाओं का बहुत ही व्यवस्थित तरीके से शांतिपूरक आयोजन करवाने में बड़ी भूमिका निभाई। दौसा जैसे संवेदनशील जिले में पीएम मोदी की ऐसी सभा जिसमें लाखों की संख्या में भीड़ जमा थी, लेकिन सभा से पहले और सभा के बाद एक पल के लिए भी किसी भी तरह की कोई अप्रिय घटना या फिर अशांति का माहौल देखने को नहीं मिला, और ना ही ट्रैफिक जाम जैसी कोई बड़ी मुश्किल पैदा नहीं होने दी। यह सब संजीव नैन की बेस्ट सुपरविजन, चतुराई और वर्किंग स्टाइल का ही परिणाम रहा, जिसकी वजह से मोदी की सभाएं शांतिपूर्वक तरीके से संपादित हुई। इसी तरह से राहुल गांधी की यात्रा के दौरान भी बड़ी संख्या में भीड़ जमा हुई, कई किलोमीटर तक इनकी पैदल यात्रा संपादित हुई, जिसमें हजारों की संख्या में वाहन और उनके समर्थकों का जमावड़ा रहा, लेकिन संजीव नैन के बेस्ट सुपरविजन से राहुल गांधी की यात्रा भी शानदार तरीके से संपादित हुई। इसी तरह के कई बड़े-बड़े जन आंदोलन, किसान आंदोलन, युवा आंदोलन जिसमें उग्र भीड़ कुछ भी कर गुजरने को तैयार रहती थी, लेकिन इन कठिन मौकों पर संजीव खुद मौके पर पहुंचे। और वहां धैर्य, संयम रखते हुए हिंसा पर उतारू भीड़ की बातों को ज्यादा से ज्यादा सुना। भीड़ से गर्म तेवर में बात करने की बजाय उन्हें अपने परिवार की तरह मानकर, उनके साथ अच्छे माहौल और अच्छे बर्ताव से उनकी बातों को गंभीरता से अप्रिशिएट करके, सरकार और आंदोलनकारी के बीच एक मजबूत मध्यस्थ की भूमिका निभाकर, इन सब बड़े-बड़े उग्र आंदोलन को शांतिपूर्वक तरीके से निपटाया। जिसकी वजह से पुलिस मुख्यालय और सरकार भी इनकी बुद्धि शैली और काम करने के तरीके से काफी प्रभावित रही। बताते हैं कि टोंक जिला पुलिस अधीक्षक पद पर रहने के दौरान इन्होंने मालपुरा में एक ऐसी पदयात्रा, जिसको लेकर दो संप्रदायों के बीच लंबे समय से विवाद और टकराव बना हुआ था, जिसकी वजह से यह यात्रा कई सालों से रुकी हुई थी, उस यात्रा को दोबारा से शुरू करवाने में उनकी बहुत बड़ी भूमिका मानी जाती है। आज भी मालपुरा के लोग ही नहीं, बल्कि टोंक जिले की हर जाति और संप्रदाय के लोग इन्हें इनके अच्छे कार्यों और अच्छे स्वभाव की वजह से याद करते हैं। मालपुरा काफी संवेदनशील इलाका है, यहां सांप्रदायिक तनाव की खबरें सालों से सुर्खियों में बनी रहती हैं, इसलिए यहां पर दो संप्रदायों के बीच आपस में मेलजोल करवाना किसी अधिकारी के लिए आसान कार्य नहीं था। लेकिन ठंडे दिमाग, मधुर वाणी और अपने मिलनसार व्यवहार से दो अलग-अलग संप्रदाय के लोगों के बीच आपस में प्यार और मोहब्बत का माहौल कायम करवा कर, 5 साल से रुकी यात्रा को दोबारा से शुरू करवाया। इसी तरह से प्रदेश में अलग-अलग समय पर हुए गुर्जर आंदोलन में भी अपनी फील्ड पोस्टिंग के दौरान संजीव नैन ने आंदोलनकारी को ठंडे दिमाग से और एक अच्छे बातचीत के माहौल से उन्हें शांत करने का भरपूर प्रयास किया। गुर्जर आंदोलन के दौरान पुलिस के सामने कई तरह की बड़ी-बड़ी चुनौतियां और बड़ी-बड़ी मुश्किलें खड़ी रही, लेकिन संजीव नैन हमेशा आंदोलन करने वाले लोगों से डंडे की बजाय बातचीत के माध्यम से ही मामले को शांत करने की दिशा में कार्य करते हुए नजर आए थे। इनके इन प्रयासों को गुर्जर आंदोलन से जुड़े नेता आज भी सलूट करते हैं।

अपने सालों के जमीनी अनुभव से डीआईपीआर का शानदार और उत्कृष्ट प्रबंध कर रहे "राकेश शर्मा"

करीब 3 महीने के अपने अब तक के अल्प समय के कार्यकाल में ही भजनलाल सरकार की नीतियों, जनकल्याणकारी योजना और विकास कार्यों को डीआईपीआर के माध्यम से जन-जन तक पहुंचा कर खुद को किया साबित। मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के विश्वास और कसौटी पर उतर रहे खरे, सरकार, पब्लिक और मीडिया के बीच प्रदेश के डीआईपीआर को एक मजबूत सेतु के रूप में कर दिया स्थापित

जयपुर। प्रदेश के मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने करीब 3 महीने पहले जिस उम्मीद और विश्वास के साथ प्रदेश के सूचना और जनसंपर्क विभाग की कमान भारतीय प्रशासनिक सेवा के वरिष्ठ, कर्मठ, ईमानदार और मेहनती अधिकारी राकेश शर्मा के हाथों में दी थी, उस जिम्मेवारी को बहुत ही कम समय की अवधि में ही शानदार और उत्कृष्ट तरीके से निभाकर प्रदेश के नए डीआईपीआर राकेश शर्मा ने खुद को साबित किया है। चाहे भजनलाल सरकार की नीतियों, विकास कार्यों और जनकल्याणकारी योजनाओं के बेहतर तरीके से प्रदेश भर में प्रचार प्रसार करने की बात हो, या फिर प्रदेश के प्रिंट, इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया और सरकार के बीच बेहतर संबंध और तालमेल बनाने का विषय हो, या फिर सूचना और जनसंपर्क विभाग के प्रदेश भर में नियुक्त अधिकारियों और कर्मचारियों के बीच आपस में बेहतर तालमेल और समन्वय बनाने का विषय हो; ऐसे हर जरूरी और महत्वपूर्ण विषय में डीआईपीआर ने अपनी जिम्मेदारी, दायित्व और विजन को बखूबी से निभाया। इसी का परिणाम है कि आज एक तरफ जहां सरकार के विकास कार्यों और योजनाओं का शहर से लेकर हर गांव और ढाणी में सरकारी स्तर पर धांसू प्रचार नजर आ रहा है, तो दूसरी तरफ प्रिंट,

इलेक्ट्रानिक मीडिया और सोशल मीडिया से जुड़े लोग भी प्रदेश सरकार और डीआईपीआर के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण दृष्टिकोण अपनाए हुए हैं, जो अपने आप में एक बड़ी बात है।

इसमें कोई संदेह नहीं, पिछले सवा दो साल में प्रदेश की भजनलाल सरकार ने पानी, बिजली, सड़क, उद्योग, सौर ऊर्जा, चिकित्सा, शिक्षा, महिला विकास, युवा विकास, बेरोजगारी, पुलिसिंग, स्किल डेवलपमेंट इत्यादि सभी क्षेत्रों में ऐतिहासिक विकास कार्य किया। हर क्षेत्र में बड़े-बड़े निर्णय निर्णय लिए और सालों से चले आ रहे विभिन्न राज्यों से विवादों को सुलझाया, इसलिए प्रदेश सरकार की विकास यात्रा अभूतपूर्व मानी जा सकती है। लेकिन जब तक सरकार की इन उपलब्धियां की जानकारी प्रदेश के हर परिवार और हर व्यक्ति तक नहीं पहुंचे, तो फिर सरकार की इस उपलब्धि और मेहनत का कोई मतलब नहीं निकलता। इसीलिए मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, जिनके हाथों में प्रदेश के सूचना और जनसंपर्क विभाग की कमान भी है, उन्हें एक ऐसे अधिकारी की तलाश थी जो सरकार की योजनाओं और उपलब्धियां को प्रदेश के हर व्यक्ति तक पहुंचाने के मामले में काफी अनुभवी और माहिर हो। हालांकि ऐसा नहीं था कि प्रदेश का सूचना और जनसंपर्क विभाग सरकार के कामों के प्रचार प्रसार में कोई कमी छोड़े हुए था, लेकिन कहीं ना कहीं मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा को ऐसा लगता था कि सरकार के अच्छे कार्यों और जनकल्याणकारी योजनाओं के बारे में प्रदेश भर के लोगों को ठीक तरह से जानकारी नहीं मिल पा रही है। क्योंकि उन्होंने कई बार अलग-अलग जगह पर जनसभा में लोगों से यह अपील करते हुए देखा गया कि वे सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं की जानकारी उन लोगों तक जरूर उपलब्ध करवाए जिन्हें इन योजनाओं की जानकारी नहीं है। इसलिए मुख्यमंत्री शर्मा डीआईपीआर के प्रबंधन को लेकर काफी गंभीर थे। लेकिन अब उन्हें कहीं ना कहीं तसल्ली मिली है, जब प्रदेश का सूचना और जनसंपर्क विभाग पहले की तुलना में ज्यादा सक्रिय और गतिशील होकर प्रदेश सरकार की उपलब्धियां और योजनाओं के धांसू प्रचार प्रसार में दिन-रात कड़ी मेहनत करता हुआ दिख रहा है, जिसमें नए डीआईपीआर राकेश शर्मा की भूमिका को हर जगह सराहा जा रहा है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक पर पेनी नजर रख रही है राकेश शर्मा की "तीसरी आंख"

आज पूरी दुनिया में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक का बोलबाला है। केंद्र की मोदी सरकार और प्रदेश की भजनलाल सरकार ही नहीं, बल्कि देश की अन्य राज्य सरकारी भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तकनीक का उपयोग करने में विश्वास रखती हैं। लेकिन यह भी सच है कि यह तकनीक केंद्र और प्रदेश सरकारों तथा आम जन के लिए फायदेमंद होने के अलावा कई बार इस तकनीक के माध्यम से गलत फर्जी और बनावटी खबरें भी आसानी से प्रचारित और प्रसारित कर दी जाती है, जो सरकारों के लिए और आमजन के लिए भी कई बार नुकसान दायक साबित हो जाती है। इसलिए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तकनीक के माध्यम से कोई जानबूझकर सुनियोजित तरीके से प्रदेश सरकार की योजनाओं और विकास कार्यों को गलत तरीके से प्रस्तुत करके सरकार की छवि को खराब ना कर दे, इस महत्वपूर्ण विषय पर राकेश शर्मा खुद तीसरी आंख की तरह काम करते हुए हमेशा सोशल मीडिया की गतिविधियों पर नजर रखते हैं, ताकि कोई आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का गलत तरीके से इस्तेमाल करके सरकार की छवि को नुकसान न पहुंच सके। इसके लिए राकेश शर्मा खुद भी काफी गंभीर हैं, और सूचना एवं जनसंपर्क विभाग के जिला स्तर पर पोस्टेड अधिकारियों और कर्मचारियों को भी इस विषय पर नियमित रूप से निगरानी रखने के निर्देश दिए हुए हैं।

लंबा प्रशासनिक अनुभव और जमिनी जुड़ाव ने राकेश शर्मा को बना दिया परफेक्ट ऑफिसर

प्रदेश के सवाई माधोपुर जिले के रहने वाले राकेश शर्मा बेहद ही सरल, सहज और मृदु भाषी अफसर शुरू से ही रहे हैं। काम के प्रति समर्पण भावना इनमें देखते ही बनती है और ईमानदारी इनके नेचर में है, क्योंकि अपनी लंबी प्रशासनिक सेवा में वे प्रदेश में करीब करीब सभी डिपार्मेंटों में अच्छे पदों पर रहे। शुरू में राजस्थान प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के रूप में प्रदेश में कई जगहों पर एसडीओ पद पर रहने के दौरान शहरी और ग्रामीण जनता से इनका सीधा जुड़ाव रहा। लोग सरकार के बारे में क्या सोचते हैं? लोग सरकार से क्या चाहते हैं? लोगों को कैसे और किस तरह से संतुष्ट किया जाए? लोगों को कैसे और किस तरह से सरकार की योजनाओं का लाभ दिलाया जाए? सरकार की योजनाओं का कैसे और किस तरह से बेहतर क्रियान्वयन करवाया जाए? इन सब विषयों पर कई कई सालों तक अलग-अलग जगह पर एसडीओ और ब्लॉक डेवलपमेंट ऑफिसर पद नियुक्त रहने के दौरान राकेश शर्मा ने गंभीरता से काम किया, जिसके फल स्वरुप प्रदेश भर के विभिन्न जिलों की वस्तु स्थिति और विभिन्न जिलों में रहने वाले लोगों के नॉलेज, स्वभाव, साक्षरता इत्यादि के बारे में शर्मा को अटूट ज्ञान है। यह ज्ञान और अनुभव अब उन्हें सूचना व जनसंपर्क विभाग के बेहतर प्रबंधन में काफी काम आ रहा है। पिछले वर्ष दिसंबर के आखिरी सप्ताह में ही मुख्यमंत्री शर्मा ने राकेश शर्मा को सूचना और जनसंपर्क विभाग की जिम्मेदारी दी थी, इसलिए पिछले 3 महीने की इस छोटी सी अवधि में ही प्रदेश का सूचना और जनसंपर्क विभाग एक नए कलेवर और अंदाज में नजर आने लगा है, जो मीडिया जगत से जुड़े लोगों को भी काफी भा रहा है और प्रदेश की भजनलाल सरकार को भी खूब रास आ रहा है। क्योंकि पिछले तीन महीनो में प्रदेश सरकार के कामकाज और विकास कार्यों का जिस अंदाज में और जिस तरीके से प्रदेश भर में प्रचार प्रसार देखने को मिल रहा है, इससे शहर से लेकर गांव और ढाणी में भजनलाल सरकार के विकास कार्यों की गूंज सुनने को मिल रही है, जिसमें ब्यूरोक्रेसी और भाजपा संगठन से जुड़े लोगों की मेहनत तो है ही, लेकिन इसमें सूचना और जनसंपर्क विभाग के प्रचार प्रसार के तरीकों और नवाचारों का सबसे बड़ा हाथ माना जा रहा है।

अपने उत्कृष्ट कार्यों से से प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही पार्टी के सरकारों के काफी प्रिय ऑफिसर रहे

पहले राजस्थान प्रशासनिक सेवा और फिर भारतीय प्रशासनिक सेवा में शामिल होने के दौरान राकेश शर्मा अपने उत्कृष्ट कार्यो से प्रदेश में सभी पार्टी की सरकारों के काफी प्रिय और भरोसेमंद अधिकारी रहे। करीब पिछले 28 सालों से राकेश शर्मा राजस्थान प्रशासनिक सेवा और भारतीय प्रशासनिक सेवा के अधिकारी के रूप में प्रदेश के सभी महत्वपूर्ण विभागों में अलग-अलग पार्टी की सरकारों में बड़े-बड़े पदों पर नियुक्त रहे, और इन्हें जहां भी जिस भी डिपार्टमेंट में जिम्मेदारी मिली, उस जिम्मेदारी को इन्होंने बहुत ही शानदार और उत्कृष्ट तरीके से निभाया। अपनी कड़ी मेहनत और ईमानदारी से जिस भी डिपार्टमेंट में नियुक्ति मिली उसमें हंड्रेड परसेंट परफॉर्मेंस देकर सरकारों को काफी प्रभावित किया। इसलिए पिछले 28 साल में प्रदेश में हर 5 साल में कभी बीजेपी तो कभी कांग्रेस पार्टी की सरकारों का गठन होता रहा, लेकिन जिस भी पार्टी की सरकार बनी, उस पार्टी की सरकार ने राकेश शर्मा के पिछले उत्कृष्ट कार्यो और कड़ी मेहनत से प्रभावित होकर शर्मा को जनता से सीधे जुड़े विभागों में नियुक्ति दी गई ताकि प्रदेश के लोगों का ज्यादा से ज्यादा भला हो सके, और इस काम को शर्मा ने बखूबी से निभाया भी। इसीलिए पिछले 28 साल की सरकारी नौकरी में राकेश शर्मा को पर्यटन, जयपुर विकासप्राधिकरण, जयपुर नगर निगम, स्वास्थ्य और चिकित्सा, परिवहन विभाग, जयपुर जिला प्रशासन, राजस्व विभाग, एक्साइज डिपार्टमेंट इत्यादि महत्वपूर्ण विभागों में बड़े पदों पर अलग-अलग पार्टी की सरकारों में जिम्मेदारी मिली। इसके अलावा कई जगहों पर एसडीओ और ब्लॉक डेवलपमेंट अधिकारी के रूप में भी शुरू में इन्होंने कई सालों तक काम किया। अपनी इतनी लंबी प्रशासनिक सेवा की अवधि के दौरान जहां भी और जिस भी विभाग में पोस्टेड रहे, वहां के स्थानीय निवासियों में हमेशा एक कर्मठ और लोकप्रिय अधिकारी के रूप में माने जाते रहे। इसकी बड़ी वजह यह रही कि राकेश शर्मा का अपना एक अलग व्यक्तित्व है, जो उनकी पर्सनालिटी को अलग लुक देता है। जितने सरल और सहज और मधुर व्यवहार के हैं, उतने ही जनता की भलाई पर विकास के लिए संवेदनशील भी रहे, और भ्रष्टाचार और लापरवाही जैसे शब्द इनकी डिक्शनरी में कभी नहीं रहे। हमेशा खुद ईमानदारी से और समर्पित भाव से काम करते नजर आए, और अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों को भी ईमानदारी और समर्पित भाव से काम करने के लिए प्रेरित करते रहे। इसीलिए शर्मा जहां प्रदेश भर में नियुक्ति के दौरान अलग-अलग जगह पर लोगों के लोकप्रिय अधिकारी बने रहे, तो अपने अधीनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों में भी हमेशा अपने व्यवहार को लेकर लोकप्रिय रहे।

सरकार की योजनाओं और विकास कार्यों के प्रचार प्रसार में आधुनिक संचार संसाधनों, तकनीक का उपयोग करने में ज्यादा विश्वास रखते हैं शर्मा

सोशल मीडिया के जमाने में आजकल फेसबुक व्हाट्सएप इंस्टाग्राम युटुब इत्यादि प्रचार प्रसार का बड़ा माध्यम बन गए हैं, इसलिए इसलिए इन आधुनिक संचार संसाधनों, तकनीक, यंत्र और उपकरण के बिना किसी भी विषय का शानदार तरीके से प्रचार प्रचार करना काफी मुश्किल हो गया है। इसलिए राकेश शर्मा खुद संचार संसाधनों के आधुनिक तकनीक और सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफॉर्मों का उपयोग सरकार की नीतियों और जनकल्याणकारी योजनाओं के प्रचार प्रचार में प्रभावित तरीके से करने में ज्यादा रुचि रखते हैं। पिछले तीन महीने से सूचना और जनसंपर्क विभाग की ओर से सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म पर जबरदस्त तरीके से उपस्थित दिखाकर सरकार की नीतियों और योजनाओं का प्रभावी तरीके से प्रचार प्रसार किया जा रहा है, जिसकी वजह से प्रदेश की भजनलाल सरकार के विकास कार्यों की गूंज राजस्थान ताकि सीमित नहीं है, बल्कि पूरे भारत और दुनिया के कई मुल्कों में सरकार के विकास कार्यों के बारे में लोग जान रहे हैं। क्योंकि राकेश शर्मा ने प्रदेश के सूचना और जनसंपर्क विभाग ने अपने प्रदेश के सभी जिलों में स्थित विभाग के कार्यों को पूरी तरह से नवीनतम ढांचे में डेवलप करने और जिला स्तर पर ज्यादा से ज्यादा सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म का ज्यादा उपयोग करना सुनिश्चित किया है, जिसके माध्यम से प्रदेश सरकार की ओर से लिए जाने वाले हर छोटे-बड़े निर्णय, जन कल्याणकारी योजनाओं और विकास कार्यों का लेखा-जोखा प्रदेश के शहर से लेकर गांव में मोबाइल रखने वाले किसान और मजदूर तक तो पहुंच ही रहा है; इसके अलावा देश और दुनिया में भी सरकार की उपलब्धियां की जानकारी नियमित रूप से लोगों को मिल रही है। जिस दिन राकेश शर्मा ने सूचना व जनसंपर्क विभाग में आयुक्त पद की जिम्मेदारी संभाली थी, उसी दिन इन्होंने पत्रकारों से साफ कहा

था कि प्रचार प्रचार के परंपरागत साधनों का उपयोग करते हुए प्रचार प्रसार के लिए ज्यादा से ज्यादा नवीनतम तकनीक संसाधनों का उपयोग करने की दिशा में उनका पूरा फोकस रहेगा। अपनी इस बात पर शर्मा खरे उतर रहे हैं, और उन्होंने आधुनिक संचार संसाधनों और तकनीक का उपयोग करते हुए प्रदेश की भजनलाल सरकार के विकास कार्यों की गूंज प्रदेश के शहर, गांव ढाणी से लेकर दुनिया के कई मुल्कों रहने वाले लोगों तक पहुंचा रहे हैं।

सरकार और मीडिया के बीच बेहतर तालमेल और समन्वय बनाने में काफी हद तक सफल साबित हुए

प्रदेश में जब से राकेश शर्मा के हाथ में डीआईपीआर की कमान आई है, तब से सरकार और मीडिया जगत के लोगों के बीच पहले की तुलना में ज्यादा सकारात्मक अच्छे संबंध स्थापित हुए हैं। सरकार और मीडिया से जुड़े लोगों के बीच आपस में बेहतर ताल में और समन्वय कायम हुआ है, जिससे एक तरफ प्रदेश सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं और विकास कार्यों को जन-जन तक पहुंचाने में काफी आसानी और फायदा हुआ है, तो दूसरी तरफ सरकार और मीडिया के बीच आपस में अच्छे संबंध स्थापित होने से प्रदेश की जनता को भी काफी फायदा हो रहा है। क्योंकि लोगों को प्रदेश और केंद्र सरकार की जनकल्याणकारी योजनाओं विकास कार्यों और अच्छे निर्णय के बारे में लगातार जानकारियां मिल रही है, जो कहीं ना कहीं उन लोगों के लिए और भी फायदेमंद साबित हो जाती हैं जिन्हें सरकार की योजनाओं की जानकारी नहीं होती है। इसलिए सरकार और मीडिया के बीच अच्छा तालमेल और समन्वय प्रदेश के विकास के लिए भी गुणकारी साबित हो रहा है। कई बार सरकार और मीडिया के मध्य आपस में किसी कारणवश दूरियां हो जाती है, तो सरकार और मीडिया दोनों के समक्ष बड़ी-बड़ी चुनौती और बड़ी-बड़ी समस्याएं आकर खड़ी हो जाती हैं। इसलिए दोनों के बीच बेहतर ताल में और सब में बने रहने, दोनों के बीच बेहतर ताल और समन्वय बने रहने से किसी एक को फायदा नहीं होता, बल्कि कई पक्ष को फायदा होता है। इसलिए राकेश शर्मा ने अपने व्यवहार, वर्किंग स्टाइल और सबको समान महत्व देने की प्रवृत्ति से प्रिंट, मीडिया इलेक्ट्रॉनिक मीडिया और सोशल मीडिया के विभिन्न प्लेटफार्म से जुड़े लोगों को सरकार के साथ जोड़े रखने में काफी हद तक सफलता प्राप्त कर ली है। अगर किसी वजह से प्रिंट मीडिया के किसी ग्रुप या फिर इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के किसी ग्रुप का सरकार के साथ जरा भी तालमेल और समन्वय बिगड़ता हुआ दिखे, तो तत्काल ही राकेश शर्मा एक मजबूत मध्यस्थ की भूमिका निभाते हुए नजर आए हैं, जिसकी वजह से पिछले तीन महीना में कभी भी किसी भी मीडिया ग्रुप और सरकार के बीच आपस में तालमेल और समन्वय बिगड़ने की खबरें सुनने को नहीं मिली। इसमें राकेश शर्मा की भूमिका को इग्नोर नहीं किया जा सकता।

IAS Rakesh takes charge as DIPR Commissioner

सीमित संसाधनों से विकास के नए आयाम हासिल करने में माहिर हैं डॉ. अर्तिका शुक्ला

1. अपनी आकर्षक पर्सनालिटी से उद्योग जगत, व्यापार जगत, सामाजिक संगठनों, दानदाताओं और भामाशाहों इत्यादि को अलवर के सर्वांगीण विकास से जोड़कर, अलवर जैसे संवेदनशील जिले में विकास के एक नए स्वर्णिम युग की लिख रही है शानदार पटकथा

2. सिर्फ डेढ़ साल के कार्यकाल में ही अलवर शहर और ग्रामीण इलाकों में अपने नवाचारों और नए प्रयोगों से लोगों के जीवन को खुशहाल बनाने के साथ-साथ सामाजिक, पर्यावरण, शिक्षा, महिला सुरक्षा, अपराध, साइबर क्राइम, प्रदूषण इत्यादि सभी क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन करके जिले के लोगों और उद्योग जगत से जुड़े लोगों का जीता दिल

जयपुर। सीमित संसाधन और धन की कमी के बावजूद भी विकास के नए आयाम कैसे स्थापित किए जा सकते हैं, इसकी कला और तरीकों के बारे में भला अलवर जिला कलेक्टर डॉ. अर्तिका शुक्ला से ज्यादा कौन जान सकता है, जिन्होंने सिर्फ डेढ़ साल की अल्प अवधि में ही अलवर जैसे संवेदनशील जिले में न केवल विकास के स्वर्णिम युग की शुरुआत कर दी है, बल्कि जिले के शहरी और ग्रामीण दोनों ही इलाकों में फूल खिले गुलशन गुलशन जैसे हालात बना दिए हैं, जिसकी कभी किसी ने शायद परिकल्पना भी नहीं की हो। क्योंकि सालों से अलवर जिले के पीछे अपराधों की एक बहुत बड़ी काली हिस्ट्री जुड़ी हुई है, जिससे अलवर जैसा खूबसूरत और ऐतिहासिक शहर बदनामी की पीड़ा भी सहन करता रहा है। लेकिन पिछले डेढ़ साल में अलवर के चौमुखी विकास में ही नहीं, बल्कि जिले के लोगों की जीवन शैली और यहां के युवाओं की लाइफस्टाइल में जो तेजी से क्रांतिकारी बदलाव आया है, उसमें जिले की युवा और मेहनती कलेक्टर डॉ. अर्तिका शुक्ला के नवाचार और नवीन प्रयोगों का बहुत बड़ा योगदान माना जा रहा है। इनके नवाचारों से जिले में विकास की गंगा तो बह रही है ही, इसके अलावा सालों से अपराधों के साए में जी रहे इस जिले के युवाओं की सोच और जीवन शैली में अच्छा बदलाव दिखने लगा है, जिससे इस जिले की तरक्की, शांति और स्वच्छ माहौल की आहट साफ सुनाई दे रही है।

डॉ. अर्तिका शुक्ला की हर पहल और नवाचार उद्योग जगत के लोगों और भामाशाहों को खूब आ रहे पसंद

अलवर जिले में अमीर लोगों की कमी नहीं है, यहां बड़े-बड़े धन्नासेठ बैठे हैं। लेकिन यह भी सच है कि जितने भी पैसे वाले हैं, वह एक-एक पैसे की कीमत समझते हैं। इसलिए भले ही उनके पास खूब पैसा हो, लेकिन वे अपनी मेहनत का एक पैसा भी फालतू में बर्बाद नहीं करते। लेकिन इसका मतलब यह भी नहीं है कि वे सामाजिक सरोकार के काम करना नहीं चाहते। ऐसे लोगों की सामाजिक सरोकार के कामों में खूब दिलचस्पी रहती है, लेकिन उन्हें इस बात का भी विश्वास दिलाना बहुत जरूरी होता है कि उनके एक-एक पैसे का सदुपयोग होगा। तो फिर ऐसे लोग एक हाथ से नहीं, बल्कि अपने दोनों हाथों से दान देने में और आर्थिक सहयोग देने में पीछे नहीं रहते। इसलिए डॉ. अर्तिका शुक्ला ने कलेक्टर की कुर्सी पर बैठने के पहले दिन ही यह सोच लिया था कि जिले में अगर सामाजिक सरोकारों के कार्यों को गति देनी है और जिले के विकास को तेजी से आगे बढ़ाना है, तो यह अकेले सरकार के भरोसे ही नहीं होगा। इसके लिए कहीं ना कहीं उद्योग जगत और भामाशाहों को साथ लेकर ही जिले में विकास की क्रांति लाई जा सकती है, क्योंकि वैसे भी जिला कलेक्टर के पास मुख्य रूप से केंद्र सरकार और राज्य सरकार की विभिन्न योजनाओं के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी रहती है, और कलेक्टर के पास इतना फंड भी नहीं होता है कि वह समुचित रूप से जिले में विभिन्न तरह के विकास कार्य करवा सके। इसलिए डॉ. अर्तिका शुक्ला ने जिले के उद्योग जगत से लोगों और भामाशाहों के साथ नियमित रूप से बैठक का आयोजन करके उन्हें जिले के विकास में सहयोग करने की अपील की। क्योंकि कलेक्टर डॉ. अर्तिका शुक्ला पूर्व में अलवर विकास न्यास विभाग और अलवर जिला परिषद में भी सर्वोच्च पद पर पोस्टेड रही हैं, इसलिए अलवर में लंबे समय तक उनके नौकरी करने से अलवर के सभी प्रबुद्ध जन, व्यापारी, उद्योगपति, सामाजिक संगठन से जुड़े लोग, भामाशाह सभी उनकी पर्सनालिटी से अच्छी तरह से वाकिफ रहे हैं। डॉ. शुक्ला की ईमानदारी और जिले के विकास में उनकी गहन रुचि को देखकर उद्योग जगत से जुड़े लोगों और भामाशाहों ने भी जिले के विकास में अपना पूरा सपोर्ट करने का भरोसा दिलाया, क्योंकि वे यह जानते थे कि इस महिला कलेक्टर के होते हुए उनके एक-एक पैसे का सदुपयोग होगा। इसलिए पिछले डेढ़ साल में जिले में ग्रामीण और शहरी इलाकों में शिक्षा, पर्यावरण, महिला सुरक्षा और कल्याण, वृक्षारोपण इत्यादि भांति-भांति के सामाजिक सरोकार के कार्य बड़े पैमाने पर उद्योग जगत से जुड़े लोगों और भामाशाहों के सहयोग से संपादित हुए, जिससे जिले के लोगों को काफी फायदा मिल रहा है।

वाटर हार्वेस्टिंग, सौर ऊर्जा संरक्षण, पौधारोपण, स्वच्छ वायु, महिला सुरक्षा और महिला कल्याण इत्यादि क्षेत्रों में गजब का हुआ कार्य

डॉ. अर्तिका शुक्ला का अलवर जिले में पिछले करीब डेढ़ साल का कार्यकाल विभिन्न क्षेत्रों में काफी शानदार और लाजवाब रहा है। एक तरफ केंद्र सरकार और राजस्थान सरकार की विभिन्न जन कल्याणकारी योजनाओं का सफल क्रियान्वयन करके अलवर के शहरी और ग्रामीण जिले के लोगों के जीवन में खुशियां लाई गईं, तो दूसरी तरफ भामाशाहों और उद्योग जगत से जुड़े लोगों का सहयोग लेकर अलवर के विकास को पंख लगाने का प्रयास किया। वहीं वाटर हार्वेस्टिंग के क्षेत्र में उनके कार्यों की गूंज पूरे देश में सुनने को मिल रही है। इन्होंने वाटर हार्वेस्टिंग के तहत प्रदेश के शहरी और ग्रामीण इलाकों में बड़े पैमाने पर वर्षा के जल का संरक्षण करने के लिए छोटी-छोटी लागत पर छोटे-छोटे तालाबों का बड़ी संख्या में निर्माण करवाया, पुरानी बावड़ियों की मरम्मत और सुधार के कार्य किए तथा जिले भर में जल उत्पन्न करने के स्रोतों को ढूंढने की दिशा में भी शानदार काम किया। इन सब तरीकों से अलवर जिले में भूजल स्तर पहले की तुलना में काफी ऊंचा हुआ है, और लोगों के अलावा पशुओं को भी स्थानीय स्तर पर समुचित पानी उपलब्ध होने लगा है। इसीलिए इस क्षेत्र में अच्छा कार्य करने पर राष्ट्रपति की ओर से इन्हें सम्मानित किया गया। इसके अलावा सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी अलवर जिले में तेजी से काम को आगे बढ़ाया जा रहा है, जिसमें अब तक 3500 सोलर पैनल लगाए जा चुके हैं। इसके लिए बाकायदा जिला प्रशासन की ओर से शहरी और ग्रामीण इलाकों में विशेष शिविर का आयोजन करके लोगों को इसके लिए प्रेरित किया जा रहा है, जिसके अच्छे परिणाम भी सामने आए हैं। प्रधानमंत्री सूर्य घर योजना को जिले में धरातल पर प्रभावी रूप से लाने के लिए इस महिला कलेक्टर की ओर से शानदार प्रयास किए जा रहे हैं, जिसमें सौर ऊर्जा के क्षेत्र में भी अलवर तेजी से आगे बढ़ रहा है। इसीलिए प्रदेश के ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर ने डॉ. अर्तिका शुक्ला को उनके शानदार काम के लिए सम्मानित किया। इसी तरह से अलवर शहर में अब हर घर के सामने पेड़ लगाने की योजना पर भी अलवर जिला प्रशासन की ओर से युद्ध स्तर पर काम शुरू किया जा रहा है। हालांकि वृक्षारोपण के क्षेत्र में अलवर जिला काफी आगे है, क्योंकि वन मंत्री संजय शर्मा खुद अलवर के रहने वाले हैं, इसलिए अलवर जिले में शहरी और ग्रामीण दोनों ही इलाकों में वृक्षारोपण का कार्य पहले से ही शानदार तरीके से संपादित हो रहा है। लेकिन डॉ. अर्तिका शुक्ला ने नवाचार करते हुए अब अलवर शहर में प्रत्येक घर के सामने पेड़ लगाने की योजना तैयार की गई है, और करीब 1 लाख पेड़ लगाने की तैयारी चल रही है। अलवर जिला दिल्ली एनसीआर से जुड़ा हुआ है, इसलिए प्रदूषण यहां की हमेशा से गंभीर समस्या बना हुआ है। लेकिन पिछले डेढ़ साल में अलवर में स्वच्छ वायु और प्रदूषण को कम करने की दिशा में भी अलवर जिलाधीश कार्यालय की ओर से शानदार काम किए गए, कई तरह के बड़े कदम उठाए गए। उसी का नतीजा रहा कि पूरे देश में स्वच्छ वायु की रैंकिंग में अलवर को तीसरा स्थान मिला। इसी तरह से महिलाओं की सुरक्षा के लिए शहर में बड़ी संख्या में स्ट्रीट लाइट लगाई गई हैं, तथा अलवर के रोडवेज बस स्टैंड पर महिलाओं और छोटे नन्हे मुन्ने बच्चों की सुरक्षा और देखभाल के लिए मॉडर्न बेबी सेंटर की स्थापना की गई है, जिसमें बैठकर महिलाएं अपने छोटे बच्चों को बड़े आराम से दूध पिला सकती हैं और विश्राम कर सकती हैं। इस तरह से ऐसे अनेक विशेष कार्य इस महिला कलेक्टर की ओर से संपादित किए गए हैं, जिनकी वजह से अलवर एक अलग लुक में नजर आने लगा है।

राष्ट्रपति, राज्यपाल और प्रदेश सरकार, केंद्र सरकार और विभिन्न संस्थाओं और संगठनों से उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई बार सम्मानित हो चुकी हैं डॉ. अर्तिका शुक्ला

वर्ष 2016 से लेकर अब तक अलवर जिलाधीश पद पर विराजमान रहने के दौरान डॉ. अर्तिका शुक्ला ने अनेक बार केंद्र सरकार, राजस्थान सरकार, विभिन्न सामाजिक और व्यापारिक संगठनों की ओर से अलग-अलग क्षेत्र में अपने उत्कृष्ट कार्यों के लिए कई बार सम्मानित हो चुकी हैं। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने भी अलवर जिले में जल संचय जन भागीदारी अभियान में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए दिल्ली में एक शानदार समारोह में डॉ. अर्तिका शुक्ला को सम्मानित किया। इसी तरह से एनर्जी कंजर्वेशन अवार्ड में ऊर्जा संरक्षण में शानदार कार्य करने के लिए भी प्रदेश के ऊर्जा मंत्री हीरालाल नागर की ओर से इनका सम्मान किया गया। इसी तरह से स्वच्छ वायु सर्वेक्षण में अलवर जिले के पूरे देश में तीसरे नंबर पर आने पर भी इसे अलवर के लिए एक बहुत बड़ी उपलब्धि माना गया, क्योंकि दिल्ली एनसीआर और भिवाड़ी औद्योगिक क्षेत्र के होने की वजह से यहां प्रदूषण सालों से काफी खराब चल रहा था। लेकिन इस प्रदूषण के स्तर में गुणात्मक सुधार के लिए जिला कलेक्टर की भूमिका के रूप में डॉ. अर्तिका शुक्ला ने कई तरह के बड़े कदम और नवाचार किए, जिसकी वजह से स्वच्छ वायु संरक्षण में अलवर ने पूरे देश में तीसरा स्थान हासिल किया। इसीलिए इस उपलब्धि के लिए युवा, कर्मठ महिला कलेक्टर का शानदार तरीके से वेलकम किया गया। इसी तरह से एसआईआर की प्रक्रिया को जिले में बहुत ही शानदार तरीके से सफलतापूर्वक निर्धारित अवधि से पहले संपादित करके डॉ. अर्तिका शुक्ला ने चुनाव आयोग और प्रदेश के निर्वाचन विभाग के समक्ष खुद को एक श्रेष्ठ अधिकारी के रूप में साबित करके दिखाया, इसलिए राज्यपाल की ओर से इनका सम्मान किया गया। इसके अलावा उदयपुर के ऋषभदेव और अजमेर में एसडीएम पद पर रहने के दौरान भी अपने पब्लिक टच को लेकर स्थानीय लोगों में काफी पॉपुलर रहीं, और लोगों की ज्यादा से ज्यादा समस्याओं का निस्तारण करके अपनी सर्विस के शुरू के दिनों में ही खुद की एक समर्पित और कर्मठ अधिकारी के रूप में अपनी पहचान बना ली थी। और प्रदेश में जहां-जहां और जिन-जिन पदों पर पोस्टेड रहीं, वहां पर ईमानदारी और कड़ी मेहनत से कार्य करके प्रदेश सरकार को तो प्रभावित किया ही, इसके अलावा लोगों के दिलों पर भी राज किया, इसलिए कई सामाजिक, व्यापारिक संगठनों की ओर से इन्हें अब तक सम्मानित किया जा चुका है।

युवाओं के करियर को नई दिशा और गति देने के लिए स्कूल स्तर पर ही उन्हें अच्छा नागरिक बनाने के लिए "ई- लाइब्रेरी" की स्थापना की

अगर बच्चों को स्कूली शिक्षा में ही अच्छा माहौल और अच्छा मार्गदर्शन मिल जाता है, तो फिर उनका दिमाग गलत चीजों की ओर नहीं दौड़ता है। डॉ. अर्तिका शुक्ला अलवर जिले की वस्तु स्थिति और अलवर के अपराध जगत से अच्छी तरह से पहले से ही वाकिफ थीं। यहां मेवात क्षेत्र में हो रही अनैतिक और अवांछित गतिविधियों के बारे में भी उन्हें यह अच्छी तरह से पता था कि यहां के युवाओं को शुरू में ही अच्छे संस्कार और अच्छा मार्गदर्शन नहीं मिल रहे, इसलिए स्कूल की पढ़ाई के दौरान ही वह गलत दिशा में चले जाते हैं। इस पर नवाचार करते हुए डॉ. अर्तिका शुक्ला ने जिले के ग्रामीण इलाकों में, ज्यादातर मेवात इलाकों में, स्कूलों में 'ई-लाइब्रेरी' की स्थापना करवाई। इसके लिए उद्योग जगत से जुड़े लोगों, सामाजिक संगठनों, दानदाताओं और भामाशाहों का सहयोग लिया गया। इस तरह से अब तक करीब 170 सरकारी स्कूलों में इस नए प्रयोग से इस महिला कलेक्टर ने ई-लाइब्रेरी की स्थापना करवाई है, जिसमें आधुनिक संचार साधनों और प्रशिक्षित लोगों की मदद से स्टूडेंटों को ई-मैगजीन तैयार करवाना सिखाया जाता है। इसके अलावा इस आधुनिक लाइब्रेरी से बच्चों को विभिन्न विषयों पर नॉलेज दिया जाता है। बच्चों को इस लाइब्रेरी के माध्यम से नई-नई जानकारियां और नई-नई बातें सिखाई जाती हैं, जिससे बच्चों का ध्यान किसी दूसरी ओर डायवर्ट नहीं होता और वह अपने करियर को ब्राइट बनाने के लिए सजग और गंभीर रहने लगे हैं, और पढ़ाई को काफी गंभीरता से लेने लगे हैं। जिसका सीधा प्रभाव मेवात क्षेत्र के युवाओं में देखने को भी मिल रहा है। अब मेवात क्षेत्र के युवा साइबर क्राइम या फिर अन्य अपराधी गतिविधियों में खुद को झोंकने के बजाय अपने करियर की ओर ज्यादा ध्यान देने लगे हैं। इसलिए मेवात क्षेत्र के युवा जो स्कूल में पढ़ाई के दौरान ही जो पहले गो हत्या, गोकशी, साइबर क्राइम, हथियार तस्करी और अन्य अपराधी गतिविधियों में ज्यादा लिप्त हो जाया करते थे, अब उनमें इस महिला जिला कलेक्टर के नवाचारों और मेहनत से युवाओं में जन जागृति का एक नया माहौल देखने को मिल रहा है। और वे अपराध छोड़कर श्रेष्ठ नागरिक बनने का सपना ही नहीं पाल रहे, बल्कि ई-लाइब्रेरी जैसे नवाचारों से खुद के भविष्य को ब्राइट बनाने के प्रयासों में जुटे हुए दिख रहे हैं।

डॉक्टरी छोड़कर आईएएस बनने के पीछे क्या है बड़ा रहस्य

डॉ. अर्तिका शुक्ला वर्ष 2016 बैच की आईएएस अधिकारी हैं। इससे पहले दिल्ली और चंडीगढ़ में एक उत्कृष्ट डॉक्टर के रूप में अपनी सेवाएं दे चुकी हैं। इनके पिता भी डॉक्टर हैं, इसलिए बचपन से अपने पिता को मरीजों की देखभाल और सेवा करते देख इनके दिल में भी डॉक्टर बनने की तमन्ना थी। इसलिए दिल्ली में एमबीबीएस की पढ़ाई कंप्लीट करने के बाद चंडीगढ़ में एमबीबीएस में पोस्ट ग्रेजुएशन किया। दिल्ली और चंडीगढ़ में डॉक्टरी की नौकरी में इन्हें मन ही मन यह महसूस हो रहा था कि इस क्षेत्र में लोगों की सेवा का दायरा सिर्फ चिकित्सा क्षेत्र तक ही सीमित है। इसलिए उन्हें डॉक्टर के क्षेत्र में खुद को पूर्ण आत्मसंतुष्टि नहीं मिल रही थी, क्योंकि वे एक क्षेत्र तक ही सीमित नहीं रहना चाहती थीं, अनेक क्षेत्रों में लोगों की सेवा करना चाहती थीं। इसलिए उन्होंने अपने बड़े भाई से प्रेरित होकर भारतीय प्रशासनिक सेवा परीक्षा फाइट करने का मन बनाया, ताकि विभिन्न क्षेत्रों में रहकर लोगों की समस्याओं का निवारण कर सकूं और लोगों की सेवाएं कर सकूं। जिसमें उन्हें सफलता भी मिली, और सिर्फ 25 साल की आयु में ही वर्ष 2016 में इनका आईएएस में सिलेक्शन हो गया। इस तरह से कहा जा सकता है कि जिस मकसद से इन्होंने डॉक्टरी छोड़कर भारतीय प्रशासनिक सेवा में आने का प्रण लिया, उस मकसद को पूरी तरह से कामयाब करते हुए भी दिख रही हैं, क्योंकि अलवर जिले में ही नहीं, बल्कि अलवर जिला कलेक्टर बनने से पहले भी जहां-जहां इन्हें जिस-जिस पद पर जिम्मेदारी मिली, उस जिम्मेदारी को इन्होंने बहुत ही शानदार और बेमिसाल तरीके से संपादित किया।

डॉ. अर्तिका शुक्ला का नवाचार पार्क लाइब्रेरी राजस्थान ही नहीं बल्कि देश में बना चर्चा का विषय

डिजिटल जमाने में डिजिटल तरीके से काम करने पर डॉ. अर्तिका शुक्ला का शुरू से ही फोकस है। अपनी सर्विस के शुरू के दिनों में ही एसडीएम पद पर रहते हुए सरकारी काम ज्यादा से ज्यादा ऑनलाइन तरीके से संपादित हों, इस पर इन्होंने अपना पूरा ध्यान केंद्रित रखा। जिसमें अजमेर में एसडीएम पद पर रहते हुए इन्होंने राजस्व संबंधी कार्यों का शानदार तरीके से डिजिटलीकरण करके जिला प्रशासन के कार्यों में अपनी खुद की एक जबरदस्त अमिट छाप छोड़ी थी, जिसके बदले इन्हें सम्मानित भी किया गया। अब अलवर जिले में किताबों की दूरी को कम करने के मकसद से अलवर के बुद्ध विहार में पार्क लाइब्रेरी स्थापित की गई है, जिसमें 5000 तरह की विभिन्न तरह की अलग-अलग विषयों पर श्रेष्ठ पुस्तकें रखने की व्यवस्था की गई है। पार्क लाइब्रेरी को बहुत ही शानदार और आकर्षक लुक दिया गया है, जिसमें बैठकर पुस्तकें पढ़ने का एक अलग ही अपना मजा है। इस कार्य में भी उद्योग जगत से जुड़े लोगों, सामाजिक संगठनों और भामाशाहों का सहयोग लिया जा रहा है। इसके अलावा जितनी भी मशहूर ज्ञानवर्धक पुस्तकें बड़े-बड़े लेखकों और बड़े-बड़े विषयों पर लिखी गई हैं, उन्हें इस पार्क लाइब्रेरी में रखे जाने की योजना है। इसलिए यह पार्क लाइब्रेरी अलवर के लोगों के लिए एक बिल्कुल नया अनुभव और एक सकारात्मक ऊर्जा देने वाली ज्ञान की फैक्ट्री साबित होगी, जो बच्चे, युवा, बुजुर्ग सभी को काफी प्रेरणा देगी।

1 साल के मासूम बच्चे को घर पर छोड़ सार्वजनिक छुट्टी के दिन भी ऑफिस में सरकारी काम करने की हैबिट

डॉ. अर्तिका शुक्ला के पति जसमीत सिंह संधू वर्तमान में भीलवाड़ा में कलेक्टर पद पर पोस्टेड हैं। इन दोनों खूबसूरत कपल का भारतीय प्रशासनिक सेवा में एक साथ ही एक ही बैच में सिलेक्शन हुआ था। 2016 में इन दोनों कपल ने शादी कर ली। डॉ. अर्तिका शुक्ला के एक बेटा और एक बेटी हैं। बेटा सिर्फ एक साल का ही है, लेकिन अपनी ड्यूटी को कितनी कर्मठ, ईमानदारी और समर्पित तरीके से निभा रही हैं, इस बात का अंदाजा इसी से लगाया जा सकता है कि अपने मासूम एक साल के छोटे से दिल के टुकड़े को घर पर छोड़कर सरकारी छुट्टी के दिन भी यह महिला अधिकारी अक्सर अपने कार्यालय में सरकारी काम करते हुए नजर आती हैं। जबकि अक्सर यह देखा जाता है कि कई ऑफिसर छुट्टी के दिन सिर्फ अपने परिवार वालों के साथ ही समय बिताने के लिए अपने मोबाइल फोन तक को ही स्विच ऑफ करके रखते हैं। लेकिन अक्सर यह देखने में आया है कि दूदू, खैरथल और अब अलवर जिले में कलेक्टर पद पर रहने के दौरान सरकारी छुट्टी के दिन भी अर्तिका शुक्ला जिलाधीश कार्यालय में पहुंचकर सरकारी फाइलों के साथ व्यस्त रहती हैं। ड्यूटी के प्रति इतना समर्पित भाव, इतना जुनून बहुत कम अधिकारियों में ही देखने को मिलता है। इसलिए कह सकते हैं कि यह अलवर की जनता का सौभाग्य है कि उन्हें एक काबिल अधिकारी कलेक्टर के रूप में इस समय मिला हुआ है।

श्री नरेन्द्र मोदी
माननीय प्रधानमंत्री

राजस्थान सरकार

श्री भजनलाल शर्मा
माननीय मुख्यमंत्री

राजस्थान दिवस

(भारतीय नववर्ष - चैत्र शुक्ल प्रतिपदा)

पर

प्रदेशवासियों को हार्दिक शुभकामनाएं

प्रगति पथ पर बढ़ता राजस्थान

देश में प्रथम

- प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना — 2.18 करोड़ पॉलिसियां
- पीएम-कुसुम योजना — कम्पोनेन्ट- ए एवं सी
- जनजाति कल्याण एवं सशक्तीकरण — धरती आबा जनभागीदारी अभियान में बेस्ट परफॉर्मिंग स्टेट
- फार्मर रजिस्ट्री योजना — लाभार्थी ID निर्माण
- स्वच्छता ही सेवा अभियान 2025 — लक्षित इकाइयों का रूपांतरण

सहित 13 योजनाओं में देश में प्रथम

देश में द्वितीय

- कृषि विभाग — प्रक्रियाओं का डिजिटलीकरण
- पीएम विश्वकर्मा योजना — ऋण स्वीकृति एवं वितरण
- पीएम कृषि सिंचाई योजना- "पर ड्रॉप - मोर क्रॉप" — 1.31 लाख हेक्टेयर माइक्रो इरिगेशन स्थापना
- राष्ट्रीय गोपाल रत्न पुरस्कार — श्रेष्ठ डेयरी कोऑपरेटिव सोसायटी, श्रेष्ठ कृत्रिम गर्भाधान तकनीशियन

पोषण माह 2025 गतिविधियों में

देश में तृतीय

- पीएम - कुसुम योजना — कम्पोनेंट-B एवं C-FLS
- जल संचय जनभागीदारी 1.0 अभियान — कार्य क्रियान्वयन के आधार पर
- आयुष्मान भारत (PM-JAY) — क्लेम सेटलमेंट एवं हॉस्पिटल एम्पैनलमेंट
- टीबी मुक्त ग्राम पंचायत — घोषित करने एवं 100 दिवसीय कैम्पेन
- एक जिला एक उत्पाद कार्यक्रम — क्रियान्वयन श्रेणी

सहित 6 योजनाओं में देश में तृतीय

राजस्थान संवाद

प्रगति निरंतर - आंकड़ों की जुबानी

5 साल (2018-2023) बनाम 25 माह (2024 - मार्च, 2026)

	कौशल प्रशिक्षण (लाख)	फार्म पौण्ड (खेत तलाई)	ओडीएफ प्लस गाँव	निर्मित नवीन सड़कों की लम्बाई (किमी.)	सड़कों से जोड़े गए गाँव	नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं हेतु आवंटित भूमि (हेक्टेयर)	बिजली उत्पादन क्षमता में वृद्धि (मेगावाट)	बालिका प्रोत्साहन योजना में लाभान्वित	कुसुम घटक 'ए' में जारी एलओए
पहले	2.35	29,430	1,478	13,160	1,104	22,597	3,952	2,92,507	489
अब	3.41	35,368	41,037	16,864	1,717	98,894	8,261	3,14,530	2,911

	स्कूली विद्यार्थियों को टैबलेट / लैपटॉप वितरण	छात्राओं को स्कूटी वितरित	राजकीय पॉलिटेक्निक महाविद्यालयों की स्थापना	राजकीय महाविद्यालयों के भवन निर्माण	स्कूली विद्यार्थियों को साइकिल वितरण (लाख)	नवीन राजस्व ग्रामों का सृजन	सैटेलाइट अस्पताल की स्थापना	किसानों को तारबंदी पर दी राशि (करोड़)	कुसुम घटक 'सी' में जारी एलओए
पहले	986	21,136	5	57	10.36	1,517	10	113	57
अब	88,724	41,820	21	185	11.31	2,294	18	403	2,064

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, राजस्थान

CAMBRIDGE SR. SEC. SCHOOL

Admission Open 2026-27

प्रवेश सत्र 2026-27 से

विद्यालय परिवार की तरफ से विशेष योजना का शुभारंभ

25 प्रतिशत निःशुल्क (RTE) के
अलावा 25 प्रतिशत और अतिरिक्त
आर्थिक रूप से कमजोर बच्चों को
ट्यूशन फीस फ्री करने का लिया निर्णय

C-586,587, 588, 589, 4C SCHEME, NEW LOHA MANDI ROAD, JAIPUR

7230022801, 9983322224